कलिकालमहान् उग्रतपस्वी परमशान्त तपोमूर्ति
अनुयोगाचार्य उपाध्यायजी महाराज

श्रीकर्पूरविजयजी गणिवर्य



वडी दीक्षा वि. स. १९८१ बारागी कार्तिक वदि ६
गणिपद वि. स. १९९० अमदावाद कार्तिक वदि ४
पंन्यासपद वि. स. १ ... ७

ॐ ह्रीँ अर्हं श्रीस्तम्भनपार्श्वनाथाय नम ।

श्रीहर्षपुष्पामृतजैनग्रन्थमालाया नवम प्रथरत्नम् ।

श्रीलेखामृतसंग्रह ।

प्रथम–भाग

लेखक —

पूज्यपाद बालब्रह्मचारी सद्धर्मोपदेशक प्रखरवक्ता विद्वद्वर्य
अनुयोगाचार्य पन्यासप्रवर श्रीअमृतविजयजीगणिवर्य

प्रयोजक –

मुनि पार्श्वविजय

प्रकाशक –

सेक्रेटरी श्रीहर्षपुष्पामृतजैनग्रन्थमाला
शाह पोपटलाल लल्लुभाई
नागजी भुदरनी पोळ–अमदावाद

सहायक –

राणीगाम (मारवाड) निवासी धर्मप्रेमी उदारचित्त
श्रेष्ठिवर्य शाह पुखराजजी मिश्रीमलजी राका

वि स १९९९ वीर स २४६९ ज्ञानपञ्चमी

मूल्य वाचन मनन

राणीगाममां धर्मप्रेमी उदारचित्त श्रेष्ठिवर्य श्रीमान् पुखराजजी मिश्रीमलजीए पूज्यपाद् उपाध्यायजी श्री तपस्वीजी दादाना वि. स. १९९८ ना चातुर्मासमा आत्महितकारी लीधेल अपूर्व लाभ अने तेनी अनुमोदना

राणीगाम ए बी बी एन्ड सी आई रेल्वेमा अहमदाबाद दिल्ही लाइनमा आवेल राणी स्टेशनथी प्राय एकाद माइल दूर छे त्या जैनोनी आशरे २००-२५० घरनी वसी छे एक भव्य शिखर-बधी जिनमदिर छे तमज उपाश्रय, धर्मशाला लगभग चार पाच छे ओसवाल जैनी भाईओना लगभग बसो (२००) सवाबसो (२२५) तेमज पोरवाल जैनी भाईओना आशरे त्रीस चालीस घर छे **राणी-गामनु बीजु नाम सरदारपुर पण छे**

हिन्दी वि स १९९८ ना वैशाख वदि पक्षमा **कलिकाले महान् उग्रतपकारक परमशान्त तपोमूर्ति** वयोवृद्ध अनुयोगाचार्य **उपाध्यायजी महाराज श्री कर्पूरविजयजी गणिवर्यश्री** तथा पूज्यपाद् सदुपदेशक प्रखरवक्ता विद्वद्वर्य पन्यासप्रवर श्री अमृतवि-जयजी गणिवर्यश्री आदि मुनिमण्डल ठाणा ८ राणीगामे पधार्या धर्मप्रेमी श्राद्धवर्य शाह ताराचन्दजी उमेदमलजी धनेशा प्रमुख श्रीसघे पूज्य गुरुवर्योनु भव्य स्वागत कर्यु अने त्यारबाद पूज्य गुरुदेवोने मारवाडनी नानी पञ्चतीर्थीनी यात्राए जवानी उत्कट भावना छता श्री सघना आग्रहथी रोकावु पडयु श्राद्धवर्य **शाह ताराचन्दजी उमेद-मलजी धनेशा** तेमज **शाह पुखराजजी मिश्रीमलजी राका** आदि

श्रीहर्षपुष्पामृतजैनग्रन्थमालातरफथी बहार पडेलां
पुस्तकोनुं प्राप्तिस्थान.

शाह केशवलाल माणेकचन्द कापडीआ
ठे गवारा बजार खंभात

शाह कस्तुरचन्द नानालाल ठ चितारी बाल
मु खंभात Camebay (गुजरात)
(वाया आणद–पेटलाद)

शाह पोपटलाल लल्लुभाई
नागजी भुदरनी पोळ अमदावाद

शाह शकरचन्द नानचन्द मु रायपुर
पोष्ट नरोडा A P Ry.

मास्तर नगीनदास नेमचन्द
ठे दोसीवाडानी पोळ, अमदावाद

सूचना-आ बुक भेट मगावनार पोष्टचार्ज तथा पेकींगने माटे
पोष्टेज त्रण आनानी टिकीटो मोकलवी

मुद्रक-हीरालाल देवचद शाह 'श्री शारदा मुद्रणालय'
सेन्ट्रल टॉकीझनी बाजुमा, पानकोरनाका-अमदावाद

श्रीसघ तरफथी निरन्तर पूजाओ भणाववानी शरू थइ प्रभावना आगी
विगर थवा लाग्युं, बार दिवस सुधी लागट पूजाओ भणावाइ पूज्यपाद
विद्वद्वय पन्यासजी महाराजश्रीनी पूजा भणाववानी एवी अपूर्व रीति
के जेथी पूजामा सघळाय तल्लीन बनी जाय अने वधु उल्लास जागे

आ रीतिए बार दिवस पूर्ण थया बाद पूज्य गुरुदेवो विहारनी
तैयारी करवा लाग्या श्री सघने पूज्य गुरुवर्यो राणीमाथी विहार करे
ते जराये रुचतु न्होतु छेवट विहार करवानी आगली रात्रे धर्मप्रेमी
श्राद्धवर्य शाह ताराचन्दजी तथा **धर्मप्रेमी श्राद्धवर्य भाई मिश्री
मलजी** आदि **श्रीसकल सघे** चातुर्मास माटे अति आग्रहभरी विनंति
करी परन्तु पूज्य गुरुवर्योने नाना पचतीर्थानी यात्राने माटेनी भावन
उत्कट होइने ना पाडी पुन **धर्मप्रेमी श्राद्धवर्य शाह मिश्रीमलजी
ना धर्मानुरागी वृद्ध वयोवृद्ध तपस्वी मातुश्रीने एम** लाग्यु के
आवा अट्ठाइ अट्ठाइथी तपस्या करवावाला महापुरुषनो जोग आ गामने
क्यारे मळे ? आथी तेओए **पोताना सुपुत्र भाई मिश्रीमलजीने
कोइ** पण रीतिए गुरु महाराजने चातुर्मास रोकवा माटे आग्रह कर्यो
तेओए पण पोतानी **पूज्य मातृभक्तिना योगे** विहारनी आगली रात्रे
सकल सघ भेगो करी कोइ पण रीतिए श्री गुरुमहाराजने रोकवाने
निर्णय कर्यो पूज्य गुरुवर्योए पण **धर्मप्रेमी श्राद्धवर्य श्रीमिश्रीमलजी
राका** आदि श्री सघनी विनतिने मान आपी चातुर्मास माटे हा भणी
सकल श्री सघमा आनद आनद फेलायो त्यारबाद बीजे दिवसे पूज्यपा
कलिकाले महान् उग्र तप करनार परम**शान्ततपोमूर्ति उपाध्यायजी
महाराज श्री कर्पूरविजयजी गणिवर्य आदि** ३ मुनिराजो मारवा

राणीगाम (मारवाड़) निवासी धर्मानुरागी उदारचित्त श्रेष्ठिवर्य



श्री मिश्रीमलजी गुलाबचंदजी रांका

बालब्रह्मचारी सद्धर्मोपदेशक प्रकृष्टवक्ता विद्वद्वर्य
अनुयोगाचार्य पन्यासप्रवर

श्रीअमृतविजयजी गणिवर्य



जन्म सं १९१ आसो सुदि बीज

दीक्षा सं १९८० कार्तिक सुदि ?

वडी दीक्षा वि सं १ ८ ना मागसर सुदि ६
गणिपद वि सं १ ९१ ना जेठ सुदि ९
पन्यासपद वि सं १९९१ ना जेठ सुदि १०

राणीगाम (मारवाड) निवासी धर्मानुरागी उदारचित्त श्रेष्ठिवर्य



श्री पुखराजजी उमन्मलजी राका

इनी नानी पचतीर्थीनी यात्राए पधार्या अने यात्रा करीने पुन पाछा फर्या वाद पूज्यपाद उपाध्यायजी तपस्वीजी महाराजसाहेब तथा पूज्य-पाद पन्यासजी महाराजश्री आदि राणी गामे पधार्या

धर्मप्रेमी उदारचित्त **श्रेष्ठिवर्य श्रीमिश्रीमलजी तरफथी** भव्य स्वागत थयु साधुओना अभ्यासने माटे तेओश्री तरफथी एक सारा पडितने बोलाववामा आव्या चोमासामा राणी गामना श्री सघने **भगवतिजी सूत्र सामळवानी जिज्ञासा थता तेनी उछामणी बोलाइ,** अने तेनो लाभ पण **भाई मिश्रीमलजीए लीधो** चोमासामा चौद पूर्व तपनी आराधनामा केटलाक भाईओ अने बाइयो जोडाया ते कार्यमा पण साधर्मिक भक्तिनो केटलोक लाभ तेमणे लीधो सारायें चोमासामा आ शेठश्री तरफथी बार तीथीए प्रभावना पण चालुज हती आ सिवाय बहारगामथी आवनार सद्गृहस्थोनी भक्तिनो सघळोय लाभ अने छेवट चातुमास पूर्ण थया बाद चातुर्मास बदलाववानो लाभ पण तेमणेज लीधो आ रीतिए आखाय चोमासानो सघळोय लाभ **श्रेष्ठिवर्य श्रीमान् मिश्रीमलजीए लीधेल छे** अने **श्रीलेखामृतसग्रह प्रथम भाग** तरीके आ जे पुस्तक अमारी **श्रीहर्षपुष्पामृतजैनग्रन्थमाला** तरफथी बहार पडेल छे तेमा पण तेओश्रीना तरफथीज योग्य सहायता मळेल छे

खरेखर ! आ रीतिए उपरोक्त सघळाय कार्यामा धर्मप्रेमी श्रेष्ठि-वर्य **श्रीमान् पुखराजजी मिश्रीमलजीए** तथा तेओना **पूज्य वयोवृद्ध मातुश्रीए** जे उदारता दाखवी छे, अने जे लाभ लीधेल छे तेनी भूरि२ अनुमोदना करीए छीए

लि प्रकाशक

अ नु क्र म णि का



पृष्ठ

अल्पनिवेदन

आ "श्रीलेखामृतसङ्ग्रह" नामनी बुकमा जे लेखोनो सग्रह करवामा आवेल छे ते लेखो पूज्यपाद् परमोपकारी विद्वद्वर्य प्रकृष्ट-वक्ता पन्यासप्रवरश्रीअमृतविनयजी गणिवर्यश्रीना करकमलथी लखायेला छे

आ लेखो आ वीसमी सदीना जडवादमा आगळ धपता जमानावादीओ कइक धर्मनु रहस्य समजीने जडवादमाथी पाछा हठीने, अने धर्मात्माओ धर्ममा वधु स्थिर बनीने आत्मकल्याणना शुभ राहे सचरे, आज एक शुभ हेतुथी प्रथम वीरशासनमा प्रसिद्ध थयेल हता

ते लेखोनो सग्रह करी जो पुस्तकाकारे बहार पाडवामा आवे तो ते जरुर अनेक भद्रिक आत्माओने महान् लाभनु कारण बने ?

आ विचारथी अमारी "श्रीहर्षपुष्पामृतजैनग्रन्थमालाना नवमा प्रथरत्न तरीके आ श्रीलेखामृतसङ्ग्रह" नामनी बुक बहार पाडवामा आवेल छे जो के आ बुक लगभग छ महिना पहेला पण प्रगट थइ चूकी होत, परन्तु केटलाक अनिवार्य सयोगोने लइने विलब थवा पाम्यो छे

वळी आ बुक राणीगाम (मारवाड) निवासी उदारचित्त श्रेष्ठिवर्य शाह पुखराजजी मिश्रीमलजी रामजी आर्थिक सहायताथी बहार पाडवामा आवेल छे आथी आ बुकमा तेओश्रीना फोटा पण आपेल छे

आ बुकमा सहायता करनार–उदारचित्त,– सरलतादि गुणयुक्त

अन धर्मना प्रेमी शेठिवर्यश्रीए कलिकाल महान् उग्र तप करनार परम शात तपोमूर्ति अनुयोगाचार्य पूज्यपाद उपाध्यायजी महाराजश्री कर्पूरविजयजी गणिवर्यश्री तथा विद्वद्वय मधुरवक्ता पूज्यपाद **पन्यासजी** महाराजश्री अमृतविजयजी गणिवर्यश्री आदि मुनि मण्डलने वि स हिन्दी १९९८ नु चातुर्मास करावेले, अने पूज्य गुरुदेवोना सदुपदेशथी तेओश्रीए आ महान् लाभ लीधेल के जेथी करीने आ बुक प्रसिद्ध थवा पामी छे आथी तेओश्रीनी सम्यग ज्ञानना शुभ प्रचारनी भावनाने अमे अनुमोदीए छीए

लि सेक्रेटरी श्री हर्षपुष्पामृत जैन ग्रन्थमाला

शाह पोपटलाल लल्लुभाई

नागजी भुदरनी पोळ, अमदावाद



१ चातुर्मास सम्बन्धि विशेष हकीकत आगल पेईज ५०मा दखो'

पण ना पाडे, परन्तु पोते ससारने दावानळ माननार बीजाने सारो कही, अर्थकामनो उपदेश आपी, तेमा विशेष बाळनारने शु उपनाम आपी शकाय, ते विचारणीय छे

सावद्यव्यापाररुप पापोपदेश क्यारेय उपादेय नथी

वळी कल्पसूत्रमा कुरुण देशना वृद्ध साधुनु दृष्टांत तो जाणीतु—ज छे के—काउस्सगमा वार थइ त्यारे गुरु महाराजे पूछ्यु के—आटली बधी वार केम थइ ? उत्तरमा वृद्ध साधुए जणाव्यु के—दयाचितवी पुन उत्तरमा जणाव्यु के—खेतीनो टाइम थवा आव्यो छे मारा पुत्रो निश्चित छे, तेओ खतरमा सुट नहि करे तो धान्य बराबर पाकशे नहि तो बिचारा शु खाश ? गुरु महाराजे जणाव्यु के—तें दुर्ध्यान चितव्यु

वाचक वर्ग विचारशे के—ज्यारे पोताना पुत्रो सबधी आ लोकनी चिंता मात्र करवाथी खराब ध्यान कहेवाय, तो पछी मोक्षार्थी मुनिओ आरभ—समारम युक्त एवो अर्थकामनो उपदेश केवी रीते आपी शके ? न ज आपी शके कोइ बहुलकर्मी आत्मा ससारपोषक उपदेश आपे तोय मोक्षार्थी श्रावक साभळे ज नहि जो ससारनु कारण एवा अर्थ-कामनी पुष्टिनो उपदेश मुनि आपे तो उपाध्यायजी महाराज जणावे छे के—अर्थनी देशना जे आपे ते शास्त्रने लोपनार छे अन मोक्षमार्गनो चोर छे तेथी ज मोक्षमार्ग तेनाथी चलावी शकातो नथी तेमज ससारपोषक पापोपदेश कोइ कालमा ज्ञानीओ आपता नथी, आप्यो नथी अने आपश पण नहि ज्ञानीनी आज्ञानुसार अनुसरवावाला एवा

७७ उपकारी एवा धर्मने भूलनार कृतघ्न केम न कहेवाय?
७७ वीतरागदेवनी भक्ति करनार ससार समुद्रथी तरे छे
७८ देवकृत समवसरणादिकभक्तिथी जो वीतरागपणामा बाध न आवे तो, मनुष्यकृत अल्पभक्तिथी बाध आवे खरो ?
७८ दुनियादारीना कार्योनी प्रशसा करनार ज्यारे पाप बाधे छे, त्यारे धर्मना शुभ कार्यनि प्रशसनार धर्मने पामे छे
७० धर्मानुष्ठानोमा यथातु द्रव्य जेने खूचे, तेवा ससार रसिको जरुर भवमा रखडे छे
७९ जिन आज्ञा एज धर्म
८० हिंसा अने अहिंसाना मर्मने समजनार शु चैत्यादिकनो विरोध करे ?
८० ज्ञानी विहित क्रियाओमा आरमने आगल करी क्रिया नुष्ठानोने उडावे छे, ते तेमना दुर्भाग्यनी निशानी नहीं, तो बीजु शु ?
८१ श्रावके अल्पारभी अने अल्प परिग्रही बनवु जोइए
८२ महा आरभ अने महापरिग्रह ए कुगतिनु कारण छे
८३ सावद्य आरभ अने परिग्रह राखवानु विधान शास्त्र कारो न करे छता कोइ मानी ले तो ते तेनी अज्ञा नताज छे
८३ आणन्दादिकना दृष्टात लेनाराओए समजवानु
८४ आरभ-परिग्रह छोडवामाज शास्त्रकारोनी अनुमति छे, परतु सर्वथा छोडवानी ताकातना अभावे अल्प राखे तेमा नहीं
८५ आरभ अने परिग्रह छोडवा योग्य छे, अने ए शास्त्र कारोने इष्ट छे छता पोतानी अज्ञानतानु प्रदर्शन करावनारने कोण रोके ?

जे मुनि होय तेमनाथी परोपकार पण भारी शकाय नहि, कारण के
ज कोइ कालमा, ज क्षेत्रमा जर माइए ते। मां जणाय, तेम सुन्द
शुद्धिरूप पापोपदेश, देनार न मानवनार रहेवा दुर्गतिना द्व
जनार छ

वळी जणाव के –जगतना उद्धार माटे ऋषभदेवप्रभुए पुरुषो
तेमज स्त्रीनी ७२ तथा ६४ कळाओ तथा सो शिल्पकळा शि
बताव्युं, ता पछी त्यागी मुनिओ जगतना उपकार माटे समारंभयुक्त
सर्वनुं शिक्षण आप तो शु वाधो ? आवे समजवानी जरूर छ के
प्रभुए राज्यावस्थामा बताव्युं के त्यागावस्थामा ? कइयुन पडशे के
राज्यावस्थामा हव विचारो के–जे राज्यावस्थामा बतावेल होय
त्यागावस्थामा स्वीकारी शकाय ? नहि ज कारण के–राज्यावस्था पाप
युक्त छ कलिकालसर्वज्ञ भगवान श्रीमद्हेमचन्द्रसूरीश्वरजी महाराज
जणाव छे के–सर्वमप्येतद् सावद्य माटे मोक्षार्थीने उपादेय ह
शके नहि

मोक्षप्राप्तिनो उपाय अने तेनो उपदेश

वळी श्रीमान् मुनिसुन्दरसूरीश्वरजी महाराज जणावे छे के
प्राणीओए स्वशक्तिथी निरंतर परोपकार करवो जोइए, कारण के–
उत्तम नीति छ ते परोपकार स्वोपकारथी जुदो नथी माटे परोपका
करवाथी स्वोपकार थइ जाय छे त परोपकार तमाम अनिष्ट पदार्थो
त्याग थवाथी न इष्ट पदार्थोना योगथी साध्य छे अन ते इष्ट पदा
एकान्ते अनंत सुखने कहेवाय छ, अने ते एकान्ते अनंत सुख मोक्ष

८५ कदाच मानी ल्यो के संसारमाथी तमाम आत्माओ मुक्तिमा जाय, तेमा आपणने हरकत पण शी? सज्ज-नोने तो तेथी आनंदज छे

८६ आरंभ-परिग्रहना त्यागी साचा महात्माओ तेना त्या गनोज उपदेश दे छे परंतु तेने वधारवामा अनुमोदन पण करता नथी

८७ पापनो डर राख्या विनाज प्रतिक्रमण करी पापनो नाश करवानी भावनावाळा माया-मृषावादी छे

८८ पापथी डरनाराओज साधु कल्याण करी शक्या छे अने करशे?

८९ ज्ञानातिचारनुं प्रतिक्रमण

८९ ज्ञानातिचारनी निंदा अने गर्हा

९० शंका अने समाधान

९० सम्यग् ज्ञानना अभावमाज जीवो अशुभ कर्मो बांधे छे

९१ पापाचरणमा रक्त ए साचा ज्ञानीओ नथी परन्तु तेवाओ पोताने ज्ञानी तरीके ओळखावी अज्ञान दुनियाने अवळे रस्ते दोरी महान् शत्रुनु काम करनारा छे

९३ अशुभ आचरणरूप अंधकारनी हयातिमा सम्यग्ज्ञान रूपी सूर्योदय थयेलो मानवो, ए भूलभरेलु नथी शु?

९३ अशुभ आचरणमा राची माची रहेनारा निश्चयथी अज्ञानी छे

९३ अशुभ आचरण करनाराओने ज्ञानी मानवा मनाववानी भूल नज करवी जोइए

९४ ज्ञेय, हेय अने उपादेयना विवेक वगरनाओ महान् अज्ञानीओ छे

९५ ज्ञानातिचार रूप कर्म शी रीते बंधाय? तेनी

छे, ससारमा नथी कारण के—ससारमा प्रकर्षे रुय नाश पामनारा दु ख सहित सुख छ, माट मोक्षना अर्थीओने मोक्ष देवो वडे परोपकार साध्य छे वळी मोक्ष कोइ हाथमा लइ आपी शकातो नथी माट मोक्षप्राप्तिनो उपाय देखाडवो, कारण के—सम्यक् सेवेल उपायथी उपेयनी सिद्धि सुखे थाय छे **तस्यास्त्युपाय खलु धर्म एव** मोक्ष प्राप्तिनो उपाय निश्चयथी धर्मज छ

धर्माचार्यनी फरजथी चूकनारा पापाचार्योज कहेवाय

आथी स्पष्टज छ के—मोक्ष आपवा समान दुनियामा कोइ बीजो परोपकार छेज नहि माट मोक्ष न मोक्ष प्राप्तिनो उपाय धर्म, तेनु उपदेश पचमहाव्रतधारी गुरुओ आपी शके अन्यथा [illegible] उपदेश देवाथी महाव्रतोथी भ्रष्ट थाय छे अने अभव्य [illegible] नहि होवा छता पण ज्यार मोक्षार्थीओने मोक्षनो उपदेश [illegible] भव्य मुनिओने माट पूछवुज शु ? केमके साचा जैनो [illegible] सासारिक एक पण पदार्थने साध्य तरीके गणता नथी [illegible] आमा त्याग धर्म स्वीकारे छे, त्यारे सावद्य [illegible] करवु नहि, करावतु नहि, करतान सारो जा[illegible] **सव्व सावज्ज जोग पच्चक्खामि**ना पाठथी [illegible] ओथी ससारव्यवहारनो उपदेश आपवान [illegible] ते पच्चक्खाणनो भग करनार प्रत्यक्ष मृषा[illegible] ज्ञानीओ **तित्थयरसमो सूरी** ए सूत्रथी [illegible] सम्यक् जिनमतने प्रकाशे ते तीर्थंकर [illegible] तरीके, उपादेयने उपादेय तरीके ओ[illegible]

९६ ज्ञानिओए पण इन्द्रियादि अभ्यन्तर शत्रुओथी सावचेत रहेवानी जरुर छे, नहितर दुर्गति सुलभ छे

९७ इन्द्रियो अने कषायादिनु प्रशस्ताप्रशस्त विवेचन करवुज जोइए नहितर जनता अवळे मार्गे चाली जाय

९८ अप्रशस्त इन्द्रियादि वडे वधायेल ज्ञानातिचार कर्मने निंदवानु छे

९९ प्रशस्ताप्रशस्त इन्द्रियोनु वर्णन

९९ प्रशस्त श्रवणेन्द्रियनु स्वरूप

१०१ अप्रशस्त श्रवणेन्द्रिय आ लोकमाय अनर्थकारी छे, एम जाणी अप्रशस्त श्रवणनो त्याग करवो ए ज श्रेय स्कर छे

१०२ ते चक्षु इन्द्रिय प्रशस्त कहेवाय? के जेनो सुदेवादिना दर्शनमा उपयोग थाय छे

१०४ ज्यारे मूढ आत्माओ अप्रशस्त चक्षुइन्द्रिय द्वारा पोताना आ भव अने परभवने बगाडे छे, त्यारे पुण्यवानो प्रशस्त बनावया पूर्वक जीवन सफल करे छे.

१०५ प्रशस्त घ्राणेन्द्रियनु स्वरूप

१०५ जिनपूजनमा वपराता पुष्पादिनी परीक्षामा उपयोग कराती घ्राणेन्द्रिय प्रशस्त छे

१०६ कल्याणकामीओए जिनपूजनमा उत्तम पुष्पादिनो उपयोग करवो जोइए.

१०७ केशर पूजा पण शास्त्रविहित होवाथी अवश्य करवी जोइए

१०७ पुण्यवानो भक्तिथी सद्गुरुवादिने हितकारी अन्नपानादि आपीने संसार सागरथी पोताना आत्मानो निस्तार करे छे

१०८ संसार व्यवहारमा भाग लेनाराओ पोताना साधुपणानु लीलाम करनारा छे

तो ते आचार्य नथी परतु कुसित पुरुष छे अथात् ते आचार्य, उपाध्याय के साधु तरीके तो शु पण सामान्य सपुरुषनी कोटीमा पण रही शकतो नथी वळी अर्थदिपिका नामनी श्राद्धप्रतिक्रमणसूत्रना टीकाकार धम्माअरिए ए पदथी जणावे छे के–श्रुतन चारित्र धर्मना पालनमा प्रवीण तथा सम्यग् धर्मन देनारा, जेम नास्तिक प्रदेशी राजाने केशी गणधर भगवाने सम्यग् धर्म आप्यो हतो तेम सम्यग् धर्मन देनारा धर्माचार्यने नमस्कार जणाव्यो

आथी स्पष्ट छ के–श्रुतन चारित्र धर्मनो उपदेश देनार न होय अने जे कोइ ससारव्यवहारना मार्गन बतावनार के पोषनार होय तो ते **धर्माचार्य** नथी किंतु **पापचार्यज** कहवाय

कुसाधुनु स्वरुप

उत्तराध्ययन सूत्रमा **"सय गेह परिचज्ज"**ए गाथाथी जणाव्यु छे के–ज साधु पोताना घरनो त्याग करी पारकाना घरमा पिण्डादिना लोभथी तेना घरना कार्या कर न शुभाशुभ निमित्तादि भाखवा वडे व्यवहार चलावे तेने पाप साधु कहवाय, वळी श्रीपाल चरित्रमा पण श्री मुनिचद्र नामना गुरु महाराज पास मयणासुदरी धर्मना लोकापवादने दूर करवा उपाय पूछ छ, त्यार गुरुमहाराज जणावे छे के–

पभणेइ गुरु भद्दे, माहूण न कप्पए हु सावज्ज ।
कहिउ किपि तिगिच्छ, विज्ज मत च तत च ॥

हे भद्रे ! साधुओने कोइ पण सावद्य दवा, विद्या, मत्र–तत्र कहेवा कल्पज नहि

आथी पण स्पष्ट छे के–जे साधुओ लोकोमां मनावा–पूजावा खातर मंत्र–तंत्र, दोरा, धागा अने भार–तालादि निमित्तादि भाखे छे, ते खरेखर श्री जिनेश्वरदेवनी आज्ञा बहारना कहेवाय अने तेथी साधुपणाथी चूक्याेज समजवो

मोक्षमार्गदर्शक जिनागमनुज श्रवण करवु जोइए अन्यनु नहि.

आ उपरथी एटलु सिद्ध थयु के—साधु अने श्रावक धर्मानुष्टानो जेमां छे, एवु साक्षात् परलोकहितकारी जिनवचन सांभळवु न समजावु श्रोताओ जिनवचन केवी रीते सांभळे? तो जणावे छे के–सम्यक् एटले शठताए रहित, केमके प्रत्यनीकादि भाव वडे जिनवचन सांभळवा छता पण श्रावक कहेवाय नहि आथी स्पष्ट समजाय छे के–ज्यां सुधी आत्मा पोतानी वक्रता, द्वेष, कुटिलता, दृष्टिरागीपणु विगेरे दुर्गुणोने दूर करी ससार सुखनी आशसा रहित आत्मकल्याण करवानी इच्छाए जिनवचन सांभळतो नथी, त्यांसुधी तेनो साचो श्रोता बनी शकतो नथी ज्यारे मोक्ष सुखना अभिलाषपूर्वक जिनवचनोनु श्रवण करे त्यारेज जीव शाश्वत सुखनो भोक्ता बन छे। अन्यथा चारे गतिमा रखडवानो एम निश्चय समजवु वळी कोइ शका करे के–कपिलादिना वचनो पण परलोकहितकारी छे जो एम न होय तो केम कहवाय छे के–"जावंति बंभलोउ चरगपरिव्वाय उववाउत्ति" चरक परिव्राजक पाचमा ब्रह्मदेवलोक सुधी उपज्ञ थाय छ, माटे कपिलादि वचनोनो त्याग करवा वडे अने जिनवचननेज सांभळवाथी श्रावक थाय एम केम कहेवाय? समाधानमा जणावे छे के–**सम्यक् समीचीनमत्यंत**



परलोकहितम् यावत्" जम निश्चयथी जिनवचन साक्षात् अथवा परपराए मोक्षना कारणपणाए सम्यक् परलोकहितकारी छे, तेवी रीत कपिलादि वचन थतु नथी अथात् कपिलादि शास्त्रवचनोथी देवलोक मळे पण मोक्ष सुख तो नज मळे ज्यारे जिनवचनोना आराधनथी मोक्ष मळे, त्यारे दवादिना सुखोनु तो कहवुज शु ? माटे मोक्षना अर्थीभाए नाठता दूर करवा पूर्वक जिनागमानुज श्रवण करवु जोइए केटलाको एम जणावे छे के—आपण तो गमे त्या शास्त्रवचननु श्रवण करवु, कारण तेमा जे होय ते ग्रहण करनाना आपणने शु वाधो ? आवु कहेनार आमाओ खरेखर जड जेवा कही शकाय

मतिभ्रमनिवारण पूर्वक जिनवचननु श्रवण समुचित छे

श्रीमान् रत्नाकरसूरीश्वरजी जेवा पण पोते जणावे छे के—अन्य मत्रोनो जाप करवा वड नवकार मत्रनो जाप विसार्या अने कुशास्त्रना वाक्यो वडे जिनागम वचनाने हण्या छेवटे प्रभु आगळ जणावे छे के—हे नाथ ! आ मारी मतिनो भ्रम छे अर्थात् परमेष्ठि मत्रने छोडी अन्य मत्रनी इच्छा करनार ने, जिनागमो छोडी कुशास्त्र साभळनाराओने सर्वज्ञ वीतरागदेवने छोडी असवत् उदेवाने सेवनाराओने मतिभ्रम थयो छे, माटे तेवा मतिभ्रमने दूर करवापूर्वक श्री **जिनवचननु ज श्रवण करवु उचित छे**

जिनवचन श्रवण विधि

श्रोताओए उपयोगवाळा थइ तेनु श्रवण करवु जोइए जो उपयोग रहित साभळे तो काइ लाभदायक थाय नहि, अने ते भेंस आगळ भागवत् जेवु थाय

लेखाङ्क १

शुक्ल पाक्षिक श्रावकनुं स्वरुप.

परमोपकारी पूज्यवर्य श्रीहरिभद्रसूरीश्वरजी महाराजा श्रावकधर्मनु निरुपण करता जणावे छे के —

परलोयहियं सम्मं, जो जिणवयणं सुणेइ उवउत्तो ।
अइतिव्वकम्मविगमा,-सुक्कोसो सावगो एत्थ ॥

जे कोइ आत्मा उपयोगवाळो थइने परलोकमां हितने करनारा वाळा जिनवचनोने गाढतानो त्याग करवा पूर्वक अतितीव्रकर्मना नाशथी सांभळे छे, ते आत्मा उत्कृष्ट या **शुक्लपाक्षिक श्रावक** कहेवाय छे

उपर लखेल मूळ श्लोकनी टीका करता टीकाकार महर्षि जणावे छे के–जे कोइ आत्मा जिनवचनने सांभळे छे, ते श्रावक बनी शके छे आथी चोक्खुज छे के–कोइ आत्मा श्रावक कुळमां उपन्न थयो होय, छतां जो जिनेश्वरदेवना वचनोने भावपूर्वक न सांभळतो होय, या सांभळ्या छतां समयधर्मने नाम विरोध उठावतो होय, तो कहेवु ज पडशे के ते नामनाज श्रावको कहेवाय

जेम ब्राह्मणना कुळमां उपन्न थयेल ब्राह्मण कहेवाय, क्षत्रियना कुळमां उपन्न थयेल क्षत्रिय कहेवाय तेम श्रावकना कुळमां उपन्न थयेल

एटलाज माटे अनुपयोगनो निषेध करवा माटे शास्त्रकार जणावे छे के—

निद्राविगहापरिवज्जिएहिं, गुत्तेहि पजलिउडेहिं ।
भत्तिबहुमाणपुव्वं, उवउत्तेहिं सुणेयव्वं ॥

धर्मस्थानमा विकथा अवश्य वर्जवी जोइए

निद्रा विकथारहित, गुप्त, हाथ जोडीने, उपयोग युक्त, बहुमान ने भक्ति पूर्वक श्रोताए जिनवचन श्रवण करवु जोइए आथी स्पष्ट छे के—उपाश्रयादि धर्म स्थानके व्याख्यान श्रवण करवा आवनारे निद्रा, विकथा—एटले राजकथा, देशकथा, भक्तकथा अने स्त्री कथा—आ चारे प्रकारनी विकथाओ तजवी जोइए कारण के ते पापनु कारण छे **जे कथा करवाथी आत्मा पापथी लेपाय ने समारमा रखडे तेने विकथा कहेवाय, अने ते विकथा उपाश्रयमा करवामा आवे तो पछी उपाश्रय ने घरमा फरक श्यो ? उपाश्रय, ए धर्मक्रियानु स्थान छे, माटे उपाश्रयमां तो फक्त धर्मकथाज सामळवानी होय धर्मस्थान सिवायना** स्थानमा बधायेल पाप ए **धर्मस्थानके धर्म करवामा** आवे तो छुटी शके, **परतु धर्मस्थानके मांज ज्यारे पाप बधाय तो पछी ते छुटवाने बदले बधाय छे.**

अरे जैन कुळमा उत्पन्न थएला नामधारी जैनो पण जाणता हशे के—आपणे ज्यारे देहेरासर अथवा उपाश्रयमा प्रवेश करता **निसीहि** कहवा पूर्वक एटले दुनियादारी सबधि तमाम कार्योनो निषेध करीनेज प्रवेश करीये छीये तो पछी **निसीहि** कहवा पूर्वक धर्मश्रवण करवा आने

प्राणीने श्रावक ज कही शकातो नथी, कारण के-श्रावकपणा विशेषनु कारण क्रिया छे आथी एम न समजवु के-श्रावक कुळ नकामु छे

कारण ए छे के-उत्तम कुळना महिमाने लइ घण भागे धर्मप्राप्ति सुलभ छे, एथी थायमनु छे, छता श्रावक तो त्यारेज कहवाय के निरत जिनवचननु श्रवण करे

निरंतर जिनवचननु श्रवण करनारने श्रावक कहेवाय

आथी बीजी वात पण स्पष्ट थाय छे के—**शृणोति इति श्रावक' इति व्युत्पत्ति** करी जो कोइ एम माने के-गमे ते, एटले अर्थकामनी पुष्टि करवावाळा जे वचनो अथवा अर्थकामनी पुष्टिवाळा काव्यादिकने तेमज असर्वज्ञना वचनोनु श्रवण करवाथी पण श्रावक बनी शकाय, अने धर्मस्थानके तेवा वचनो बोलवामा, बोलाववामा ने साभळवामा साधु अथवा श्रावकोने कइ बाध करता नथी आवु बोलनार साधुओ अथवा श्रावको प्रभुनी आज्ञाथी विपरित बोलनार छे एम केम न कही शकाय ' अर्थकामनी पुष्टिवाळा जे वचनो तथा असर्वज्ञोना जे वचनो ते मोक्ष अर्थ साधनार नहि होवाना कारणे तेनु जे श्रवण ते अनुचित छे माटे मोक्षार्थी भव्य प्राणीए तेवा वचनो न साभळवा जोइए उपर जणाव्या प्रमाण ज्यारे निरतर जिनवचनन श्रवण करे त्यारे श्रावक कही शकाय

श्रावके परलोक हितकारी जिनवचननुज श्रवण करवु जोइए

जिनवचननु कथन पण एवा प्रकारनु होवु जोइए के जे परलोकमा हितकारी थाय जिनागमोमा तमाम वस्तुओनु निरूपण

गृहस्थो आगळ सावद्यना त्यागी पंचमहाव्रतधारी मुनिराजो दुनिया दारीनो अथवा जेमां मिथ्या होय एवो उपदेश आपी शके नहि, ते सुज्ञ वाचक वर्ग स्वयं विचारशे

श्रावकथी बीलकुल दुनियादारीनो उपदेश मागी शकाय नहि आवी रीत स्पष्ट छे छतां जो साधु उपदेश आपे ने श्रावके सामळे तो उपदेश करनार साधु, ए साधु नथी ने श्रावक, ए श्रावक नथी माटे सावद्यना त्यागी मुनिवर्योए तथा तेमना उपासकोए धर्मस्थानकोमां विकथादिनो त्याग अवश्य करवो जोइए तेनो त्याग करवा पूर्वक मन, वचन, अने कायाना संयम पूर्वक बे हाथ जोडी बाह्य विनयपूर्वक ने अभ्यंतर हृदयना प्रेमपूर्वक एकाग्र चित्ते जिनवचन श्रवण करवुं

तीव्रकर्मना नाश सिवाय सम्यग् धर्मोपदेश श्रवणनुं अशक्यपणुं

उपर मुजब क्यारे सांभळी शकाय ? ज्यारे तीव्र कर्मनो नाश थाय त्यारे तीव्र कर्मना (ज्ञानावरणीयादि कर्मना) नाश सिवाय विकथादि रहित उपयोग पूर्वक जिनवचन श्रवणनो संभव नथी

विधि मुजब जिनवचननुं श्रवण करनार शुक्लपाक्षिक श्रावक होइ शके

आथी स्पष्ट थाय छे के-धर्म स्थानके भारे कर्मी आत्माओ जिनवचन श्रवणनो लाभ लइ शकता नथी, परंतु जे हळवा कर्मी आत्माओ विकथादि रहित उपयोगपूर्वक बहुमानपूर्वक श्रवण शठता दिकथी रहितपणाए परलोकमां हित करवावाळु जिनवचननुं श्रवण करे ते आत्मा उत्कृष्ट वा शुक्लपाक्षिक श्रावक होइ शके

उता साभळतानु पण ते थयु क जे परलोकमा हितकारी होय जिन-वचनोने आराधवाथी ज परलोक अनुकुल थाय छ वळी परलोकमा हितकारी एवु जिनवचननु श्रवण जणाव्यु आ उपरथी एम पण थयु के–इहलोकहितकारी जे निमित्त शास्त्रो, ज्योतिषप्रमति, अष्टागनिमित्त विगेरे जे जिनवचनो छे, त साभळवानो निषेध करवामा आव्यो छ जो के निमित्त शास्त्रादि अभिप्राय विशेषथी परलोकमा हितकारी छे परन्तु मुख्यत्वे करीने तो आलोकमा ज हितकारी छे

अहिं कोइ शका करे के–अभिप्राय विशेषथी जे परलोक हित-कारी बने छे, त वचनो परलोक हितकारी ज छ, माट तेनु पण श्रवण करवु आ शकानु समाधान करता ज्ञानी महर्षिओ फरमावे छे के–जो एम छे तो तमाम कुशास्त्रो पण साभळवा ज्ञा माट एकला जिनवचन परलोक हितकारी कहेवाय ! कारण ए छ के–अभिप्राय विशेषथी तमाम कुशास्त्रोनु पण परलोक हितपणु इष्ट छे, माट ज टीका-कार महर्षि जणाव छ के–श्रावक क्यारे कही शकाय के–ज्यारे श्री जिनवचननु श्रवण करे त्यारे

वळी जिनवचन कया प्रकारनु होवु जोइए ? तो **परलोयहिय** एटले परलोक हितकारी होय तेनु आ विशेषणथी जे साक्षात् परलोक हितकारी साधु अने श्रावकनी क्रियायुक्त जे जिनवचन होय ते साभळवु, जोइए, अने त साभळता श्रावक थइ शक

आथी स्पष्ट छे के–**साधु अने श्रावक धर्मयुक्त जिनवचन** के जे **परलोक हितकारी** होय त साभळवाना अधिकारी छ ज्योतिष शास्त्रादि ज इहलोक हितकारी छे, ते साभळवानो निषेध छे

साधे ए पण समजी लेवानु के ते श्रावक शुक्लपाक्षिक होइ अपार्ध पुद्गल परावर्तमा मोक्ष पामवावाळो जाणवो उक्त स्वरुप श्रावक शृणोतीति शब्दव्युत्पत्तिविषयीभूत श्रावक धर्माधिकारे जाणवो बीजे पुन विशेषणरहित साभळ्या वड, सभळावना वडे अथवा नामादिभेदभिन्न श्रावक कहेवाय छे



लेखाङ्क २

'अर्थ' अने 'काम'ने भयकर कहेनारा शास्त्रोमा तेनो उपदेश होय ?

श्री भोयणी तीर्थमा श्री श्रमणसघे ए सघधमा करेलो ठराव तद्दन सुयोग्य छे अने शास्त्रसम्मतज छे ए स्पष्ट छे !

सयलाणत्थनिमित्त, आयामकिलेसकारणमसार ।
नाउण धण धीम, न हु लुब्भइ तमि तणुअपि ॥
इत्थी अणत्थभवण, चलचित्त नरयवत्तणीभूअ ।
जाणतो हिअकामी, वसवत्ती होइ न हु तीसे ॥

श्राद्ध विधिकार बाल सरस्वती बिरुदधारक पूज्यपाद श्रीमान् रत्नशेखर सूरीश्वरजी महाराजा श्री श्राद्धविधिमा प्रसगोपात श्री धर्म-रत्नप्रकरणमाथी भाव श्रावकनु लक्षण ओळखावता जणावे छे के— सकल अनर्थनु कारण, अने क्लेशनु कारण, असार एवु धन छे, एम जाणीने बुद्धिमान तेवा प्रकारना धनने विषे जरा पण आसक्त थवु

संसाररुप दावानलमां अर्थकामरुप लाकडां होमनारने केम कहेवा ?

जे कोइ एम कहे छे के-"पूर्वाचार्योए संसार व्यवहार पोताना माटे ज्योतिष, निमित्त, श्राद्धविधि विगेरे शास्त्रो बनाव्या छे, जे हाल मोजुद छे' आवु जे बोल्वु ते नर्यु अज्ञान छे कारण-लब्धिधरो पण पोतानी लब्धिओनो उपयोग पोताना देहने माटे करता नथी, एम शास्त्रमां जणाय छे जेम सनतकुमार आदि महात्माओना द्रष्टान्तो प्रसिद्ध छे तो पछी दुनियादारीने पोषवा माटे बीजाने बतावे ज क्याथी ? अथवा नज बतावे श्राद्धविधि विगेरे ग्रन्थोनी अंदर श्रावकधर्मनु स्वरुप बताव्यु छे, पण दुनियादारीने पोषी नथी जो दुनियादारीने पोषे तो ज्ञानी ने अज्ञानीमां फेर शु ? कारण ज्ञानीओए तो जणाव्यु के-"**संसारदावानलदाहनीरं**" संसार ए दावानळ छे अहिं सुज्ञ वाचक वर्ग **विचारशे के-जे संसारने ज्ञानीओ दावानळ तरीके** ओळखावे छे, ते ज्ञानीओ संसाररुपी दावानळने वधारवा तमोने शु अर्थकामनी लालचो बतावता हशे ? अर्थात् नहि ज बतावे

कारण-संसाररुपी दावानळमा तमाम प्राणीओ बळी रह्या छे ते बळी रहेला प्राणीओने बचाववानो ज्ञानी प्रयत्न करे के संसारपोषक अर्थ काम रुप लाकडा होमी विशेष प्रकारे बाळे ? कहेवु ज पडशे के-पोते संसारने दावानळ मानीने नीकळ्या अने बीजाओने तेमां रहेवानु कही अर्थकामनो उपदेश दे, तो ते सरासर मूर्ख अने अज्ञानी कहेवाय अने मूर्ख होय ते पण सारो, कारण के ते पण समजे के आ अग्नि छे, अडीशु तो दाझीशु, तो ते पण न अडे कोइ बाळक अडतो होय तो

नहि तेमन आत्महित इच्छनार आमाए अनर्थनु घर, चचल चित्त वाळी अने नरकमा जवाना मार्गरुप एवी स्त्री छे, एम जाणीने स्त्रीने आधीन थवु नहि

शास्त्रकार महर्षिओ–अर्थ अने कामने हेय अने धर्मने उपादेय जणावे छे

वाचक महाशय ! आ उपरथी सुस्पष्ट समजी शकाय छे के– अनादि अनत, दु खथी भयकर एवा आ ससारमा अर्थ अने काम तेमन अर्थकामना साधनो ए घणान भयकर छे जो आ आमा चार गतिरुप भयकर ससारमा दु ख पाम्यो होय, तो कवळ अर्थकाम अने तेना साधनोनोज प्रताप छ

आटलाज माटे शास्त्रकार भगवतोए शास्त्रोमा जगो जगो पर **अर्थकाम अने तेना साधनोने पाप तरीके ओळखावी** तनी खुब खुब निन्दा करेल छे एटलुन नहि पण **हेय** (छोडवा लायक) **तरीके जणावे छे** कारण के–अर्थ अन काम असार (तुच्छ) छे, अन जे असार होय ते **भावश्राद्धोने उपादेय** (स्वीकार करवा लायक) **होइ शकेज नहि** अने साधुओने तो ते अयत त्याज्य छे आटलाज माटे शास्त्रकार भगवतोए सर्वज्ञभाषित धर्मनेज उपादेय (स्वीकारवा लायक) वर्णव्यो छे, अन बाकीनु बधु अनर्थ करनारु जणाव्यु छे

धर्मना प्रकार अने तेनु स्वरुप

सर्वज्ञभाषित धर्म व प्रकारनो छ **एक साधुधर्म** अन बीजो **श्रावकधर्म** आ बे प्रकारना धर्ममाथी प्रथम साधु धर्म ज छे ते ससा-

रना सर्व दु खनो जल्दी अत करे छे ज्यारे बीजा नबरनो धर्म एटले श्रावकधर्म परपराए साधुधर्मने प्राप्त करावी लावा वाळे दु खनो अत करे छे एटले जे आत्मार्थीओ ससारदु खथी एकदम भय पामेला अने कटाळी गया होय, तेमज जल्दीथी दु खनो अत करवानी इच्छावाळा होय छे, ते समर्थ आत्मार्थीओ साधुधर्मनो स्वीकार करे छे, अने जे आत्माओ तथा प्रकारनी शक्तिवाळा न होय, आ दु खनो अत करवानी तीव्र इच्छा जागृत न थइ होय, तेमज तथाप्रकारनो ससारनो भय उत्पन न थयेलो होय तथा चरित्रमोहनीयनी प्रबळताने लइने **साधुधर्म न स्वीकारी शकता होय, तेओ साधुधर्मनी झखना पूर्वक श्रावक धर्मनो स्वीकार करे जो श्रावक-धर्मनो पण स्वीकार न करी शकता होय, तो पछी सम्यक्त्वनो स्वीकार करे अने मिथ्यात्वनो त्याग करे** तेटलु पण स्वीकारी शके नहि तो छेवट सम्यग्दर्शनादि मोक्षमार्गने अनु-सरनारा (विरोधी नहि) मार्गानुसारीना गुणोनु यथाशक्ति परिशीलन करे, तेम करता करता पण मोक्षमार्ग हाथ लागी जाय अने दु खनो अत करे

शास्त्रकारोनी अनुमति धर्ममाज होय, अधर्ममा नहि

मतलब ए छे के—एक धर्मज उपादेय होवाथी सर्वज्ञ भगवानोए प्रथम सर्वविरतिधर्म अने त्यारबाद देशविरतिधर्म अने ते न बने तो सम्यक्त्व अने तेय न बनी शके तो मार्गानुसारीपणानु प्रतिपादन करेलु छे

सर्वविरति धर्मने नहि स्वीकारनार ते धर्मने

ए शासनथी बाह्य कोटीना छे ए तमारे वहार पाटवु पडशे आम करवा तैयार थाव, तो जैनजगत तमोने धिक्कार आप्या सिवाय नहि रहे

अधर्मने धर्म मनाववाना अज्ञानीओना कुप्रयत्नोने हठाववानो ठराव करवानी जरुर पडी

वस्तुत ए छे के—जो सर्व ब्रह्मचर्य पाळवानी ताकात होय, तो स्वदारासंतोषव्रतनी जरुरज रहती नथी परंतु अशक्त होवाथी सर्वथा ब्रह्मचर्यव्रत स्वीकारी शके नहि, तेवाने माटे देश ब्रह्मचर्य, अने देश ब्रह्मचर्य पालन करता पण सर्व ब्रह्मचर्य पालन करवानी इच्छा होवी जोइए, तो ज स्वदारासंतोष व्रत टके छे आवी बुद्धि पण क्यारे थाय, के ज्यारे स्त्री पण हेय छे, एम मनाय अने ज्यारे स्त्री हेय छे एम मनाय, त्यारे लग्न अणछुटके करवा पडे अने करे तो पण हेय बुद्धिवाळो लग्न ए आवश्यक छे एम मानशे नहि किंतु ए महत्वनु कारण छे एम मानशे आ बुद्धि होय तो जैनपणु टके अन्यथा बाह्यथकी व्रतनु पालन करवा छता पण ते वास्तविक जैन नथी किंतु नामधारी जैन छे आवा नामधारी जैनो ज्यारे अधर्मने धर्म तरीके ओळखाववा लाग्या, त्यारे पूज्य मुनिवर्योने श्री संघ[illegible]नो [illegible] ठरावो करवानी जरुर पडी

आ ठरावो वाचीने महासुख चुनीलाल [illegible] [illegible] [illegible] भरडवा माड्यु छे, पण आम्बर पोताना सद्गुरु [illegible] [illegible] ए विचारवा जेवु छे पण विचाराय क्याथी कारण के [illegible] स्वभाववाळा आत्माओ एक बाजुए जूए तेमा [illegible] [illegible]

अशक्त होवाथी, स्वय देशधर्म के सामान्य धर्मने स्वीकारनारा जे आमाओ होय, तेने विषे **शास्त्रकारोनी अनुमति मात्र देश धर्म** के सामान्यधर्मने विषे होय छे, परतु **बाकी रहेल अधर्मने विषे अनुमति होती नथी** कारण के–शास्त्र कारोना नियम मुजब **प्रथम सर्व धर्मनी देशना आपता** के सर्व धर्मनु प्रदान करता, ज आत्माओ समर्थ नहि होवाथी **स्वय देशधर्मनो के सामान्यधर्मनो स्वीकारे करे,** तमा बाकी रहेल अधर्मना पापनमा शास्त्रकारोने लगाडवा नथी

उदाहरण तरीके मानो क–कोइ माणसने गुरमहाराजे चउविहारनो पच्चक्खाण करवातु कह्यु, छता अशक्त होइ तेम न करता स्वय रात्रिभोजनना त्यागनो नियम स्वीकार्यो हवे पोते रात्रे पाणी पीवे ज एथी करीने एम कही शकाय के–गुरु महाराजे पाणी पीवानी छूट आपी ? तमज पाणी पीवु ए धम छ एम कहेवाय ? तेमज धर्म जो न करवाय, ता त अधमनु पाप गुरु महाराजने लागे खरु ? नहिज तेवीज रीत अहीं पण समजवु के–देश थकी धर्मनु पालन करनारने बाकी रहेल अधमनी छुट आपी नथी तमज तने धर्म तरीके ओळखावाय नहि किंतु ए अधम छ पाप छे, एम पोकार करीने कहेवाय, छता करनार पाप छोडवामा अशक्त होइ न छोडी शके तेनु पाप के अनुमति शास्त्रकारने लागतु नथी

अथ कामना रसियाओज वर्तमानमा जैनधर्मने धोको पहोचाडनारा छे

आथी स्पष्ट समजाय छे के जेटलो धर्म होय तेटलोज धम

पूर्वापर संबंध गुरुगमथी विचाराय तो कल्याणनो मार्ग हाथ लागे, अन्यथा शास्त्र ए शस्त्र रूप परिणमे ए सहज सिद्ध ज छे माटे सद्गुरुनी निश्राए शास्त्रनो अर्थ विचारवा एज कल्याणकारी छे

लेखाङ्क ३

जैन कोने कहेवाय ?

ता ७ ओगष्ट सने १९३२ ना जैन पत्रमा मास्तर जीवराज शामजीए आगम–शास्त्रो मा॰ भिन्न मत छे ज क्या ?" ए मथाळा नीचे समन्वय दृष्टिनी भूमिकाज समाधाननु वृक्ष रोपवा माटे ए उपर लग्नता लेखक प्रथम समाधानना मुसद्दानु कारण वार्ती जणावे छे के–**श्वेताम्बर मूर्तिपूजक आम्नाय प्रमाणे जैन तेज कही शकाय, के जे पचागी सहित पीस्तालीश आगमो अने ए आगमोने अनुसरतां दरेक शास्त्रो माने, माने एटले पोतानी शक्ति मुजब वर्तन करे अने वर्तन न थाय तो पश्चात्ताप करे, पण कोइ ते मुजब वर्ततो होय तेनो विरोध तो न ज करे!**

उपरोक्त मुसद्दामा जैन तेज कही शकाय ए व्याख्या बरावर ज छे

वाचक महाशय ! आ रीतिए जैननी सुदर व्याख्या छता अने लेखक पण मथाळु बाधता ज आगम–शास्त्रो माटे भिन्न मत छे ज क्या ? एम स्वीकारता छता दोषदृष्टिवाळा लेखकने दोष देखावाथी मुसद्दाने अगे पोताना विचारो जाहेरमा मूकता ते जणावे छे के–उपरनी

कहेवाय अने जेटलो अधर्म होय तेटलो अधर्म कहेवाय छता खेदनी वात छे के–आजे शास्त्रकारोना कहेला मर्मने नहि जाणनारा वीस नगरी महासुख चुनीलाल जेवाओ शास्त्र ने शास्त्रकारोना नामे जैन पत्रमा 'जैनाचार्या अने गृहस्थाश्रम' ए हेडींग नीचे अधर्मने पण धर्म तरिके ओळखाववा समाजमा बहार पडेला जणाय छे, आज कारणथी निष्कलंक जैनशासनमा जे कइ क्लेश जेवु हालमा जणाय छे, ते तेवाओनोज प्रताप छे वात पण साची छे के–क्लेश न थतो होय तोपण थाय, कारण के–**श्री पचवस्तुमा चौदसो ने चुवालीस ग्रथना कर्ता भगवान् हरिभद्रसूरीश्वरजी महाराजा अर्थकामने भवभ्रमणनु कारण जणावे छे,** त्यारे आ नामदारो अर्थकामने धर्म तरीके ओळखाववा बहार पड्या छे

चारे पुरुषार्थोमा धर्मज उपादेय छे माटे ससारथी छुटवा माटे शुद्ध धर्म करवो जोइए.

चौदसोचुवालीस ग्रथना कर्ता श्रीमद् आचार्यदेव श्री हरिभद्र-सूरीश्वरजी महाराजा पचवस्तुमा जणावे छे के–

ससार कारण ज पयईए अत्थकामाओ ॥ असुहो अ म हाभावो समारो तप्परिक्खयणिमित्त। बुद्धिमया पुरिसेण, सुद्धो–धम्मो अ कायव्वो ॥ ६८ ॥

त्यारे वादीए जणाव्यु के–**जगत्मा धर्म–अर्थ–काम अने मोक्ष** आ चार पुरुषार्थ छे ते चारे पुरुषार्थो पोतपोताना काळमा सेववा जोईए, कारण के–जो ते सेववामा न आवे तो क्यारेक दोषनी

जैन तरीकनी व्याख्या मुनि [illegible]
आचार्य श्री दानविजयजीनि [illegible]
येश्रीनी हाजरी हता, तेमना [illegible]
गैलि शु भाग उपर गणाय [illegible]
नहि होय, ते विचारणीय छे [illegible]
छे के—आचार्यश्रीनी मही नथ [illegible]
आचार्यश्रीनी आज्ञा सिवाय [illegible]
भाग उपर न गणाय आ [illegible]
आचार्यश्रीनि अनुमति सिवाय [illegible]
श्रीए ते मुसने बहार पडया [illegible]
खुलासो बहार पाडया जणाय [illegible]
मुसदो बहार पाड्यो छे, तना [illegible]
के—त म्हारी अनुमति सिवा [illegible] मुसने
बहार न पडयो होय [illegible] विचरवनु
रहेतु ज नथी

हवे लखकनो आक्षेप [illegible] जणाय छे के—आ
मन माने तेने जैन एम स्वी [illegible], जिनना दय तरीके स्वीकारे
ते जैन, तेना उपर लेखकने [illegible] जणाय छे, एटलुज नहि
परंतु आगमने मान तेने जैन, [illegible] नजरमा बधारे उपर
वाद छे, आम कही भोळी [illegible] भमाववानो प्रयत्न [illegible]
मुजब कहनारनी तमज [illegible] प्रगता तीर्थंकर [illegible]
घोरमा घोर आशातना [illegible] करवामा लेखके

प्राप्ति थाय तेनो उत्तर आपतां भगवान् श्री हरिभद्रसूरीश्वरजी महाराजा जणावे छे के—आ तारी दलील तुच्छ छे, कारण के अर्थ अने काम ए स्वाभावथी ज संसारनुं कारण छे अने संसार ए अशुभ अने महापाप छे माटे बुद्धिवान एवा पुरुष संसारथी छुटवा माटे शुद्ध धर्म करवो जोइए शुद्ध धर्म एटले स्वशास्त्रानुसारे चारित्र (दीक्षा) अने परशास्त्रानुसारे अप्रवृत्तिरूप कह्यो छे ते

शास्त्रकारोने अर्थ कामनो उपदेश इष्ट नथीज

आ उपरथी स्पष्ट छे के—संसार महा पापरूप छे, माटे अशुभ छे, अने तेना कारणभूत अर्थ अने काम ए पण पापरूप छे, तेमां कांइ नवाइज नथी ज स्वभावथीज पापरूप होय तेवा संसारना कारणभूत अर्थ अने काम तेनो उपदेश कलिकालसर्वज्ञ भगवान्, श्री हेमचंद्रसूरीश्वरजी जेवा तथा बालमरस्मति निरुद्धारक श्रीमान् रत्नशेखरसूरीश्वरजी जेवाओए आप्यो छे, एम जे कहेवु ते केटली भयङ्कर अज्ञानता छे महासुख चुनीलाल हु पूछु छु के— जो अर्हन्निति ना पाठोथी कलिकाल सर्वज्ञ भगवान् श्री हेमचंद्रसूरीश्वरने अर्थ अने काम उपादेय (स्वीकार करवालायक) तरीके इष्ट होय अने तेथीज अर्थकामनी पुष्टिनो उपदेश इष्ट होय तो तेओश्रीने योगशास्त्रमां जणावे छे के—

परिग्रह महत्त्वाद्धि, मज्जत्येव भवाम्बुधौ। महापोत इव प्राणी, त्यजेत्तस्मात् परिग्रहम् ॥ १०७ ॥

जेम अत्यंत भारथी मोटुं वहाण डुबी जाय छे तेम प्राणी निश्चयथी,

छे, ते तमना लेख उपरथी जणाइ आवे छे के—जो आपण जिनागम माने तेज जैन एम मन के कमने स्वीकारीए तो पछी आगममा कहेली दरेक बाबतनो यथार्थ रीतिए स्वीकार करवो ज पडे, अने तेम करवा पाले तेम नथी कारण के—आगमे कहेली वात यथार्थ स्वरुपमा मानवी नथी, अने जैनपणामा रहवु छ एटलान माटे लखक जणावे छे के—
हु मानु छु के-मूख्यतया शास्त्रोज माने अने आदरे तेने जैन कहेवाय एवी मात्र एकागी व्याख्या शास्त्रमा होवा सभव नथी महान् खेदनी वात छे के—**आवी एकागी व्याख्या छे के नहि? तेनो पोतानेज सदेह छे अने पाछा टीका करवा तैयार !** जो शासननी हेलना थती होय तो आवाज कारणो छे पोताने जे वात निःसदेह न होय ते बाबतमा पडवानी शी जरुर? पण दुनियामा अम कयारे डाह्या थीए ए केम जणाय? अस्तु

लेखक जणावे छे के—उक्त मुनिश्रीनी व्याख्यामा एक दोष तो प्रत्यक्ष थाय छे, अने ते ए के—आज सुधी प्रचलित जैननी व्याख्याथी **(जिनो देवता यस्य स जैन)** जैन कोमना त्रणे फीरकाने नाराज थवानुं कारण न हतु, परतु मुनिश्रीनी जैननी प्रगट थयेल व्याख्या मुजब त्रण फीरका वच्चे महा भेद थाय छे आ दोषनु महत्व धर्म अने कोमदृष्टिए केटलु गणाय ते जिनानुयायी सर्वेए विचारवु

वाचक महाशय! लेखकना आ लखाणथी स्पष्ट ज छे के—जिनागम माने तेज जैन, ए व्याख्या स्वीकारवामा जेओ अमारा देव जिनेश्वर छे, एम कहेनारा अने आगमनी वस्तुने नहि माननारा छे तेओ जुदा पडी जाय छे अने स्वेच्छाए चालनारा अने मतिकल्पना

परिग्रहनी ममताथी भवसमुद्रमा डुबेज छे माटे परिग्रहनो त्याग करवो जोइए आ रीतिए जणावे छे, ते जणावत नहि परतु वास्तविक रीतिए विचारीये तो उपरनी दीनाथी मालुम पडे छे के–अर्थकाम उपादेय तरीके तेओश्रीनेज इष्ट नथी, तो पछी उपदेश तो इष्ट होयज शानो ? अने तेवोज भाव अर्हन्निनिमा पण कादवोज जोइए **नहितर योगशास्त्रने खोडु ठराववानी फरज आवी पडे,** अने ते, तो **इष्टज नथी,** कारण के अर्हन्निनि ए सामान्य ग्रंथ छे, अने योगशास्त्र महान् ग्रन्थ छे एटले जरुर अर्हन्निनिथी घणीज कोटीमा योगशास्त्रने प्रमाणभूत गणवोज जोइए **हवे श्राद्धविधिकार तो आ लेखमां** प्रथम जणाव्या मुजब अर्थ अने कामने अनिष्ट जणाव्या छेज, एटले तेओश्रीने पण अर्थकामनो उपदेश देवो ए इष्ट होयज नहि यावत् जैन शासनना एके एक साचा साधुओने अने सूत्रकारोने पण ए इष्ट होयज नहि

ग्रंथकर्त्तानु मुक्ति प्रयोजन मायु नथु न ज जोईए

बीजी ए वात ध्यानमा राखवानी छे के–दरेक दरेक शास्त्रकारो ग्रन्थनी शरुआतमा ग्रन्थ करवानु प्रयोजन जणावे छे तेमा जैन शास्त्रकारो प्रयोजनना बे विभाग पाडता जणाय छे के–एक ग्रन्थ करनारनु प्रयोजन, अने एक सांभळनारनु प्रयोजन, दरेकना पाछा बबे विभाग पाडे छे के–तत्कालनु अनतर प्रयोजन अने परपर प्रयोजन–अनतर प्रयोजन ते कहेवाय छे के–श्रोताने उपकार थाय ते, अने परपर प्रयोजन मोक्षनी प्राप्ति थाय ते ए रीते श्रोताने पण अनतर प्रयोजन शास्त्रना अर्थनु ज्ञान थवु अने परपर प्रयोजन मोक्षनी प्राप्ति.

मुनन मा, व्हन अन स्री श्रान विषे सरखी दृष्टि राखवानी घेली वातो करनाग पण जुदा पडी नाय छे, एटले प श्री रामविजयजी महाराजनी करेली व्याख्यामा दोष जणायो

जो जुदा न पडता होत तो ते व्याख्या पण प्रिय लागत, परतु जुदा पडी जाय एटल व्याख्या स्वीकार्य पालवे तेम नथी भले ने आगम माट भिन्न मत छेज क्या ? एम रखे एथी शु ? हृदयमा हलाहल झर भर्यु होय ते लत्रमा आव्या सिवाय कमज रह ? अथात् नज रहे

आ प्रमाणे एटले के—मा, व्हन अन स्री त्रणेमा जुदो व्यवहार होवा छता पण, समन्वय दृष्टि छे, एम जणाववा बहार पडवु, ते *"मारी मा वाझणी छे" आ न्याय शु नथी लागु पडतो ? त प्रमाणे* समन्वय दृष्टि कहवाय खरी ? जिनन देव तरीके स्वीकारनाराओ जो जिनवचननी अवगणना करनाग होय, तो शु जैनपणामा रही शके छे ? जो तओ जैनपणामा न रही शके, तो तेओनी साथ समन्वय दृष्टि शी रीत रखाय ? वली जिनागम मग्न तेज जन, एम कहवामा शास्त्रनो आधार नथी एम पण नथी, कारण के–समकिती ए जैन छे, अने मिथ्यादृष्टि ए इतर छे हवे मिथ्यादृष्टिनी व्याख्या करता भाष्यकार जणावे छे के–

'पयमवि असद्दहतो सुत्तत्थ मिच्छदिट्ठीओ'

सूत्र तथा अर्थना एक पदनी पण श्रद्धा जन न होय, तेने मिथ्यादृष्टि जाणवो

थवी अर्थात् कर्ता अने श्रोता उभयनु परपर प्रयोजन मोक्षन छे हवे जो ऐहिक प्रयोजन शास्त्रनु बनाववानु होय, तो परपर प्रयोजन जे मोक्ष छे ते उडावी देवु प॰ माटे स्पष्ट छे के—दरेक जैन शास्त्र कारनु शास्त्रो बनाववानु प्रयोजन मोक्ष ज छे, अने ते प्रयोजन त्यारेज सिद्ध थाय के—ज्यारे अर्थ ने काम हेय(छोडवा लायक) तरीके स्वीकारवामा आवे त्यारे माटे उपदेशकोए, श्रोताओए, तेमन ग्रथनु वाचन करनाराओए मोक्ष प्रयोजननी सिद्धि थाय ते रीतिए उपदेश देवो जोइए, तेमज श्रोताओ अने वाचकोए तेज प्रयोजनथी साभळवु अने वाचवु जोइए के—ग्रथकर्तानु मुक्ति प्रयोजन मार्यु न जाय

शास्त्रना नामे अर्थ कामने पोषनारा अज्ञानीओने शास्त्रीय पूरावा सहित साची समजण अने तेवाओथी सावचेत रही आत्मभान नहिं भूलवा भद्रिकोने भलामण

आ उपरथी वाचक महाशयोने जरुर एक शका उपन्न थशे के ज्यारे मुक्तिना प्रयोजन सिवाय जैन शास्त्रो रचाया नथी अने तेथीज एक मुक्तिना ध्येयथीज उपदेश देवो अने साभळवो जोइए अर्थ कामनो उपदेश देवो जोइए नहिं तो पछी सुश्राद्ध वाल्लाभाइ नगीनदास ना खुल्ला पत्रना उत्तरमा महामुख चुनीलाल श्राद्धविधिनो पाठ आपी अर्थकामनो उपदेश श्राद्धविधिकार सिगरए आप्यो छे, एम जणावे छे ते खोटु ठरे छे तेनु केम ? कारण के—महासुख चुनीलाल ए जैन शासनमा अने इतर शासनमा पण दीक्षाविरोधी तरिके जाहेर थएला छे, माटे तेओ खोटु लखे खरा ? आना उत्तरमा हु जणावु छु के—जे श्राद्धविधिनो पाठ आपी अर्थकामनो उपदेश देवो जोइए एम साबीत

'पयमक्खरपिएग, जो न रोयइ सुत्तथ निद्दीह।
सेस रोयइ अ यद्दु, मिच्छादिट्ठि मुणेयव्वा' ॥ स २३२

जे सूत्र तथा अर्थमा कहेल एक पद अथवा एक अक्षर पण न रुचे अने जिनेश्वरदेवना बाकी बधा वचनो रुचे, तो पण ते मिथ्यादृष्टि जीवो जाणवा

आ उपरथी सुस्पष्ट ज छे के—जिनेश्वरने देव तरीके स्वीकारता छता अने जिनेश्वरदेवना सर्व वचनो मानता छता, जो एक पण अक्षरनी अरुचि रहे, तो ते मिथ्यादृष्टि छे अने माटे ज ते जैन नथी

आथी न प श्री रामविजयजी गणिवरे सुसभामा जे व्याख्या बहार पाडी छे ते शास्त्रसम्मतज छे, ए शंका वगरनी वात छे

आगळ जता लेखक लखु लखु ज लखे छे, तेना उपर ध्यान नहि आपता आपणे एकज वात विचारीए के—मुनिश्रीए प्रचलित देवसान्निध्यवाळी व्याख्या प्रगट न करता जिनागमवाळी जैननी व्याख्या प्रगट करवामा मुनिश्रीनी नजर सन्मुख वधु चैतन्यवाद छे, के जडवाद छे ? ते विचारको विचारे

आ लखी लेखक जणाववा मागे छे के—मुनिश्रीए जिनागम माने तेने जैन, एम कहेवाथी मुनिश्रीनी नजर सन्मुख जडवाद छे परतु आ आरोप उपजावी लखु पडे छे, कारण के—जेना हृदयमा जिनागम प्रत्ये बहुमान छे अने दरेक कार्यमा जिनागमने आगळ करनारा छे, तेने तो श्री जिनेश्वरदेवनु बहुमान वर्तुज छे, पण जेओ अमारा देव जिनेश्वर छे, एम बोलता छता आगम प्रत्ये बहुमान

करे छे, तेज श्राद्धविधिना पृष्ठपर सत्रथना पाठोनो विचार करवामा आवे, तो तेओ आपोआप खोटा ठरे छे नो के—महाशय चुनीलालने खोटा पडवाथी खोटुं लागशे, उता भोळी जनता तमना लखेला अर्थसय लेखथी अवळे रस्ते दोरवाइ जिनप्रणित मार्गथी भ्रष्ट न थाय, तेनी खातर आ पाठो जणाववानी जरर पडे छे ते पाठो नीचे मुजब छे "नमकारेण विबुधो इति"। आ पाठनी गाथानी टीकामा "पडिक्कमिअ सुईपूइअ"। आ पदनो अर्थ करता श्राद्धविधिकार जणावे छे के—विधि मुजब प्रतिक्रमण कया बाद—

शुचिरिति मलोत्सर्गदन्तधावन-जिव्हालेखन-गण्डूपकरण सर्वदेशस्नानादिना पवित्र सन्नित्यनुवादपर लोकसिद्धो ह्ययमर्थ इतिनोपदेशपर, ।

शुचि एटले शु ' तो के मळनो त्याग करवो, दातण करवु, जीभ उपरथी ऊ उतारवी, कोगळा करवा सर्वस्नान (आखा शरीर स्नान), देश स्नान (शरीरना अमुक भागमाज स्नान) आदिवडे पवित्र थयो छतो जिनपूजन करे आवी अदर मळनो त्याग करवो आदि जे व्यवहार क्रिया छे, ते क्रियानो अहिं अनुवाद करवामा आव्यो छे, कारण के—आ वात लोकमा स्वयसिद्ध छे, मारे उपदेश करवामा आव्यो नथी कारण के—**अप्राप्ते हि शास्त्रमर्थवत्**। जे पदार्थ स्वयमिद्ध न होय, तेमा शास्त्र उपदेशनी सफलता छे परतु मेलाण स्नान करवु जोइए, शुं खाए खावु जोइए, इत्यादि पदार्थोमा शास्त्र उपयोगी नथी

"अप्राप्ते त्वामुष्मिके मार्गे शास्त्रोपदेशसाफल्य"

अप्राप्त आमुष्मिक मार्गमां शास्त्रना उपदेशनी सफळता छे "एव

ाग नथी, तेओ श्री जिनवरदेवनु अपमान करनाराज छे अने नर्थान तओ जडनादमा पमायेग छ म ति शक छे

आ बाबतनी पुष्टिमा श्री हरिभद्रसूरीश्वरजी महाराजा धर्मबिंदुमा जणावे छे के—

'तथा आज्ञाऽनुस्मृतिरिति' अ ५ सूत्र ७४

आ सूत्रनी टीका करता स्वयमेव जणावे छे के—

'आज्ञाया–भगवद्वचनस्यपदेपदे हृदयेऽनुस्मृति' कार्या'

भगवद्वचननु पगले पगले हृदयमा स्मरण करवु कारण के—

भगवद्वचनानुस्मरणस्य भगवत्स्मरणरूपत्वेन महागुणत्वात्'

भगवद्वचननु स्मरण ए भगवाननु स्मरण छे, माटे महागुण थाय छे

'यदुक्त द्वितीय षोडशे —

अस्मिन् हृदयस्थे सति, हृदयस्थस्तत्वतो मुनीन्द्र इति।
हृदयेस्थिते च तस्मि–न्नियमात् सर्वार्थसंसिद्धि ॥१४॥

जिनागम हृदयमा स्थापन कर्य छत तत्त्वार्थथी जिनदेव हृदयमां छे, अने जिनदेव हृदयमा छे, तो निश्चयथी सर्व अर्थनी संसिद्धि छे आथी स्पष्ट थई जाय छे के–वास्तविकरीतिए जिनेश्वरने देव तरीके स्वीकारनारो ते छे, के जे जिनागमने माननार होय जे जिनागमने माननारो छे, तेज श्री जिनेश्वरने देव तरीके स्वीकारनारो छे जे जिनागमने माननारो नथी, ते श्री जिनेश्वरने माननारो नथीज मा प श्री तत्त्व [illegible] गणित [illegible] यथार्थ छे, अथवा दोष वगरनी छे [illegible] तेओ चैतन्यवादना

अन्यत्रापि ज्ञेय" आवी रीते ज्या ज्या स्वयमिद्ध अर्थ होय, त्या त्या अनुवाद वाक्य जाणवु, अने ज्या ज्या स्वयमिद्ध अर्थ न होय, त्या त्या शास्त्रोपदेशनी सफलता समजवी आथी स्पष्ट थाय छे के- शास्त्रनिर्मिकारे स्वयसिद्ध होवाथी अर्थकामनो उपदेश आप्योज नथी छता महासुख मुनीशत्र जणावे छे के--सातमी गाथामा अर्थकामनो उपदश आप्यो छ तो हव मानमी गाथा तपासीए आ रही त गाथा-

ववहारा सुद्धि देसाइ विरुद्धचाय उचिय चरणेहिं। तो कुणइ अत्थचिंत निव्वाहिंतो निअ धम्म ॥ ७ ॥

आ गाथानी टीका करता ग्रथकार स्वय जणावे छे के--व्यवहारनी शुद्धि एटले धन उपार्जनादिनो ज उपाय तेनी शुद्धि, एटले मन, वचन, कायानी अवक्रता तथा देशादि विरुद्ध कार्यानो त्याग अने उचित कृत्यनु आचरण, आ त्रणे वड करीने पोतानो स्वीकार करेलो व्रत अभिग्रहादि ज धर्म तेनु पालन करतो छतो अथ चिंताने कर, एटले के--धन उपार्जनादिनो उपाय कर परतु धन उपाजनादि करता लोभादिकथी धमन छोड नहि

"अत्रचार्थचिन्तामित्याद्यनुवाद तस्या स्वय सिद्धत्वात्। धर्मं निर्वाहयन्निति तु विधेयमप्राप्तत्वात्" ॥

जो के पाचमी गाथामा खुलासो करी गया छे, छता केटलाक वक्र, जड एवा भ्रष्ट आमाओ उधो अर्थ न करे, एटला माटे अहिं धन उपार्जनादिना उपायन वतावना पहलान खुलासो करी दे छे के-- **धन उपार्जनादि लौकिक व्यवहार छे अने ते जगतमा स्वय-**

पूजारी छे, जेमन आ व्याग्या स्वीकारनी पालवती नथी, तेओज श्री हरिभद्रसूरीश्वरजी महाराजाना वचनथी जडवादना पूजारी बनी जाय छे

लेखाङ्क ४

श्रीश्राद्धप्रतिक्रमण याने विविध विचारमाळा



'वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्व साहू अ ॥
इच्छामि पडिक्कमिउं, सावगधम्माइआरस्स ॥ १ ॥

परमोपकारी सूत्रकार महापुरुषो जणावे छे के–

श्री अरिहंतादिक पचपरमेष्ठिने नमस्कार करीने श्रावक धर्मना अतिचार प्रतिक्रमवाने इच्छु छु आ सूत्र गाथा उपर टीकाकार महर्षि श्रीमान् तपोगच्छाम्बरनभोमणि श्री रत्नशेखरसूरीश्वरजी महाराज विस्तारथी अर्थ करता जणावे के–तमाम जीवोने हितकारी एवा श्री ऋषभादि जे तीर्थंकरो, समग्र कर्मानो क्षय थवाथी कृतार्थ थयेला एवा श्री मरुदेवीपुंडरिकादि जे सिद्ध भगवानो, श्रुतधर्म अने चारित्र धर्मना जे आचार आदरवामा चतुर एवा जे आचार्य भगवानो, अने उपाध्याय भगवानो तथा सम्यगदर्शनादि मोक्षमार्गना साधक जिनस्थविरकल्पिकादि अनेक भेदभिन्न सर्व साधु–भगवानोने त्रिविधे वंदन करीने श्रावकधर्मना अतिचार प्रतिक्रमवाने इच्छु छु

सिद्ध होवाथी तेनो मात्र अनुवाद करवामा आव्यो छे एटले धन मेळववु ए अनुवाद छे, एमा शास्त्र बिलकुल विधान करतां नथी, माटे शास्त्रकारोनी तेमा अनुमति नथी व्यापारादि करता धर्मने बाध न लगाडवो तेमा शास्त्र विधान करे छे, कारण के–ते स्वयसिद्ध नथी, माटे धर्मना उपदेशनी जरुर रहे छे

आ वात आटली बधी स्पष्ट छ छता अर्थकामनो उपदेश जैनाचार्याए आप्यो छे एम जे महाशय चुनीलालनो आग्रह तेमना लख परथी जणाय छे, तेमा म्हने कारण मात्र एकज लागे छे के–श्री मोयणीनीमा सूरीसार्वभौम–क–या–त्रा पू आ–म–श्री विजय-लब्धिसूरिश्वरनी महाराजना अध्यक्ष पणमा परम पू–चा–त्र–व्या–वा–प–प्र–श्री रामविजयजी गणिवय आदि मुनिवर्गनी सम्मतिथी ज ठरावो बहार मूकवामा आव्या छ ते उपरथी पोताना मानला अर्थकामना उपदेशोने जब्बर फटको लागवाथी तेओनो ढाक पीछोडो करवा माटनो प्रयास जणाय छे परतु पाप फुटया सिवाय रहेतु नथी

आ रीतिए चौदमी गाथामा पण समजवु के–पाणीग्रहण एटले गृहस्थे परणवु तेनु विधान नथी किंतु सर्वथा ब्रह्मचर्य पाळवानी ताकात न होय अने परणवु पडतु होय तो समान कुल अने समान आचारवाळा कन्या ने वरनो सबध थवो जोइए, के–जेथी परीणामे पोताना धर्मने बाध न पहोंचे वळी विवाहना जे आठ भेद शास्त्रमा जणाव्या छे, ते जैनशासनमा तो मान्य नथी कारण के–विवाह ए तो ससारनु कारण छे माटे अहीं लोकमा मनाता आठ भेदनो अनुवाद करेलो छे,

आ उपरथी वाचक वर्ग विचारशे के–मातपिता, भाईव्हेन, धन, स्त्री आदि दुनियाना कोइपण पदार्थने नमस्कार न करता मात्र पंच परमेष्ठिनेज नमस्कार करवामा आव्यो आथी स्पष्टज छे के–दुनियाना कोइ पण पदार्थने या दुनियाना पदार्थोना पिपासुओने नमस्कार करवाथी आत्मानु पारमार्थिक कल्याण थतु नथी, कारण के–जे पोतानु कल्याण करी शक्या नथी, ते बीजानु कल्याण केवी रीते करी शके ? अर्थात् नज करी शके

जेम धनवाननी पासे कोइ याचक याचना करे तो तेनु मन संपादन थाय, पण भिखारी पासे याचना करे तो शु मळे ? अर्थात् काइ न मळे, उलटो क्लेश थाय के–क्या आवानी पासे आव्यो ! तेवीज रीते साचा कल्याणनो अर्थी अरिहंतादि पंचपरमेष्ठिनेज नमस्कार करे, सेवे, भजे, तो कल्याण मेळवी शके, कारण के– अरिहंतादि–पंचपरमेष्ठिएज साचु कल्याण प्राप्त करेलु छे, अने तेथी धनवाननी उपमावाळा छे तफावत एटलोज छे के–ज्यारे दुनियाना धनवानो विनश्वर धनवाळा छे, त्यारे आ लोकोत्तर अरिहंतादि अविनश्वर एवा ज्ञानदर्शनादि आत्मिक धनवाळा छे साचा धनना अर्थिओए पंचपरमेष्ठिनेज भजवा जोइए, ते सिवाय आत्मधननी प्राप्ति थवानी नथी

आत्मा ए परमात्मा छे, एम कहनाराओए विचार करवानी जरुर.

केटलाक परमार्थने नहिं समजेलाओ कहे छे के–' पंचपरमेष्ठिने भजवानी शी जरुर छे ? आ आत्माज परमात्मा छे ' अने विचार

एटले आ गाथामा पण कामनो उपदेश देवो जोइए एवु नीकळतु नथीज

विवाहनी सिद्धि माटे हास्यास्पद दलील अने तेनु निराकरण

नाना नाटकने पण हामी आवे एवु महाशुरा चुनीलाल जणावे छे के–जैनोमा बारव्रतधारीने उत्तम गणवामा आवे छे तेवा बारव्रत लेवा माटे साधु श्रावकने उपदेश आपे छे आ बार व्रतमा चोथु व्रत स्वदारासतोष छे लग्न कर्या सिवाय स्वदारा शी रीते समजी शके? एटले लग्न ए श्रावको माटे आवश्यक विधि होवाथी आचार्योए लग्नविधिना ग्रथो रचेला छे

वाचक महाशय! जुओ तो खरा! केवी अधम मनोदशा परण्या सिवाय चोथु स्वदारा व्रत समवे नहि, माटे परणवु ए आवश्यक छे एम जणाववु, ए तो केवु थाय छे के–खातर सिवाय धान्य समवे नहि, माटे खातरने पण शधीने खावु जोइए कादव सिवाय कमल समवे नहि, माटे कादवने पण सुघवो जोइए आ रीतिए तो जगत्भरना सारा अने नरसा तमाम पदार्थोनी उपादेयता थई जाय, तो पछी जगतमां काइ छोडवानु बाकी रहेज नहि त्यारे तो एमज कहोने के–स्त्री होय तो सतान थाय अने सतान होय तो दीक्षा लेनारा बने माटे स्त्री परणवी जोइए अने जे न परणे ते जिनाज्ञा बाह्य छे माटे ते जैन न कहेवाय आ तमारा न्याये तो श्री नेमिनाथ प्रभु आदि तीर्थंकरो अने जबुस्वामी आदि बालब्रह्मचारीओ

योग्य छ क—आमा ए परमामा रातो पण क्यारे ? त्यारे कर्मरूप कचराथी दूर थइ आमस्वरूपमा रमणता करे त्यारे अथवा पर मामा नहि पण चार गतिरूप ससारमा भटकतार पामर माज कहवाय

एक बाजु मावाप, धन, स्त्री, छोकरा, नोकर, दुनियानी तमाम सामग्री, इत्यादि मारु मारु करी दुनियाना नाशवत पदार्थनि माटे मरवा तैयार थाय अने आमाने मारु सारो होय तोय मादा जेवो थइ जाय छ, जो पद्गलगत पदार्थ सारो मळे तो रागी थाय ने खराब मळे तो नाराज थाय जेम कोइने मोदक भावना होय, अने मोदक मळ्या पछी जाण मोक्ष मळ्यो एम समजी ग्यानी चढ़ाण एवी प्रशसा करे, के वीनाना मुखमा पाणी आवे अहो ! शु मोदक, शु मसालो, केवो सुदर, इत्यादि बखाणी वखाणीने खाय जाळ शाक मा ज्यारे मरचु—मीठु जराक ओछु—वधु पडयु होय, त्यारे तो निंदा करवा माडे, के मरचु बराबर नथी, वधु पडी गयु छे, अने मीठु तो नाख्युज नथी, इत्यादि बोली जो क्रोधना आवी गयो होय तो बीचारी रांधनारीना तो बारे वागी जाय आवी स्थितिमा रहेलाने बीजी बाजु परमामा कहेवडाववा छे ए शु मूर्खता नथी ? ना, परमामापणु तो शु ? पण अतरात्मा पण न कहता बहिरात्मा कहवाय

केमके—जे आत्मा बाह्य पौद्गलिक पदार्थमा आनद माने छे ते बहिरात्मा छे, अने आत्माना ज्ञानादि गुणोमा जे आनद माने छे ते अतरात्मा छे

दरेक आत्मा परमेश्वरमा पलटेज जवानो छे कोइ थोड़ु नथी

ज ममरणथी कोइ कोटन बचावी शक तेम नथी ज्ञान–दर्शनादि युक्त एवो आत्मा ज शाश्वत छ, माटे बाह्य पौद्गलिक पदार्थोमां मोह न पामवा अने ते माटे प्रयत्न न करतां, केवळ आत्माना ज्ञानादिक गुणो प्रगट करवा माटे प्रयत्न करवो जोइए सर्वथा कर्ममेल दूर करी केवलज्ञान प्राप्त करवु अने सिद्धपदने पामवु ते परमात्मदशा कहेवाय छे

अने विचारवु जरूरी छे के–बहिरात्मभाव गया सिवाय अतरात्मभाव प्रगट थतो नथी, अने अतरात्मभाव प्रगट थया सिवाय परमात्मदशाने प्राप्त थवातु नथी कहेवानी मतलब ए छे के–परमात्मा बनवा माटे अतरात्मा थवु पडशे, अतरात्मा थवा माटे बहिरात्मभाव छोडवो पडशे ? अने बहिरात्मभाव छोडवा माटे अने कर्मरहित थवा माटे पचपरमेष्टिनु ध्यान करवु ज पडशे

जगतमां पचपरमेष्ठि मत्रथी बीजो कोइ पण मत्र अधिक नथी.

जेम पगथीया सिवाय घरना पहेला माळे पण जवातु नथी, तेम पचपरमेष्टिना आलम्बन सिवाय जीव कर्म रहित बनी शकतो नथी त्यासुधी आत्मा कर्म रहित न बने, त्यासुधी आत्मा ए परमात्मा छे एम केम कहवाय ? जे पचपरमेष्ठि तरफ असद्भाव बतावतो होय तेनु कल्याण शी रीत थाय ? पचपरमेष्ठिना प्रभावे पूर्वे अनेक आत्माओ परमात्मपदने पाम्या छे, वर्तमानमां पामे छे अने भविष्यमां पामशे, जेना प्रभावथी अनेक प्रकारना रोग, शोक, उपद्रव आदि चाल्या जाय छे अने समाधिमरण थाय छे

धर्माचार्यनुं स्वरूप

तथा धम्मायरिए एटले धर्माचार्य-सम्यग्धर्मने देवावाळाने [न]मस्कार करीने जेम जीवादि पदार्थोने नहि माननार अर्थात् नास्तिक [ए]वा प्रदेशी राजाने श्री गणधरभगवान शुद्ध जैनधर्मनी प्राप्ति करावी [ह]तु छ के —

जो जेणसुद्धधम्ममि ठाविओ संजएण गिहिणा वा ।
सो चेव तस्स जायइ धम्मगुरु धम्मदाणाओ ॥१॥

टीकाकार महर्षी धर्मगुरुना स्वरूपने दर्शावतां जणावे छे के– आ असार एवा संसारमां आधि–व्याधि–उपाधि–जन्म–जरा–मरण भय–शोक इत्यादिथी पीडाता एवा भव्य प्राणीओने संसाररूपी रोगने मटाडनार शुद्ध धर्मरूपी दवा ने आपे छ, ते चाहे तो साधु होय अथवा गृहस्थ होय तो पण ते धर्मगुरु कहेवाय

आथी स्पष्ट ज छे के–जमानाने नामे एकांत हितकर एवो **शुद्ध वीतराग प्रणित धर्म न बतावता, आरंभ–समारंभ पापयुक्त संसारना कार्यनो उपदेश करे ते अधर्मदाता गुरु कहेवाय**

धर्मगुरुओ मात्र वीतराग प्रणित शुद्ध धर्मनो ज उपदेश आपी शके

गृहस्थाश्रमनी श्रेष्ठता बतावनाराओए विचारवु जोइए

केटलाक कहे छे के–गृहस्थाश्रम ए परम आश्रम छे, कमके–

जेम पूर्वे गीध नामनु मासाहारी पक्षी रोगग्रस्त हतु, ते मुनिना दर्शन अने चरणस्पर्शथी रोगरहित थयु अने तेनी पांखो सोना जेवी, चांच परवाळा जेवी, तथा कांति रत्न जेवी थई, त्यारथी ते पक्षीनु नाम जटायु पडयु आ पक्षी मुनिओने नमस्कार करी तेमनो उपदेश सांभळी श्रावक बन्यो मुनिए तेने जीवघात, मांसाहारीपणु तथा रात्रि भोजननो त्याग कराव्यो रावणे ज्यारे सिताजीनु हरण कर्यु, त्यारे ते जटायुए रावणनी छाती चिरी नाखी तेथी क्रोधित बनला रावणे तेनी पांखो कापी नाखी, छेवट मरवानी छेल्ली घडीए रामचंद्रजीए पचपरमेष्ठि मत्र तेने संभळाव्यो मत्रना प्रभावे ते मरण पामीने चोथा माहेन्द्र देवलोकमा देवपणे उत्पन्न थयो पचपरमेष्ठिनो प्रभाव केवो अपूर्व छे, के तिर्यंच पण देव थयो ? पचपरमेष्ठिनो महिमा अवर्णनीय छे

त्रण जगत्मा पचपरमेष्ठि मत्र सिवाय अन्य कोइपण मत्र उत्कृष्ट नथी, अने माटेज टीकाकार महाराजे पचपरमेष्ठिने नमस्कार कर्यो छे

सिद्धना पदर भेदो

पदर भेदे तीर्थंकर अतीर्थंकरादि सर्व सिद्धोने नमस्कार करीने-
१ तेमा तीर्थंकर सिद्ध ऋषभादि, २ अतीर्थंकर सिद्ध पुडरिकगौतमादि गणधरो, ३ तीर्थसिद्ध एटले-जिनधर्म तथा तेमा आधारभूत चतुर्विध संघ छता जे सिद्ध थाय ते तीर्थसिद्ध कहवाय, ४ तीर्थना अभावे कोइ जातिस्मरणादि वडे सिद्ध थाय ते अतीर्थसिद्ध, ५ बाह्य-निमित्त सिवाय जातिस्मरणादि वडे पोतानी मेळे बोध पामता जे

दरेक साधु, भिक्षुक, गरीब अनाथ विगेरेनो तेना उपर आधार छे, माटे गृहस्थाश्रम पोषाय तेवो उपदेश आपवो जोइए जुओ महावीर परमात्मा विगेरे तीर्थंकरोए पण गृहस्थाश्रमने सेव्यो छे आवु कहेनाराओ तद्दन वीतरागना मार्गथी अजाण छे, अने तेओ पोतानी मूर्खाइ प्रगट करे छे, केमके—जो गृहस्थाश्रम श्रेष्ठ होय तो पछी साधु थवानी जरुर शी ? जे आश्रममा हिंसा, जुठ,चोरी, मैथुन परिग्रह, क्रोध, लोभ, विगेरे अढारे पापस्थानको सेववामा आवे छे तेने श्रेष्ठ शी रीते कहेवाय ? जो गृहस्थाश्रम एज धर्म होय तो पछी दान, शील, तप अने भावनी शी जरुर ? तमे कहेशो के—एकनो आधार गृहस्थाश्रम उपर छे माटे श्रेष्ठ छे

तो अत्रे जणाववानी जरुर छे छे—गृहस्थाश्रमनो आधार पृथ्वी, पाणी, वायु, वनस्पति खेती, वेपार इत्यादिक उपर छे ते पण श्रेष्ठ कहेवाय आम गणतरी गणशो तो दुनीयामा काइ चीज खराब छे एम नहिं कहेवाय

अरे चोर लुटारा ए पण सारा कहेवाय केमके—दुनियामा चोर-लुटारा न होत तो समारु रक्षण करवा सरकारने चोकीदारो न राखवा पडे, अने राखे छे माटे तेमनो आधार चोरलुटारा उपर छे, अने तेथी ते पण सारा एम कहेवाय ? नज कहेवाय

जेम कमळ कादवमाथी उत्पन्न थाय छ, अने पाणीथी वृद्धि पामे छ, छता कादव तथा पाणी नहिं वखाणता फक्त कमळज वखाणाय छे तेम साधुओनो आधार गृहस्थाश्रम होय, छता कमळरूप साधुओज वखाणाय, परतु कादवरूप गृहस्थाश्रम नज वखाणाय

सिद्ध थाय ते स्वयबुद्धसिद्ध, ६ वृषभादि बाह्य निमित्तो वड बोध पामी मुक्तिए जाय ते प्रत्येकबुद्धसिद्ध, ७ आचार्यादिकना उपदेशथी बोध पामीने जे मोक्षे जाय ते बुद्धबोधितसिद्ध, ८ पुरुषलिंगे सिद्ध थाय ते पुंलिंगसिद्ध ९ प्रत्येकबुद्ध वर्जित केटलाक आत्माओ स्त्रीलिंगे मोक्षे जाय ते स्त्रीलिंगसिद्ध, १० तीर्थंकर अने प्रत्येकबुद्ध वर्जित केटलाक नपुसकलिंगे सिद्ध थाय ते नपुसकलिंगसिद्ध, ११ रजोहरणादि रूपे स्वलिंग सिद्ध थाय ते स्वलिंगसिद्ध, १२ अन्यलिंगे मोक्षे जाय ते अन्यलिंगसिद्ध, १३ गृहिलिंगे मोक्षे जाय ते गृहिलिंग-सिद्ध, १४ एक समये एकसिद्ध थाय ते एकसिद्ध, १५ एक समये उत्कृष्टा १०८ सिद्ध थाय ते अनेकसिद्ध कहेवाय

सिद्धना पदर भेदोनो त्रणमा समावेश अने तेमाय स्वलिङ्गनीज महत्ता

उपर गणावेला भेदोनो वस्तुत विचार करीए तो **अन्यलिंग, गृहिलिंग न स्वलिंगमा** बाकीना भेदोनो समावेश थाय छ, एटले **स्वलिंगसिद्ध, अन्यलिंगसिद्ध ने गृहिलिंगसिद्ध–एम त्रण भेद रहे छे तेमा पण मोक्षनु लिंग तो रजोहरणादिरूप स्वलिंगज कहेवाय, केमके–अन्य अने गृहि ए बे शब्दोज मोक्ष सिवा-यना लिंगने सूचवनारा छे**

वळी अन्यलिंग तथा गृहिलिंगमा रह्या छता पण मानथी दर्शन, ज्ञान, चारित्र आव्या सिवाय केवलज्ञान थतु नथी **केवलज्ञान उत्पन्न थाय तेज क्षणे सिद्धि गतिने पामे तो अन्यलिंग तथा**

वळी जो गृहस्थाश्रम श्रेष्ठ होय तो तीर्थंकरोए वार्षिक दान देइ शा माटे सर्वथा समार त्याग कर्या ? समार त्याग करती वेळा देव-मनुष्यनी वचमा "सव्व सावज्ज जोग पच्चक्खामि" कहीने सर्वेने जाहेर कर्युं के-'भाइओ आ गृहस्थाश्रम या आत्मीय ससार सावद्य एटले पापरूप छे, मा सव पापरूप योगोनो त्याग करु छु, अने ते त्याग पण ज्या सुधी जीवीए त्या सुधी, मन, वचन, कायाए संसारना तमाम पापने करु नहि, बीजा पासे कराबु नहि' अने कोइ करता होय तेने सारो मानु नही आवी रीते सरवा पापने जाहेर करी, तेनो सर्वथा त्याग करी, एकान्त आत्म-कल्याणमा एकाग्र थयेला तीर्थंकरदेवोना उदाहरण लइ गृहस्थाश्रम पोषनानी वातो करवी ते स्पष्टपणे मूर्खाइ छे त्याग लीधा पछी गृहस्थाश्रम अनिष्ट माने छे एम नहि, परतु प्रथम पण अनिष्ट मान

ज्यारे नन्दिवर्धने प्रभुना मोटा भाईए व वष ममाग्मा रहेवानु कह्यु त्यारे महावीर भगवान अवधिज्ञानथी जाण्यु के-हजी मारे बे वर्ष ससारमा रहेवानु बाकी छे, एम जाणी भाईनी वात स्वीकारी छता जणाव्यु के-'मारे माटे कइपण आरंभ-समारंभ करवो नहि अने, मारे माटे रसोइ पण करावरी नहिं तेमज सदा सर्वथा ब्रह्मचर्यनु पालन कर्युं, अने काचा पाणीथी स्नान पण नथी कर्युं' आवी रीते साधु माफक व वष रह्या तमा पण ससारना पापव्यापार निरन्कार्या छे

वळी तीर्थंकरो ज्यारे गर्भमा आवे छे, त्यारे पूर्वे जेटलु अवधि ज्ञान होय तेटलु साथे लइने आवे छे, एटले त्रण ज्ञान सहित होय

गृहिलिंग सिद्ध कहेवाय अथवा केवलज्ञान पाम्या बाद पोतानु विशेष आयुष्य देखे तो ते पण साधुलिंगनोज स्वीकार करे छे

तेज वात टीकाकार महात्मा पोते नीचे प्रमाणे जणावे छे—

एते चान्यलिङ्गे सत्यपि भावतः सम्यक्त्वचारित्रादिप्रतिपत्त्या केवलज्ञानोत्पत्तौ तत्क्षण सिद्धत्वलाभे द्रष्टव्या, अन्यथा स्वस्य दीर्घायुर्दर्शने तेऽपि साधुलिङ्गमेव प्रतिपद्यन्ते एव गृहिलिङ्गसिद्धा अपि मरुदेवीपुण्याढ्यनृपादयो ज्ञेया ॥

आ पत्र सिद्धना भेदने यथार्थ नहि समजनारा केटलाको कहे छे के—साधु थवानी शु जरुर छे? गृहस्थपणे रहीने मोक्ष क्या नथी लेवातो? जुओने भरतमहाराजाए मरुदेवी माताए तथा वल्कलचिरीए केवलज्ञान लीधुने? तो आपणने केम नहि मळे?

भरतादिकना उदाहरण लेनाराओए समजवु जोइए.

अने विचारवु योग्य छे के—**भरत महाराजाने केवलज्ञान थयु ते ससारमा रहेवानी बुद्धिए थयु के ससार छोडवानी बुद्धिए थयु? गृहवासमा रहेवु ए पाप मानता हता के पुण्य मानता हता? राज्यने सुखरूप मानता के दु खरूप मानता? विषयोने सारा मानता हता के खोटा?** त्यारे कहेवु ज पडशे के—**ससार, गृहवास, राज्य अने विषयो इत्यादिने पापरूप ने खराब मानता हता**

कोइ कहे के—शा उपरथी कहो छो, के ते पापरूपने खराब मानता हता, तो तेना उत्तरमा **श्रीमान् धनेश्वरसूरीश्वरजी महाराज**

छे आवा अतिशय ज्ञानी तीर्थंकरो ज्ञान वड पोतानु भोगावली कर्म बाकी होवानु जाणी ससारमा गृहस्थाश्रम पाळ, ते उदाहरण लई अज्ञानीओ शी रीत गृहस्थाश्रमनु पोषण करी शके? केम? नमनाथ प्रभुनु तथा श्रीमल्लिनाथजीनु उदाहरण लेवातु नथी? कोई कहे के-बे तीर्थंकरोज न परण्या पण बावीस तो परण्या छ, माटे घणा करे तेम करवु जो एमज छ तो तमाराथी जैन धमनो स्वीकार पण नहिं थाय

अहीं समजवु जरुरी छ के-ज वखते नेमनाथ भगवान् पशुओना पोकार सुणी पाछा वळ छ, त वखते तेमना मातापिता आगळ आवीन कहेवा लाग्या के-ऋषभादि तीर्थंकरोए गृहस्थाश्रम माडीन दीक्षा लीधी छे अन मोक्ष गया छ, माट तम परणो नहिं परणवाथी तमने शु तमनाथी उचु पद मळवानु छ? प्रभुए जणाव्यु के-'अनक जीवना नाशनु कारण ज ह्यां, तो विषे आटलो बधो आग्रह स्यो? ऋषभादि तीर्थंकरोने भोगावली बाकी हतु अन मारे नथी माटे दीक्षा लईश'

आ प्रमाणे कही भगवान गृहस्थाश्रम कर्या सिवाय दीक्षा लीधी छे आथी जणाववानु के-भोगावली कर्म होय तो गृहस्थाश्रम माडे, अने न होय तो नहिं एवा कल्पानीन तीर्थंकरदेवोना उदाहरणथी गृहस्थाश्रमनी सिद्धि थई शके नहि आपण तो मात्र तेमनी आज्ञा मुजब जेम बताय तम प्रयत्न करवो एज कल्याणकारी छे केमके-"आणाए धम्मो"।

धर्मोपदेशनीज उपादेयता

भगवाननी आज्ञा छे के-ससार दु खदायी छे, माट तेनो त्याग

जणावे छे के–जे वखते षट्खंड साधी भरत महाराजा पाछा आव्या त्यारे साठ हजार वर्ष सुधी करेल आयंबिलनी तपश्चर्याथी सुकाइ गयेल शरीरवाळी पोतानी ब्हेन सुदर्शना जोइने पूछ्युं के–म्हारे चारित्र लेवानी इच्छा छे ? तणीए जवाबमां हा पाडी ते वखते भरतनी सुन्दरीनी स्तुति अने पोतानी निन्दा करी रह्या छे के–

धन्याऽसि सुंदरि त्वं हि, या संसारपराङ्मुखी ।
युक्तं च तातापत्याना–मिदमेव सुखास्पदं ॥
मुष्टा विषयचौरेण, तातापत्यानि सुंदरि ? ।
वयं तु तुच्छसौख्येस्मिन्, राज्येऽपिसस्पृहयालवः ॥

हे सुंदरी ! तुं धन्य छे, के जे संसारथी अवळा मुखवाळी छे पिताना बाळकोने आज युक्त छे, केमके–व्रत लेवुं ए सुखनुं स्थान छे. हे सुंदरी ! अमे पुनः विषय चोरोथी लुटाया छीए, ने तुच्छ सुखवाळा एवा आ राज्यमां पण स्पृहावाळा छीए.

आ उपरथी भरत महाराजानी भावना केवी छे ते जणावी आपे छे के–जे संसारना पापथी छूटवानी इच्छावाळाने धन्य माने छे, अने पोते नहि छूटी शकवाथी पोताने विषयरूपी चोरोथी ठगावानुं माने छे, एटलुंज नहि परंतु संसारमां रह्या छतां पण छखंड राज्यना सुखने पण तुच्छ माने छे

वात पण साची छे के–संयम साम्राज्य आगळ चक्रवर्तीनुं राज्य तो शुं पण इंद्रादिनुं राज्य पण तुच्छ छे, कारण के–संयम साम्राज्यवाळाने जे सुख होय छे ते सुख इन्द्रने के चक्रवर्तीने–

कया सिवाय माचा मुस्नी प्राप्ति नथी, अन तेथीज धर्माचार्याए प्रथम त्यागनोज उपदेश आपवो जोइए ज्यारे त उपदेश मुजब मवथा त्याग मार्ग स्वीकारवामा शक्तिमान न होय, तो त देशथी त्याग कर, तेय न बनी शके तो मिथ्यात्वनो त्याग, न सम्यक्त्वनो स्वीकार करवा रूप उपदेश साधु आपे, पण ससार पोपरा रूप अधर्मनो उपदेश साधु नज आपी शके

जो कोइपण धमाचार्य या धर्मगुरु एवो उपदेश आपे तो ते पोतानी साधुतान बट्टो लगाडे छे, अन तेवो पापोपदेश सामळनार श्रावको पण जैन तरीक गणी शकाय नहि तेवो पापोपदेश देनार आचार्य, उपाध्याय के साधु होय तो तमन विपरित मार्गे चालवा वाळा छे एम केम न कहेवाय ?

हवे टीकाकार महाराज धर्मोपदेश देनारा धर्माचार्याने उपाध्याय, प्रवर्त्तक, स्थविर, गणावच्छेदक आदि सर्व साधुओने नमस्कार करीने श्रावक धर्मना अतिचारथी पाछा हठवाने हु इच्छु छु एम जणावे छे

श्रावक कोने कहेवाय ?

हवे श्रावक कोने कहेवाय ? तेना जवाबमां "शृणोतीति श्रावकः ।" जे साक्षात् परलोक हितकारी साधु अन श्रावकनी क्रियायुक्त धमानुष्ठान जेमा होय तेवा जिनवचनने साभळे तनज श्रावक कहेवाय ते माटे टीकाकार पोते जणावे छे के–

सपत्तदसणाइ पइदियह जइजणा सुणेईअ ।
सामायारिं परम जो खलु त सावग विंति ॥१॥

नथी होतु, तो वीजाने तो क्याथीज होय ? चक्रवर्ती या इन्ने ऋधि-सिधि मल्या छता पण असतोष होवाथी दु खी छे. ज्यारे बाह्य ऋधि-सिधि नथी छता पण सयम साम्राज्यवाळाने सतोष होवाथी सुखी छे

वळी भरत महाराजानु ध्यान खेनारा जमानावादीओए पण हजु विशेष विचारवु घट छ, के—जे वखते बाहुबलिजी सयम ग्रहण करे छे, ते वखते पण भरत महाराजानी केवी भावना छे? ते भावनानु स्वरूप जणावता श्रीमान् धनेश्वरसूरीश्वरजी महाराजा जे जणाव छे तेनो भावाथ ए छ के—'मारी मुष्टीना वळे भरतजी मरण पामशे एवी शकाथी तेज मुष्टीए लोच करी साधु थयेला बाहुबलिजीने जोइ अने पोते हार पामवारुप पोतानु कर्म जोइ जाणे पृथ्वीमां पेसी जवानी इच्छावाळा थया होय नहिं, तेम पृथ्वी सामे नीचु मुख करी आसु युक्त छे नेत्रो जेना एवा भरत महाराजाए तेमने प्रणाम कर्या अने पोतानी निंदा करवा पूर्वक बाहुबलिजीने प्रशमथी युक्त वचन कहवा लाग्या के—'हे भाई! जे आत्माओ लोभ अने मात्सर्यथी गळायला छे, तेओनी अदर हु मुख्य छु बळवानो, दयाळुओ ने धर्मीओनी अदर तमेज मुख्य छो हे भाई ! प्रथम तें मने युद्धमा जीत्यो' अने स्याद्वाद चारित्ररूपी शस्त्रो वडे रागद्वेषादि शत्रुओने जीती लीधा, माटे तमेज बळवान छो तमाराथी बीजो कोइ बळवान नथी हे भाई ! मारा अपराधनी तमे क्षमा आपो अने बोले के—पूर्वनी माफक दयाळु केम नथी, अने मारी साम जोता पण केम नथी ? तमेन तो

सम्यक्त्व, व्रत, सामायिकादि प्रतिमाने प्राप्त थयेल एवो जे जीव हमेशा साधुजन पासे साधु ने श्रावक धर्मनी परम समाचारीने सामळे तेने निश्चयदेवो श्रावक कह छे

धर्मनु श्रवण ज्ञानी साधुओ पासे करवु उचित छे

आथी स्पष्ट छे के–**धर्मगुरुओ श्रावकोने साधुधर्म अने श्रावक धर्म समळावे, अने श्रावको तेज सामळे** जो कोइ साधु तेवो धर्मोपदेश नहिं समळावता ससारपोषक उपदेश समळावे तो ते साधु तरीकनो उपदेशक होइ शके नहिं वीतरागधर्मना साचा श्रावको तेवो उपदेश कदिन सामळी शके नहि, कारण–ससारअग्निथी बचवा माटे केटलाको धर्मगुर पासे आवे छे जो धर्म गुरुओज त अग्निम रहेवानु कह तो 'घरना उठी वनमा गया न वनमा उठी आग'–ए कहेवत अनुसार स्थिति थाय

जेम रोग दूर करवा माट हमेशा दवानु सेवन करवु पडे छे तेम कर्मरोग दूर करवा माट हमेशा समाचारी रूप जिनवच श्रवण करवानी जरुर छे, कारण–तेना श्रवण सिवाय कर्मरो मटवानो नथी श्रवण पण कोनी पासे करवु ? जवाब जणाववामा आवे छे के–जइजणा। ज्ञानी साधुओ पासे सा ळवु गृहस्थो पास तेमज पोतानी मळे सामळवानु तथा भणवानु बतावता ज्ञानी साधुओ पासे साभळवानु केम कह्यु ? कारण एक मळी आवे छे के–गृहस्थ चाहे तटलुं भणेलो होय छतां पण अमु प्रकारना स्वार्थने लइ ते सत्य धमने बतावी शकतो नथी, तेमज हे ज्ञेय तथा उपादेय पदार्थना ज्ञानना अभावे पोतानी मेळे जि

पिताना पुत्र छो, के जे पिताना मार्गे चाल्या छो पुन. हु जाणतां छता रागद्वेषथी पीडायो छु, माटे हे भाई! मारा उपर तमे प्रसन्न थइ तमाम पृथ्वीनु राज्य ग्रहण करो. अने हु तमारु संयम-साम्राज्य ग्रहण करीश'

महानुभावो! विचारो के छ खंडना अधिपति, बत्रीसहजार मुकुटबध राजाओ, चोसठ हजार अंतेउरी, नवनिधान, चौद रत्नो, तेना अधिष्ठायक त्रेवीसहजार देवो तथा पोताना आत्मरक्षक बे हजार देवो सेवामा छे छतापण एक कगालनी जेम भरत महाराजा आंखमां आसु लावीने बोली रह्या छे, ए जेवी तेवी उत्तमता नथी पोतानी जातने महा लोभी तथा मत्सरी-एटले अधम जणावे छे, त्यारे बाहुबलिनीने बळवान, दयाळु, धर्मी तरीके जणावे छे आ जेवी तेवी लघुता नथी तेमना बन्नी प्रशसा करता पोताना अपराधनी क्षमा मागवी ते वळी एथीए वधारे लघुता जणावे छ जो के भरतनी चक्रवर्ती थवाना छे एटले न्यायनीतिए कइ पोतानो अपराध नथी, छता धार्मिक दृष्टिए पोतानी लघुता जणावी माफी मागे छे ते युक्तज छे

वळी एथीए आगळ वधता हदज वाळी दीधी छ के-खरेखर 'तमेज ते पिताना पुत्र छो, के जे पिताए आ चारित्र लीधु छे ते मार्गे तमे पण गया' आ उपरथी पोताने वास्तविक पुत्र तरीके गणावता नथी

ज्यारे आजे केटलाक जैनकुळमां पेदा थयेलाओ संयमनो

वचनोने यथार्थपणे समजी शकतो पण नथी, तेमज गृहस्थनो उपदेश बीना उपर छाप पाडी शक्तो नथी जेम चोर, जुगारी अने व्यभिचारी बीजाने तेना त्यागनो उपदेश नथी आपी शकता, तेम गृहस्थ बीजाने त्यागनो उपदेश आपवा जाय तो प्राय चोर, जुगारी अने व्यभिचारी जेवी दशा थाय

तमे कहेशो के–शु सम्यक्त्वादि प्रतिमानु वहन करी सामाचारी साभळनारज श्रावक बनी शके ? बीजा नहि ? अत्रे जणाववानी जरुर छे के–उपर कथन करेल स्वरूप उत्कृष्ट श्रावकनु छे, परतु आटलु करे तो पण श्रावक बनी शके छे

श्रद्धालुतां श्राति जिनेन्द्रशासने, धनानि पात्रेषु वपत्य-नारतम्। कृन्तत्यपुण्यानि–सुसाधुसेवनादतोऽपि त श्रावकमा-हुरुत्तमा ॥१॥

जे श्री जिनेश्वरदेवना शासनमा श्रद्धा राखे, सुपात्रनी अदर निरतर धन वापरे अने सुसाधुओनी सेवाथी पापने दूर करे तेने आप्तपुरुषो श्रावक कहे छे बीजाने नहि !

एक जिनभाषित धर्मज शरणभूत छे

प्रभु शासनमा श्रुत आदि चार प्रकारना जिन कह्या छे, तेमा इद्र समान अथवा रागद्वेषादि अभ्यतर शत्रुओनो नाश करी, केवळ-ज्ञानने पामेला सामान्य केवली भगवानोमा इद्रसमान, एवा जे तीर्थ-करदेवोए बतावेल धर्मना श्रद्धा राखवी एटले के–तीर्थंकरदेवे बतावेल धर्मज स्व–पर आमाने तारनार छे आ सिवाय दुनियाना कोइ पण धर्म अथवा पदार्थ अगर तो सगुस्नेही शरणभूत नथी

विरोध करवा छता पोताने जैन तरीके ओळखाववा प्रयत्न कर छे, ते खरेखर शरमनी वात छे अरे! भरतजी पुत्र तरीके तो पोताने गणावता नथी, परतु उलटा खेद करतां जणावे छे, के—'हु राज्य विगेरे दु खदायी छे, तेम जाणता छता रागद्वेषथी पीडाइ गयो छु, सुख आपनार तो चारित्रज छे छवट तओ जणाव छ के–'महरबानी करी आ पृथ्वीनु राज्य तमो भोगवो न तमार सयम–साम्राज्य मन आपो

क्या भरत महाराजानी भावना अने क्या तेमनु उदाहरण लइ सयम उठावनारा क्षुद्र आमाओनी भावना? कहो के–मेरु ने सरसव जेटलु अतर?

ज्यारे भरतजीने ससार छोडी सयम लेवानी भावना थाय छे, त्यारे तेमनु उदाहरण लइ भवाभिनदीने ससारमां रही सयम प्रत्ये अरुचिभाव राखी केवळज्ञान लेवानी भावना छे ए शु मूर्खता नथी? जेनु उदाहरण लइए तेनी भावना न तपासीए अन गृहस्थपण केवळज्ञान लीधु माट आपणे पण लइशु, आवी भावनावाळाने केवळज्ञान तो शु पण कवलज्ञान थवुय मुश्केल छे

भावचारित्रमां अनेकवार करेल द्रव्यचारित्रनो अभ्यास कारणरूप छे

तत्त्वथी जो विचारीए तो भरत महाराजाने केवळज्ञान थवामा गृहस्थपणु कारण नथी परतु भावचारित्र कारण छे,

तारक जिनशासननीज श्रद्धा कल्याणकारी छे

पूज्य उपाध्यायजी महाराजश्री पण सम्यक्त्वनी त्रण शुद्धि जणावता प्रथम शुद्धिमा जणावे छे के–**जिन अने जिनमत सिवाय बीजु बधु जुठु छे,** कारण के–ते सिवायना दरेक पदार्थो पौद्गलिक स्वार्थ साधवामा तत्पर रहनार होवाथी पारमार्थिक उपकार करी शकता नथी जिन अने जिनमत नि स्वार्थपणे दरेक जीवोने उपकार करवावाळा होवाथी सूत्रकार भगवानो जणावे छे के–

एस अट्ठे एस परमट्ठे सेसे अणट्ठे।

आ निर्ग्रंथप्रवचन एज अर्थ अने परमार्थ, बाकी बधु लाभ करवावाळु तो दूर रहु पण अनर्थने करनार छे

आ वात जे कोइ समजे ते बुद्धिवान जिनशासन सिवाय बीजाम श्रद्धा राखे ?

कोइ कहे के–श्री जिनेश्वरदेवना शासन सिवाय बीजे कल्याण न थाय ? उत्तरमा जणाववानु के–कदाच द्रव्यथी स्वीकार न कर्य होय तो पण भावथी स्वीकार कर्या सिवाय तमज श्री जिनेश्वरदेवन शासनना विरोध करनारनु कल्याण न न थाय भाव प्राप्त थवाम पण पूर्वे करेल द्रव्याभ्यास कारणरूप छे आ माटे प्रथम जणाववाम आवेल छे द्रव्य सिवाय भावथी पण वल्कलचीरिनु कल्याण थयु राजमार्ग नथी द्रव्यथी अनेक आत्माओ कल्याण करी गया, करे ने करशे, ए राजमार्ग होवाथी आपणने ते अंगीकार करवा लायक छ

जेम चादी शुद्ध होय छतां छाप खोटी होवाने लीधे ते रुपी

अन भावचारित्र पण पूर्वभवोमा अनेकप्रकार द्रव्य चारित्र पाळ्या सिवाय आवतु नथी श्रीमान् हरिभद्रसूरीश्वरजी महाराजाए पंचवस्तुकमा जणावेल छे के–ज्यारे भावचारित्र आवे त्यारे पूर्वे अनेकवार करेलो द्रव्यचारित्रनो अभ्यास कारणभूत छे, एम समजवु श्रीउपाध्यायजी महाराजे पण गुरुतत्त्व विनिश्चयमा जणाव्यु छे के–जेम कुंभारे प्रथम दड वडे चक्र चलावेलु होय छ, अन पछी चक्र दड सिवाय भ्रमण करे छे, तथी एम न कहेवाय के दड सिवाय चक्र भ्रमण करे छे केमके–दडना प्रयोग सिवाय चक्र चालेज नहि, माटे दड सिवाय जे वखते चक्र भ्रमण करतु होय त्यारे मानवु जोइए के पूर्वे दडनो प्रयोग छे द्रव्यचारित्र सिवाय भावचारित्र आवे अने केवलज्ञान थाय त्यारे समजवु के पूर्वे चारित्रनो अभ्यास छे

आ वात भरत महाराजाने अगे बराबर लागु पडे छे तेओए पूर्वभवमा चारित्र खुब पाळ्यु छे पाचसे साधुओने आहार–पाणी पूरा पाड्या छे जेथी घणा कर्म दूर थया छे अवशेष रहेला कर्म आ भवमा शुद्ध भावनाथी खपाव्या छे तेमा कइ आश्चर्य नथी, केमके–भावना भवनाशिनी छे

साधुवेषनी महत्ता.

हवे आपण द्रव्यचारित्रना कार्य शु बनवु छे, तो पछी आपणने भावचारित्र क्याथी आवशे ? वळी भरत महाराजाने केवलज्ञान थयु, छता इन्द्र महाराजे आपेल साधुनो वेष शु काम लीधो ? जो द्रव्यचारित्रनी जरुर न होत तो शु केवलज्ञान जतु रहेत के

व्यवहारमा उपादेय नथी, तेम भावरूपी चांदी शुद्ध होय छतां द्रव्यरूप छाप खोटी होय अगर न होय तो ते उपादेय नथी, अर्थात् श्री जिनेश्वरदेवना शासनमां रहेलाओथी एम न कहेवाय के-चारित्रनुं शुं काम छे ? सामायिक करवाथी शुं ? या देहरासर-उपाश्रये जवाथी शुं ? तीर्थमां भटकवाथी कंई कल्याण नथी. संघ काढवा, स्वामिवात्सल्य इत्यादि द्रव्य-क्रियानुष्ठानोनुं शुं काम छे ? आपणुं मन शुद्ध होय तो बधुंय छे. आवा प्रकारनुं बोलनार श्रावक तो शुं पण समकिती के मार्गानुसारी पण न कही शकाय

केमके-श्री जिनेश्वरदेवोए जे दर्शन शास्त्रिनां तथा तेनी निर्मळतानां साधनो बताव्या छे, तेने उत्थापे तो तेने श्रद्धा छे एम केवी रीते कही शकाय ?

खरेखर श्री जिनेश्वरदेव प्रणीत एक पण धर्मक्रियाने जे कोइ उत्थापे ते महा पापी छे, केमके-एकपण वचनने उत्थापनार जमाली प्रभुखने निन्हव तरीके जाहेर करेला छे माटे आत्मार्थीओए श्री जिनेश्वरदेवना शासनमां श्रद्धायुक्त थवुं जोइए

श्रावकोए कृपणता तजवीज जोइए, तोज धर्म दीपे

जेनामा श्रद्धा होवा छतां पण कृपणता रहेली होय, तो ते वाओ शासनने शोभावी शकता नथी. तेने माटे जणाव्युं छे के-"धनानि पात्रेषु वपत्यनारतम्" । पुण्यथी धननी प्राप्ति थइ होय तो श्रद्धा राखवा पूर्वक सुपात्रनी अंदर निरंतर वापरवुं जोइए, पात्रनी अंदर

लागन ' त्यार रहनुज पटन के–केवलज्ञानीओ पण घातिकर्मनो क्षय थया छता पोतानु आयुष्य वधारे देखे तो जरुर वेष स्वीकारे छे अने त्यार पछी देवो वदन करे

तेम कहेलो के–मरुदेवी माताए पूर्व क्या चारित्र पाळ्यु छे ' जणाववानु के–ते दृष्टातने पचवस्तुमा आश्चर्य तरीके जणावेल छे, माटे उदाहरण लइ शकाय नहि

गृहिलिंगे अने अन्यलिंगे कोइने केवलज्ञान थाय तो ते छीडीनो माग छे, माटे कल्याणार्थीथी आवा उदाहरणो लेवाय नहि आवा उदाहरणो जे ले छे ते कल्याणनो अर्थी छे एम न कहेवाय, एटलु ज नहि पण श्रीउपाध्यायजी महाराज तो एने मिथ्यादृष्टि तरीके–ओळखावे छे

" चरितभणी बहुलोकमाजी, भरतादिकनां जेह,
लोपे शुभ व्यवहारनेजी, बोधि हणे निज तेह "

जे आमाओ भरतादिकना उदाहरण लइ शुभ चारित्र रूप व्यवहारनो लोप करे छे, ते आमाओ पोताना बोधिनो नाश करे छे अने तेथी मिथ्यादृष्टि बने छे वळी अनता तीर्थंकरो अने गणधर महाराजाओ चारित्र सिवाय सिद्ध थया नथी, थता नथी ने थशे पण नहि तेमज चोथु मन पर्यवज्ञान ते साधु थया सिवाय थाय ज नहि

आ बधी वातनो विचार करीए तो साधु थइ मोक्षे जवु ते राजमार्ग छे, माटे कल्याणना अर्थीए सयम स्वीकारवो एज श्रेयस्कर छे

वपराएलु धन सार्थकताने पामे छे **"अर्थस्य सार किल पात्रदान"।** पात्रमा दान देवु ते अर्थ मन्यानो सार छे जो धन मळ्या छता पात्रमा दइ शके नहि, **तो ते धन मम्मण शेठनी माफक दुर्गतिमा लइ जवावाळु बने छे** जो के अते पण धनने छोडवु पडशे। अने तेथी दुर्गतिमा जवु पडशे? माटे आपणा हाथेज सुपात्रमा धन खरची सद गतिना भोक्ता बनवु शु खोटु? ज्यारे धन ए नाश पामवाना स्वभाव वाळु छे एम जाणी मोह दूर कराय त्यारेज तेना पापनो नाश थाय

अने केटलाक एम कहे छे के -" धन ए धर्मनु कारण छे, केमके–धन होय तो दान देवाय, देहरासर, उपाश्रय बधावाय, सघ कढाय, स्वामीवात्सल्य करावाय विगेरे धर्म थाय धन न होय तो शु थाय? ' माटे धनमाटे उद्योग करवो ए कइ पाप नथी, अने पाप थशे तो धर्ममा खरचीने पाप धोइ नाखीशु

आ प्रमाणे कहेनाराओनु कथन जो स्वीकारीये तो कोइ ठेकाणे अधर्म रहेज नहि, केमके–अग्नि होय तो अन्नादि पकावाय ने दान देवाय, एटले के–अग्निना आरभमा पाप नथी आ रीतिए कोइ ठेकाणे पाप न रह्यु

ज्यारे शास्त्रकारो तो हिंसा, जुठ, चोरी, मैथुन, परिग्रह आदि अढारेय पापस्थानक तरीके जणावे छे, अने ते जाहेर छे आथी धन मेळववा उद्योग करवो ए पाप नथी, एम पाप ने पुण्यना मर्म समजनारा साचा जैनो स्वीकार करी शके ज नहि

कारण के–**धर्म माटे धन उपार्जन करवु ए लोहीवाळा या कादववाळा कपडा कर्या पछी धोवा जेवु छे, माटे ते**

न करवु जोइए. जेमके कपडा मेलां थया होय अने साफ करवां पडे ते वात जुदी, परतु धोवा माटे कादववाळां कपडा करवां ते तो खरेखर मूर्खाइज छे. पुण्यथी धनप्राप्ति थइ होय तो कर्मक्षय निमित्ते सुपात्रमा खर्चवी जोइए, पण पाप करी तेने माटे धन मेळववा विचार सरखोय करवो ए मूर्खाइ सिवाय बीजु शु कहेवाय ?

वळी सुपात्रमा दान देवानु जणाव्युं तो सुपात्र तरीके सात क्षेत्रो जैनागममा जाहर छे जिनचैत्य बधाववु, जिनप्रतिमा भरावरी, जिनागम लखवा—लखाववा, सुसाधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका—आम सात क्षेत्रोनी कृपणना तजवा पूर्वक वस्त्र—पात्रादिके यथायोग्य भक्ति करवी

अनुकपादिमां ते ते बुद्धिए दान देवु उचित छे.

आथी कोइने शका उत्पन्न थाय के—ज्यारे सात क्षेत्रो सुपात्र कहेवाय अने तेमाज दान देवानु कहवामा आवे छे तो दुःखी, दीन, अनाथ विगेरेने दाननो निषध थयो

समाधानमा आमपुरुषोए दया, दान, औचित्यदान विगेरेनो निषेध नहिं करता सुपात्रने सुपात्रनी बुद्धिए औचित्यअनुकपादि लायकने तेमनी बुद्धिए दान आपे, एम जणावेल छे

श्रद्धायुक्त व्यक्तिए सुपात्रमा लक्ष्मीनो व्यय करवा छतां पण सुसाधुनी सेवामां तत्पर रहेवु जोइए

केमके—श्रद्धा प्राप्त करावनार, तेने टकावनार अने पात्रापात्रना

साम्राज्यनो स्वीकार करवो एज कल्याणकारी छे,' पुत्रोए पण "भगवदाज्ञैव श्रेयस्करी" । 'भगवान्‌नी आज्ञा एज कल्याणकारी छे - आ प्रमाणे बोलीने रह्या एम नहीं, परंतु तेज वखते कोईने पण पूछ्या सिवाय चारित्रनो स्वीकार कर्या सत्य वस्तु समजाया पछी तेनो स्वीकार करवो तेज समजायानु फळ छे.

उपरोक्त दृष्टान्तनु रहस्य जीवनमां उतारे तो संसारमां रखडवु पडे नही

उपर जणावेल दृष्टांतनुं रहस्य आत्मिक स्वराज्य मेळववानी इच्छावाळा दरेक आत्माओए पोताना जीवनमा विधिमुजब उतारवानी जरुर छे के–हे चेतन ! तु ससारमा विनश्वर राज्यादिक सुखो अनंतीवार पाम्यो छे, न अते नर्कना दु खो पण भोगवी आव्यो छे, माटे तु संसारना विनश्वर स्वराज्यना सुख मेळववानी इच्छा दूर करी, आत्मिक स्वराज्य मोक्ष मेळववा तैयार थई, दुनियादारीनी बाह्य उपाधीओनो त्याग करी, संयम-साम्राज्यनो स्वीकार कर के–जेथी संसारमां रखडवु पडे नहि

राज्यादिकना ममत्वने आधिन बनेलाओ दुर्गतिमां जाय.

अत्रे कोइ जणावे के–शु राज्यने अते नर्कज मळे ? जवाबमां जणाववानु के राज्य पाम्या छता राजा जो धर्मी न होय अने राज्यादिकमा अत्यंत ममत्व राखे तो दुर्गतिनो भागीदार छे जुओ महावीर भगवाननो जीव पूर्वे त्रिपृष्ठ वासुदेवना भवमा त्रणखंडराज्यनो भोक्ता छता नर्कमा गयो, तेमज ब्रह्मदत्त, सुभुमचक्रवर्ति छ खंड

सुसाधुओनी सेवा करवाथी पोताना पापकर्मनो क्षय थाय छे ते माटे जणाव्यु छे के—

कृन्तन्त्यपुण्यानि सुसाधुसेवनात् ।

सुसाधुनी सेवाथी पापनो क्षय थाय

आथी पापनो नाश करवावाळा आत्माओए समजवानु के—**ज्यां सुधी सुसाधुओनी सेवा स्वीकाराइ नथी त्यां सुधी पापनो क्षय थइ शकतो नथी,** केमके—जेओए पापनो नाश कर्यो छे, तेवाओ आ भवमा या पूर्वभवमा पण सुसाधुनी सेवानो स्वीकार कर्या सिवाय पोताना पापनो क्षय करी शक्या नथी अरे, चौद विद्याना जाणकार अने अभिमानथी पोताने सर्वज्ञ कहेवडावनार एवा गौतम स्वामीनीए पण ज्यारे महावीरदेवनी सेवा स्वीकारी, त्यारे ए पापनो क्षय करी शक्या छे दुनियामा पण एक साधारण नियम छे के—प्रथम शेठनी सेवा बजावाय त्यारे अनुक्रमे शेठ थवाय छे तो पछी पापनो क्षय करी सर्वविरतिपणु मेळववानी इच्छावाळाओए सुसाधुनी सेवा स्वीकारवी जोइए तेमा नवाइ शु ?

सुसाधु अने कुसाधुनी परीक्षा करी सुसाधुनी सेवामां रक्त बनवु जोईए.

सेवा बजावना प्रथम ध्यान राखवु के—जेनी सेवा तैयार थाओ ते सुसाधु छे के कुसाधु ? आवी सिवाय सुसाधुने बदले कुसाधुनी सेवा स्वीकाराय बदले बधाइ जाय छे अरे व

टकोरा मारी परीक्षा कर्या पछी

राज्य ना भोक्ता छता नियाणाने योगे राज्यनो मोह न छोडयो तेथी सातमी नरके गया

भगवते पण कह्युं छे के–चक्रवर्तिओ राज्य छोडी संयमनो स्वीकार कर्या विना मरे तो सातमी नरके जाय. कहेवानी मतलब के–ससारना **राज्यादि तमाम पदार्थो पर छे,** माटे **तेने छोडी सम्यग्ज्ञान–दर्शनादिरूप** पोताना **पदार्थोमां रक्त** **थवु** एज कल्याणकारी छे

ज्ञान दर्शनादि ए आत्माना गुणो छे, ते सिवाय सर्व पर छे अने तेथीज तेनो त्याग कराय छे

सूत्रकार महर्षिओ **"एगो मे सासओ अप्पा"।** इत्यादि गाथा वडे जणावे छे के–**ज्ञानदर्शन संयुक्त एक मारो आत्मा शाश्वत छे** बाकी माता, पिता, भाई, ब्हेन, राज्य, ऋद्धि आदि तमाम पदार्थो पर अने संयोग लक्षणवाळा छे **मातपितादिकना संयोगथी जीवे अनेक दु खनी परपराने प्राप्त करी छे,** माटे तेवा तमाम सयोगोनो हु त्रिविधे त्रिविधे त्याग करु छु

इरादापूर्वक अतिचाररूप परघरमां जवु जोइए नहीं.

आ वात जेना समजवामा आवे ते धर्मरूप स्वस्थान छोडी अतिचाररूप परस्थानमा जाय खरो ? अने जो अतिचारमा न जाय तो अधर्म रूप अनाचारमा तो जायज शानो ? प्रमादवशथी परस्थानमा जवाय तो ते वात जुदी, पण इरादा पूर्वक तो नज जवुं जोइए

आवी जाय ज्यारे आवी सामान्य वस्तु माटे आवी परीक्षा थाय छे तो पछी पापनो नाश करवानी इच्छावाळाए सुसाधु के कुसाधुनी परीक्षा केम न करवी जोइए ? साधुना वेषमा रहेला बधाय सुसाधु होता नथी, जेथी परीक्षा करवी घट छे

जेओ पचमहाव्रतनु पालन करता होय अने वीतराग-भाषित शुद्ध मोक्षमार्गने बतावता होय तेओनेज सुसाधु कही शकाय छे.

मननी चचलताना कारणे धर्मने नहिं माननाराओ विचारवानु छे ?

अत्रे कोइ शका करे के–वचन अने कायाथी तो व्रत पळे, पण मनथी शी रीत पळे ? मन तो माकडानी माफक घणु चचळ छे माटे हिंसादिना विचार थाय अने तेथी व्रतनो भग थाय आ प्रमाणे जे कहेवु ते व्याजवी नथी केमके–एटला मात्रथी जो व्रतनो भग थतो होय तो कोइ साधुव्रत तो शु परतु सामान्य व्रत–पच्चक्खाण पण लइ शके नहि

जो एम मानीए तो तीर्थनो नाश थयो एम मानवु पडशे–आ वात आपणने इष्टज नथी केमके–भगवते पाचमा आराना छेडा सुधी तीर्थ रहेशे एम भाखेलु छे, माटे मनना सकल्प मात्रथी महाव्रतनो भग थाय छे एम मनाय नहि हा, एटलु मानवु पडे, के मन दुष्प्रणिधान अतिचार लागे ? एटले के–मनना दुष्टपणाथी थयेल अल्प दोष लागे छता पश्चात्तापथी ते नाश थाय छे, अने व्रत कायम रहे छे

दुनियामा पण पोतानु घर छोडी दुष्ट इरादाथी बीजाना घेर जाय तो मार खाधा सिवाय जेम न रहे, तेवीज रीते अत्रे जाणवु सम्यग्ज्ञानादि धर्म ए पोतानुं घर छे अने अतिचाररूप पर घर छे, माटे इरादापूर्वक तो त्या जवु न जोइये

प्रमाद अने अतिचारथी पाछा हठवु तेनु नाम प्रतिक्रमण

जाति कुलादिनो मद करवो, विषयोमा तल्लिन रहेवु, क्रोधादि कषायो करवा, निद्रा, रात्र्यादि विकथा करवी, विगेरे प्रमाद कहेवाय छे ते प्रमादधीन जीव रखडे छे, माट प्रमादनो त्याग करी अतिचार न लागे तेम वर्तवुं कदाच अतिचार लागे तो तेनाथी पाछा फरी धर्ममा स्थिर थवु तेनु नाम प्रतिक्रमण छे

ज्ञेय हेय अने उपादेयमां ते ते प्रकारनी जे बुद्धि, श्रद्धा, तेनु नाम सम्यक्त्व

कोइ कह के—अतिचार तो भगवाने कह्या छे, माटे ते सेरवामां शु वांधो ? आम कहेनार खरेखर मूर्खज छे, कारण के—भगवाने तो हिंसादि अढारे पापस्थानक पण कह्या छे, तो ते शु सेववां जोइए ? नहींज जे जे भगवते कह्यु छे, ते ते बधु उपादेय तरीके बताव्यु छे एम नहि. परतु ज्ञेय, हय अने उपादेय, एम त्रण विभागमां बताव्यु छे ते त्रण विभागमां जे जाणवा लायक होय ते जाणवु, जे त्याग करवा लायक होय तेने जाणीने तेनो त्याग करवानी बुद्धि राखवी, अने जे योग्य होय ते आदरवानी बुद्धि राखवी.

मोहाधीन मातपितादि रोककळ करे तेथी तेनु पाप सयम स्वीकारनारने लागतु नथी परतु सयम लेनार अने देनारनु ध्येय शुद्ध होवु जोइए

जो कोइ एम कहे के–दीक्षा लेनारनी पाछळ एना मात–पितादि रडता–कळकळता होय छता तेवाने दीक्षा आपवामा आवे छे, तो दीक्षा आपनार न लेनारनु महाव्रत केम भग न थाय ? आ कहवु बरावर नथी, केमके–सर्वे जीवो कर्माधीन होइ मोहथी रो–ककळ करे छे तेमा दीक्षा आपनार तथा लेनारनी बुद्धि रो–कळ कराववानी होतीज नथी किन्तु स्व–पर परोपकारनी बुद्धि होय छे

जो एम न लइए तो शास्त्रोमा एवा अनेक उदाहरणो मळी आवे छे, के स्वजन वर्गे रोना–ककळना छता दीक्षा लीधी छे, अने तेओने अपाइ छे जेम चडरुद्राचार्ये क्रोधथी मश्करी करता तरतना परणेला व्यवहारिक पुत्रने दीक्षा आपी छे अने तेज रात्रीए ते नविन शिष्ये केवळज्ञान प्राप्त कर्यु छे

रामचद्रजीए लोकोना मुखथी खोटो अपवाद साभळवाथी सीताजीनो वनमा त्याग कर्यो सीताजीए दिव्य शुद्धि करी दियलना प्रभावे अग्निमा पण तेओ न बळ्या, रामचद्रजीए पोताना अपराधोनी माफी मागी, घेर आववा माट कह्यु, छता घेर न जता त्या ने त्याज पोते लोच करीने केशो रामचद्रजीने आप्या, आ जोइने रामचद्रजीने मूर्छा आवी ने भोय पर पडी गया, रामचद्रजी सावध थाय ते पहेला तो सीताजी जयभूषण नामना केवली भगवान् पासे गयेल छे, ज्या

उपर मुजब बुद्धि राखवी तेनु नाम सम्यक्त्व. अने तेनाथी विपरित बुद्धि राखवी तेने मिथ्यात्व कहेवाय छे

आ वात नहि समजेला केटलाक जमानावादीओ शास्त्रनो अर्थ विपरीत करी, केटलाक भोळा जीवोने फसावी रह्या छे, तेमज सज्जनो उपर खोटा आक्षेपो करी रह्या छे ते, नर्यु अज्ञान छे

जेम अढार पापस्थानको हेय छे, तेम अतिचारो पण हेय [तजवा योग्य] छे

जेम अढारे पापस्थानक हेय तरीके वर्णव्यां छे, तेम अतिचारो पण हेय तरीके वर्णव्या छे, माटे अतिचार पण छोडवाना छे, पण आदरवाना नथी

"अइआरा जाणिअव्वा न समायरिअव्वा" इति वचनात् ।

प्रतिक्रमण भावपूर्वक होवु जोइए भाव सिवाय सपूर्ण फलनी प्राप्ति थती नथी, माटे सम्यग् क्रिया करवा पूर्वक भाव प्राप्तिने माटे उद्यमवत थवु जोइए

हवे सामान्यथी सर्व व्रतना अतिचारोनु ने ज्ञानादि अतिचारोनु प्रतिक्रमण जणावे छे

जो मे वयाइयारो, नाणे तह दसणे चरित्ते अ ।
सुहुमो व बायरो वा, त निंदे त च गरिहामि ॥२॥

अतिचारोनु वर्णन

मने अणुव्रतादि मालिन्यरूप पचोतेर अतिचार तथा ज्ञानना आठ, दर्शनना तेर, चारित्रना आठ, तपना बार,

वळी भगवान रामचद्रजीने पूछ्या सिवाय विधिपूर्वक सीताजीने दीक्षा आपी अने सुप्रभा नामनी साध्वीने सोंप्या

बीजी बाजु रामचद्रजी रो–ककळ करी रह्या छे, त्यारे लक्ष्मणजी तेमने समजावे छे वळी सनतकुमार, नमिराजर्षि जेवा इत्यादि घणाए पोताना परिवारने रोता–ककळता मूकी दीक्षा लीधी छे ऋषभदेव, पार्श्वनाथ, नेमनाथ, वर्धमान स्वामी विगेरेए पण स्वजन वर्गने रोता मूकीने दीक्षा लीधी छे आम अनेक दृष्टातो मोजुद छे स्वजनादि मोहादिने लीधे रडे–ककळे तेथी महाव्रत भग थाय छे, एम मनाय नहि, आटलु ध्यानमा राखवानु के–लेनार ने देनार बन्नेनी स्व–पर उपकारनी बुद्धि होवी जोइए

पडित पुरुषो ग्लानऔषधादि दृष्टाते फळप्रधान जोनारा होय छे

चिरतनाचार्य कृत पचसूत्रमा तथा धर्मबिंदुमा श्रीमान् हरिभद्र-सूरीश्वरजीए जणावेल छे के–**"ग्लानौषधादि ज्ञातात्त्याग इति"** ।

व्याधिथी पीडितमाता–पितादि गुरुजननो औषधादिकना दृष्टांतथी त्याग करवो दीक्षा लेनारने तेना माता पितादि स्वजन वर्ग कोइपण रीते रजा न आपता होय तो पण तेओनो त्याग करी दीक्षा लेवी एज सारी छे जेम कोइपण रोगथी पीडाता एवा मातपितादिना औषध माटे अने पोताना निर्वाहने माटे तेमनो त्याग करवो ए पुत्रने जेम योग्य छे तेम दीक्षा लेनारने पण योग्य छे, केमके–दीक्षा लेनारनी गुरुजन प्रत्ये निर्दयता नथी होती,

वीर्याचारना त्रण अने संलेखणाना पांच–एम कुल १२४ अतिचार माहे जे कोइ अतिचार सूक्ष्म अथवा बादर लाग्यो होय, तेने आमानी साक्षीए निंदु छु अने गुरु साक्षीए गर्हुं छु

"जो मे" इत्यादि जे मने "व्रतातिचार" अणुव्रतादिमा माळिय रूप पचोतेर अतिचार लाग्या होय, तेनी अंदर अगिआर व्रतना पांच पाच अतिचार, पुन' सातमा व्रतना वीस अतिचार एम पचोतेर अतिचार जाणवा अतिक्रम अने व्यतिक्रमनो अतिचारमा अतर्भाव थवाथी जुदा वर्णन करवामा नथी आव्या

"अतिक्रमादि चातिचारे एवान्तर्भवति" ।

अतिक्रमादिनो अतिचारमा ज अंतर्भाव थाय छे व्रत भगन माटे कोइ निमंत्रणा करे अने तेनो निषेध करवामा जो न आवे तो अतिक्रम लागे, गमनादिव्यापारमा व्यतिक्रम लागे, क्रोधथी वध–बधनादिक करवाथी अतिचार लागे अने जीवहिंसादिमा अनाचार लागे

पापोपदेश देनार मुनि महाव्रतोथी भ्रष्ट थाय छे. तेथी तेवाओथी दूर रहेवामांज लाभ छे

आ उपरथी समजवानु छे के–कोइ अज्ञानी आत्मा पंच-महाव्रतधारी महात्माओ पासे आवी, जीवहिंसा जेमां रहेली छे, एवो पापोपदेश करवा विनति करतो होय, छता तेनो निषेध न करतां तेने आधिन थइ, दुनियामा मनावा–पूजावा [illegible] कर्मवश थइ कोइ महाव्रतधारी जीवहिंसादि पापोपदेश आपवा तैयार थाय, तो ते महाव्रतधारी पोताना [illegible]

किंतु–भावदयाज रहेली होय छे, अने दीक्षा आपनारने पण भावदया होवाथी महाव्रतोनो भंग थतो नथीज टुकमां शास्त्रोक्त मर्यादानो भंग थवो न जोइए

तेने माटे एक दृष्टांत छे के–' कोइ कुलिन पुत्र पोताना मात पितादि साथे तेमनी सेवामां रहीने चालतो हतो एक वखते कोइ रीते कोइ मोटा जंगलमां ते आवी पहोंच्यो तेवामां नक्की नाशने करनारो अने वैद्य तथा औषधादिक सिवाय पुरुषमात्रथी साध्य न थाय तेवो, अने तेवी जातना औषधादिकना प्रयोगने योग्य एवो, कोइ मोटो रोग मातपितानां शरीरमां उत्पन्न थाय छे ते वखते कुलीन पुत्र मातपितानां प्रतिबंधथी आ प्रमाणे विचारे छे के–औषधादिक सिवाय आ मातपितादि जरूर रोग रहित नहीं थाय जो कदापि औषध मले तो रोग मटे ? वलि आ मातपिता व्यवहारथी, मारा वियोगथी के रोगथी तत्काल मरण नहि पामे, एम विचार करे छे

आ प्रमाणे विचारी मातपिताए ना पाडवा छतां दवा माटे अने पोतानी आजीविका माटे ते त्याग करे छे ए त्याग करवा छतां ते सज्जन कहेवाय छे आ प्रकारनो जे त्याग ते तत्त्वथी अत्यागज छे आवा वखते जो त्याग न करे तो पण वास्तविक त्याग छे. आ ठेकाणे फळ प्रधान छे पंडित पुरुषो फळने प्रधान जोनारा होय छे

पंच महाव्रत धारक अने शुद्ध प्ररूपक होय तेने सुसाधु कहेवाय

हवे आपणे मूळ वस्तु उपर आवीए, के–पंचमहाव्रत पाळवा छतां पण शुद्ध वीतरागप्रणीत धर्मना देशक होवा जोइए,

थाय छे, तेमां शकाज शी ? एवा भ्रष्टाचारीओथी आमार्थिओए अलग रहेवु तेज कल्याणकर मार्ग छे

केमके–पापरूप मार्गना देशक मुनिओने शास्त्रकारोए मार्गभ्रष्ट जणावेल छे. अने तेवाओनां मुख जोवानो पण निषेध करे छे

"उम्मग्गदेसणाए, चरण नासति जिणवरिंदाण ॥
वावन्नदसणा खलु, न हु लब्भा तारिस दट्ठु" ॥१॥

सम्यग्दर्शनादि मोक्षमार्गथी विपरीत ससारपोषक उन्मार्गनी देशना देवा वडे श्रीजिनेश्वरदेवे कहेल चारित्रनो नाश थाय छे, अने तेथी तेवी देशना देनारा दर्शनने निश्चयथी वमी जाय छे, अने तेथी ज तेवा सम्यक्त्वथी भ्रष्ट थएला साधुओनु मुख जोवु पण लाभदायक नथी. किन्तु नुकशानकारक छे

सडसठ बोल्नी सज्झायमा श्रीमान् उपाध्यायजी महाराजश्री जणावे छे के–सम्यक्त्वथी भ्रष्ट थएलाओने, वीतरागना एक पण वचनने ओळवनार निन्हवोने, शास्त्र वचन निरपेक्ष स्वच्छदचारी साधुओने, पासत्थाओने, कुशीलीयाओने, केवल वेषधारीओने अने वीतरागदर्शनने नहि माननाराओने दूरथी छांडो ! केमके-उपर मुजबना अज्ञानीओना सगथी पोताना सम्यग्दर्शनादि गुणोनो नाश थाय छ जेम गगा नदिनु, पाणी मीठु छे, छता समुद्रना पाणी साथे मळे के तरत ग्वारु थाय, तेम भ्रष्टाचारीओनी सोबतथी सम्यग्दर्शनादि गुणो उत्तम छे, छता मलिन या नाश थाय छे तेथी तेवाओने

कारण--मतिकल्पनाए धर्म कहेवाय नहि केमके--आपणे अल्पज्ञ होवाथी विपरीत धर्म बतावीए तो स्व--पर उभयना नाशक बनीये. **अर्थात् पचमहाव्रतधारक अने शुद्धप्ररुपक होय ते सुसाधु कहवाय.**

श्रीउपाध्यायजी महाराजश्री पण जणावे छे के--

सवेग रग तरग झीले, मार्ग शुद्ध कहे बुधा,
तेहनी सेवा कीजिए, जेम पीजीए समता सुधा

सवेग रूपी तरगोमा रहेला अने वीतरागना हेयोपादेयरूप शुद्ध मार्गने देखाडनार एवा, ससार रूप पापना त्यागी एवा महात्माओनी सेवा करवी, के जेथी समता रूप अमृतने पीवावाळा थवाय

त्रण कर्तव्योने आचरनार श्रावक बनी शके छे

आ उपरथी जणाशे के--सर्वथा ससारना त्यागीओज साचा महात्माओ छे, अने तमनी सेवाथी आत्मकल्याण थइ शके छे माटे आत्मकल्याणना अर्थी छता सर्वथा ससार छोडवाने अशक्त एवा आत्माओए (१) **जैनशासनमा साची श्रद्धा राखी (२) धनने सप्त क्षेत्र रूप पात्रमा वापरवु, तेमज (३) सुसाधुनी सेवा करवी.** के जथी श्रावक थइ शकाय छे

उपर जे बात जणावी तेथी पण श्रावक थइ शकाय छे अने पोताना श्रावक शब्दने सार्थक करी शके छे आ त्रणथी जे विपरीत होय ते नामनाज श्रावक कहवाय तो पछी ए त्रणथी विपरीत उपदेशक महापापी केम न कहवाय ?

उपर जे कही गया ते श्रावकधर्मना अतिचार एटल मलिनता

तो नवगनना नमस्कारज श्रेष्ठ छे एटले के तेमनाथी दूर रहेवामाज लाभ छे

अवीचारोने निंदु छु, अने गर्हुं छु.

तथा "नाणे" "ज्ञानाचारे" काल, विनय, बहुमान, उपधान, अनिन्हव, व्यनन, अर्थ तदुभय—आ आठ प्रकारना ज्ञानाचारमा वितथ आचरवा वडे जे अतिचार लाग्यो होय, तथा "दसणे" सम्यक्त्वमा शकादि पाचेना सेववा वडे, अथवा "दसणे" निःशकित निष्काक्षित, अजुगुप्सा, अमूढदृष्टि, उपबृहणा, स्थिरिकरण, वात्सल्य, प्रभावना—आ आठ प्रकारना दर्शनाचारमा वितथ आचरण कर्युं होय, तथा "चरित्ते" पाचसमिति अने त्रण गुप्ति—आ आठ चारित्राचारमा अनुपयोगरूप अतिचार लाग्यो होय, "अ" चकारथी सलेखनाना इहलोक आशसादि पाच अतिचार लाग्या होय अने छ बाह्य छ अभ्यतर—एम बार प्रकारना तपाचारमा यथाशक्ति आराधन नहि करवा रूप जे अतिचार लाग्या होय, तथा मन, वचन, अने काया वडे त्रिविध विर्याचारमा पोतानी शक्ति गोपववा रूप जे अतिचार लाग्या होय, एवा एकमो चोवीस अतिचारमा "सुहुमो व" अनाभोगथी जाणी शकाय नहि एवो, तथा "बायरो वा" व्यक्त जाणी शकाय एवो जे अतिचार लाग्यो होय, तेने आत्मसाक्षीए हु निंदु छु "हादुद्दुकयमित्यादि" पश्चात्तापेन। खेदनी वात छे के-'में खराब कर्युं' आवी रीते पश्चात्तापथी लागेल अतिचारने निंदु अने गुरु साक्षीए गर्हुं छु

रूप ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्रचार, तपाचार ने वीर्याचार—आ पाचेना मळी १२४ जे अतिचार तेथी निवर्त्तयाने हु इच्छु छु

प्रतिक्रमण शब्दार्थ अने तेनु स्वरूप

"प्रतिक्रमण शब्दोऽत्रनिवृत्त्यर्थ"।

प्रतिक्रमण शब्दनो अर्थ अहीं पाछा फरवु एवा अर्थमा छे

यत —स्वस्थानाद्यत् परस्थान, प्रमादस्य वशाद्गत'।
तत्रैव क्रमण भूय., प्रतिक्रमणमुच्यते ॥ १ ॥

प्रमादवशथी जे स्वस्थानमाथी परस्थानमा जवु, अने पुन' स्वस्थानमा पाछा आववु तेने प्रतिक्रमण कहेवाय छे.

स्वस्थान, परस्थान अने प्रमाद—आ त्रण वस्तु बराबर समजाय तो प्रतिक्रमण शब्दनो अर्थ समजाय, अन्यथा समजाय नहि आ वस्तुने समजाववा माटे टीकाकार पोतेज जणावे छे के—

"तत्र जीवस्य स्वस्थान धर्म , परस्थानमतिचारा "

जीवनु स्वस्थान धर्म छे, अने परस्थान अतिचारो छे

आ उपरथी वाचको विचारशे के—धर्म सिवाय जीवने कोइ पण पदार्थ स्वस्थान रूप नथी, केमके—धर्मनी अदर प्रमादना योगे लागेला अतिचार (मलीनता) ज्यारे स्वस्थान नथी, तो पछी ससारना पौद्गलिक पदार्थो स्वस्थान बनेज क्याथी ? कारण—जेना योगे अनाचार पण थइ जाय

ससारना तमाम पदार्थो पर छता स्व मानीए छीए ते भ्रम छे अने तेथी दु ख पामीए छीए

कोइ शका करे के—धर्मज पोतानो केम अने दुनियाना पदार्थो

अतीचारने सारा माननारने साचो जैन नज कहेवाय.

आथी वाचको विचारशे के–जे साचो जैन होय ते तो व्रतादिमां अजाणता पण अतिचार लाग्यो होय तो पण 'माराथी आ खोटु थयु' एम मानवावाळो होय, तो पछी जाणी जोइने अतिचार सेवायो होय अगर अनाचार सेवायो होय तेने खराब माने एमा नवाइजें शी ? जे अतिचारने सारा माने तेने साचो जैन छे, एम तो नज कहेवाय

जो व्रतधारी पण पोताने लागेला अतिचारो खराब मानतो होय तोज तेनु जैनत्व टकी शके, तो पछी जेने कोइ प्रकारनु व्रत नथी, व्रत प्रत्ये अभिरुची पण नथी, तेमज जेओ पृथ्वीकायादि षट्कायनी हिंसामा रसभेर रहेवा छतां पण खराब छे, एम नहि मानता सारि मानवावाळा अने बीजा पासे मनाववावाळा छे वळी जेओ ससारना राज्यादिक पौद्गलिक सुखाभासोने हितकारी माने छे, अने संसार त्यागना उपदेशक एवा तीर्थंकरदेवोने बळवाखोर मनाववा प्रयत्न करता होय, तेमज जेओ केवळ पापनोज उपदेश आपनारा होय, व्रत-धारीओनी निंदा करता होय, तो तेवाओनी अदर जैनवनी कल्पना करवी ए शु आकाश–कुसुमवत् नथी ? वळी तेवाओने तीर्थंकरदेवोनी साथे सरखामणी करवी ए शु मूर्खाइ नथी ?

याद राखवानु छे के–त्रण जगतमां एवी कोइ व्यक्ति नथी, के जेनी तीर्थंकरदेवो साथे सरखामणी थइ शके जेओ तीर्थंकरोना स्वरूपथी अज्ञात होय, तेवा अज्ञान प्राणीओज तीर्थंकरदेवोनी साथे अन्य प्राणीनी सरखामणी करे. तीर्थंकर-देव लोकोत्तर महापुरुष छे, अतिशयवत छे, माटे तेमनी साथे दुनियानी

पोताना केम नहि ? अत्रे जणाववानु के–अनादि, अनत एवा आ ससारमा अनादि कालथी भ्रमण करतां व्यवहारराशिमा आवेला जीवने ससारना तमाम पदार्थो प्राये अनतीवार मळ्या छे, छता तेनु कल्याण थयु नहि जो ते पदार्थो पोतानाज होय तो जीवन दु ख शा माटे होय ? कहेवुन पडशे के–ए पदार्थो पर छ, पोताना नथी ते पोताना नहि होवा छता भ्रमथी पोताना मानीए छीए तेथी दु ख थाय छे जेम गाडीमा वेठलो माणस बारीमाथी डोकु बहार काढी जुए छे, त्यारे तेने लागे छे के आ देखाता वृक्षो फरे छे परतु ए वास्तविक नथी, परतु खोटो भ्रम छे, तेम ससारना तमाम पदार्थो पर छता स्व माया छे, ते पण खरी रीते आपणने भ्रम थयेलो छे, अने तेथी दु ख पामीए छीए

दु खनु कारण परने स्व मान्यु छे

अरे, कर्मनी विचित्रताने लईने आ जीव क्यारेक देव, मनुष्य, तिर्यंच अने नारकीपणे उत्पन्न थयो आम चारे गति ने चोरासी लाख जीवायोनिमा आ जीवे अनतीवार भ्रमण कर्यु अने दु खो वेठया. आ वधानु कारण जो कोई होय तो ते एकज छे के–पर पदार्थोने स्व मान्या

ज्ञानीओ तो कहे छे के–भाई ? आ जीवे पूर्वे अनतीवार नव-ग्रैवेयकमा अहइन्द्रपणे देवोना सुखो भोगव्या तेमज आ जीव मनुष्यलोकमा पण अनेकवार राज्यादिकनो भोक्ता बन्यो, छवा तेने तृप्ति थइ नथी, तो आ एक मनुष्यना भवमा तु कदाच मोटो नगरशेठ या राज्यनो मालीक थयो तेथी शु तारी तृप्ति थवानी छे ? नहि ज

कोइपण व्यक्तिने तेमनी साथे न सरखावाय, अने जो सरखावे तो ते तीर्थंकरदेवनी आशातना करनार छे, तेम केम न कहेवाय ? छेवट श्रीहरिभद्रसूरीश्वरजी महाराजे त्यां सुधी जणावेलु छे के—व्रतने धारण करनारना अने तेनो उपदेश करनारना अवर्णवाद बोलनार पतित छे, अथात् साचो जैन नथी, पण भोळी दुनियाने ठगनारो छे, माटे आत्मार्थिओए तेवाओथी सावध रहेवा पूर्वक अतिचार न लागे, तेवी रीते वतवु एज हितावह छे

आरंभ अने परिग्रहथी उत्पन्न थता अतीचारोनु, प्रतिक्रमण

हवे अतिचार क्याथी उपन्न थाय छे, तेनुं विवेचन करता शास्त्रकार महर्षिओ जणावे छे के—तमाम व्रतना अतिचारो पण प्राय परिग्रह अने आरंभथी प्रगट थाय छे, माटे सामान्यथी तेनु प्रतिक्रमण करता सूत्रकार महाराजा जणावे छे के—

दुविहे परिग्गहंमी, सावज्जे बहुविहे अ आरंमे
कारावणे अ करणे, पडिकमे देसिअं सव्वं ॥३॥

सपाप अने घणा प्रकारे एवो बे प्रकारनो परिग्रह अने आरंभ करता, करावता, अने करताने अनुमोदता जे अतिचार सूक्ष्म अथवा बादर दिवस संबधी लाग्यो होय ते सर्वे प्रतिक्रमु छु ।

आ गाथानो स्फोट करता टीकाकार महर्षि जणावे छे के—सचित्त—अचितरूप अथवा बाह्य-अभ्यंतर रूप बे प्रकारनो परिग्रह तेमा बाह्य परिग्रह—धनधान्यादि, अने अभ्यंतर—मिथ्यात्व अविरति आदिनो सचय करता, करावता अने अनुमोदता, तथा खेती—व्यापारादि

सुयगडांग सूत्रमानु अगारदाहकनु दृष्टांत.

आ वस्तु समजाववा युगादिदेव प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव भगवान् श्री सुयगडांग सूत्रमां पोताना ९८ पुत्रोने प्रतिबोध करता अष्टापद पर्वत उपर अगारदाहकना दृष्टांतथी समजावे छे के–' एक अगारदाहक हतो ते वनमां लाकडा कापवा गयो त्यां अंगारा पाडता पाडता मध्याह्नो टाइम थयो ग्रीष्म ऋतु थवाथी स्वाभाविक गरमी थइ हती, तेमां अग्निना तापनो उमेरो वळी ते थाकी गयेलो होवाथी तेने भुख अने तरस पण लागी हती आवी स्थितिमां पोतानी पासे जे भाथु हतु ते खाधु, पाणी हतु, तेटलु पी गयो परंतु गरमी खूब थवाथी तृषा मटी नहि, अने त्यां उंघी गयो उंघमां ने उंघमां पाणीना ध्यानमां स्वमानी अंदर घरना गोळामां जेटलु पाणी हतु ते पी गयो छतां तृषा न मटी, त्यारे गामना गोळाओनु, कुवाओनु, नदीओनु, सरोवरोनु, अने तमाम समुद्रोनु पाणी पी गयो पण तरस मटी नहि छेवटे कोइ ठेकाणे खाडामां मेलु पाणी रहेलु हतु, तेमां पूरो बांधी अंदर नाखी पूरा उपर जे पाणी आवे तेना टीपाथी तरस मटाडवा लाग्यो तेनाथी कइ तरस मटे खरी ? कुवा, वाव, नदीओ, अने समुद्रोना पाणी पीवाथी जे तृषा शांत न थइ, ते पूरा उपर रहेला पाणीना टीपाथी मटे खरी ? जेम तेवी रीते तृषा न मटे **तेम तमोए पूर्वे-पाणी समान जे देवताइ राज्यऋद्धि तेने** न आव्यो, तो आ भवमां पाणीना थशे खरो ? जवाब नकारमाज सिद्धनो त्याग करी संयम

करता, करावतां, अनुमोदता जे अतिचार (मनमा मालिन्यरुप) सूक्ष्म अथवा बादर दिवस संबंधी लाग्यो होय, तेनाथी शुभ भाव वडे फरी नहि करवापणाए हु पाछो हठु छु

जे परिग्रह अने आरंभ शासन प्रभावनानु कारण होय तेनु प्रतिक्रमण नथी

अहिं कोइ कहे के–जिनपूजा, तीर्थयात्रादि धर्मकार्य माटे राखेल परिग्रह, तथा चैत्य, संघ, वात्सल्यादि निमित्ते थनो जे आरंभ, तेमा पण दोष लागे, माटे ते दोषथी पण पाछा हठवु जोइए

आ वातनो खुलासो करता टीकाकार भगवान् जणावे छे के–जिनपूजा, तीर्थयात्रादि निमित्त द्रव्य तथा चैत्यादि निमित्त आरंभ, ए शासनप्रभावनानु कारण छे, माटे तेनु प्रतिक्रमण नथी

"न तु जिनार्चातीर्थयात्रारथयात्राऽऽडम्बराद्युद्देशेन प्रभावना हेतौ परिग्रहे, चैत्यसंघवात्सल्याद्युद्देशेन आरम्भे च सत्यपि न तस्य प्रतिक्रमणमिति" ।

श्रीजिनपूजा, तीर्थयात्रा अने रथयात्राना आडंबर निमित्ते राखवामा आवतो परिग्रह अने चैत्य, संघ, वात्सल्यादि निमित्ते थतो जे आरंभ तेमां दोष नथी, कारण के–ते शासनप्रभावनानु कारण छे, अने माटेज तेनु प्रतिक्रमण नहि

अतएव सूत्रकार भगवंत "सावज्जे" ए पदथी "सावद्ये" स्वकुटुंबादि माटे सपाप राखवामा आवेल परिग्रहारंभमां दोष जणावे छे, परंतु धर्मानुष्ठान माटे खर्चवा राखेल परिग्रह तथा आरंभमां दोष नथी

धर्मप्रभावनाना कारणभूत क्रियानुष्ठानोमां वपरातु द्रव्य धुमाडो नथी पण दुनियादारीनी पापक्रियामां वपरातु द्रव्य धुमाडो छे

ज्यारे आजना सुधारकना स्थानमा रहल केटलाक दर्शीओ प्रभावनाना नाम श्रीजिनपूजा, रथयात्रा, तीर्थयात्रा, संघ काढवा, स्वामिवात्सल्य, अने उजमणादि करवामा थतो द्रव्यनो व्यय धुमाडो छे, फोगट छे, एम बोले छे परतु आवु कहेनाराओए समजवानु छे, के—धर्मप्रभावनाना कारणभूत वीतराग प्रणीत क्रियानुष्ठानमा वपरातु द्रव्य ए धुमाडो छे ? के कुटुंबादिक माटे वपरातु द्रव्य धुमाडो छे ? शास्त्रकारोए तो साफ साफ जणावी दीधु के—तीर्थयात्रादि धर्मप्रभावनाना हेतु छे, ज्यारे दुनियानो आडबर ए पापरूप छे, माटे मानवुज जोइए के—धर्मप्रभावनाना कारणभूत क्रियानुष्ठानोमां वपरातु द्रव्य धुमाडो नथी, पण दुनियादारीनी पापक्रियामा वपरातु द्रव्य धुमाडो छे

धर्ममार्गे धनव्यय करवो ए बहु लाभदायी छे

वळी केटलाक जैन नामधारीओनु एम कहेवु छे के—अत्यारे देश दुःखथी रडी रह्यो छे, माटे जिनपूजा, स्वामिवात्सल्यादिमा द्रव्य व्यय करवो, तेना करता देशोद्धारमां द्रव्य आपवु ए वधारे लाभदायक छे

आ प्रमाणे जे बोलवु तेमना [illegible] छे, केमके [illegible] आवे छे, ते जो विचाराय तो [illegible] रीते [illegible]

आरंभ अने परिग्रह छोडवा योग्य छे, अने ए शास्त्र कारोने इष्ट ज छे छता पोतानी अज्ञानतानु प्रदर्शन करावनारने कोण रोके ?

जो एम न लइए, तो जे भगवंते "जाम पससइ मयव" इत्यादि सूत्रोथी जेना दृढ व्रतनी प्रशंसा करेल छे, तथा श्रावकोने पण तपावेला लोढाना गोळा जेवी उपमा आपी समजाय छे, तेनु पण काइ कारण होवु ज जोइए

कारण एज छे, के–जेटली विरति करी तेटलु पापथी बच्या, परतु बाकी रहेली अविरतिना योगे तथा परिमाणवाळा आरंभ–परिग्रहना योगे पाप रह्युं छे तेनाथी तेओ बच्या नथी अविरति (पापना पच्चक्खाण वगरना) श्रावक नाम्नर ? ज्या त्या हिंसामा वर्तने छे

वळी पहेलाना श्रावको आरंभ अने परिग्रहने पाप मानता के नहि ? जो न्होता मानता एम कहेशो, तो परिमाण शा माटे कर्यु ? अने कर्यु हतु, तो वधारे नहीं, अने एटलु ज कम कर्यु ? अथवा जो एम कहेशो के–पाप मानता हता, तो तेनाथी ज सिद्ध थयु के–आरंभ अने परिग्रह छोडवा योग्य छे, अने शास्त्रकारने पण ए इष्टज छे जेने विचार न कर्यो होय ते तो फक्त पोतानी अज्ञानतानुज प्रदर्शन करावतु होय, तेने कोण रोके ?

कदाच मानी ल्यो के समाजमाथी तमाम आत्माओ मुक्तिमा जाय, तेमा आपणने इच्छा पण शी ! सज्जनोने तो तेथी पण आनंद ज छे.

आथी कोइ एम कहे के–जो तमाम जीवो आरंभ

ज्ञानीओ कहे छे के–"पावाओ होइ दुक्ख" पापना उदयथी दु ख आवे छे

ज्यारे पापना उदयथी दु'ख आवे छे, तो ते पापना उदयनो नाश करनार धर्मनी अदर द्रव्य खर्चवाथी वधारे लाभ, के पापना उदयने वधारनार क्रियामा खर्चवाथी वधु लाभ ? देशे अर्थ–कामनी पुष्टिना साधनमा उद्धार मान्यो छे, ज्यारे ज्ञानीओए अर्थकामनी लालसाओ तोडनार धर्ममां उद्धार मान्यो छे, केमके–अर्थ काम ए पाप छे, अने तेनी पुष्टिमां साचो उद्धार छेज नहि, माटे आमानो साचो उद्धार करवानी भावनावाळा ओए धर्मनी अदर धननो व्यय करवो ए वधु लाभदायी छे

धर्मक्रियाओने अथवा ते निमित्ते थता धनव्ययने अटकावनाराओ पोताना आत्माने दुर्गति सन्मुख करे छे

अग्निना तापथी पीडातो प्राणी जेम पुन' अग्निमां प्रवेश करवाथी शान्त थतो नथी, तेम अर्थ–कामथी दु खी थता जीवो पण अर्थ–कामनी पुष्टिथी सुखी थता नथी किन्तु अर्थ–कामनी लालसा तोडनार धर्ममां शान्ति पामे छे; माटे गमे तेवा सयोगोमा पण धर्मकार्यो बध नज थवां जोइए आजे जेओ धर्मकार्यो बध रखाववा मागता होय तेओ शास्त्र दृष्टिए जड जेवा छे

धर्मोन्नतिना कार्योमां धन खर्चीने पण जीवोने धर्म पमाडवा प्रयत्न करवो, एज साचो उद्धार छे खरेखर धर्मक्रियामां

परिग्रह छोडी बधा मुक्तिमा चाल्या जाय तो ससारमा कोण रहे ? अने ससार व्यवहार केम चाले ?

आ शका करवी एज खोटी छे, केम के–समुद्रमा रहेलु पाणी गमे तेटलु बहार काढवामा आवे, तो ते कोइ काळे खाली थाय तेम छे ? जो खाली नथीज थतु, तो ससारमाथी गमे तेटला जीवो मोक्षे जाय छता पण कोइ काळ ससार खाली थवानो ज नथी, एम मानवु जोइए, कदाच मानवा खातर मानी पण ल्यो के–खाली थइ जाय, तो तेमा आपणने हरकत पण शी ? कारण के–**ससारना दु खोथी बची जे जीवो शाश्वत सुखना भोक्ता बने छे, तेमा सज्जनोने तो आनद ज छे.** परने सुखी देखी आनदित बनवु अने परने दु खी जोइ पोताने दु ख थवु ए सज्जनोनी रीति छे ज्यारे परने सुखी जोइ पोते दु खी थनार आमा दुर्जन छे तेनो एवो स्वभाव होय छे के–बीजाओने हेरान करवा

आरम–परिग्रहना त्यागी साचा महात्माओ तेना त्यागनो ज उपदेश दे छे परतु तेने वधारवामा अनुमोदन पण करता नथी.

एक वात खास ए पण विचारवा जेवी छे, के–**ज्यारे श्रावक पण खेती, व्यापार, हुन्नरकळा विगेरे दुनियाना आरभने, अने धनधान्यादि परिग्रहने पापरूप मानी डरनारो अने सर्वथा छोडवानी भावनावाळो होय, तो पछी जींदगी सुधी आरम–परिग्रह छोडी साधु बनेलानी केवी भावना होवी जोइए ?** कहो के–दरेक जीवोने आरभ–परिग्रहथी छोडाववानी भावना

वपराता धनने धूमाडो कहेनारा, अथवा धर्मक्रियाने अटकाववानो प्रयत्न करनारा पोताना आत्माने दुर्गति सन्मुख करे छे.

उपकारी एवा धर्मने भूलनार कृतघ्न केम न कहेनाय ?

केमके–जे धर्मना प्रभावे आ भवमा आर्यदेश, मनुष्यजन्म,उत्तम कुल, निरोगीपणु, इन्द्रियपटुता, दीर्घायुष्य, देव–गुरु–धर्मनी सामग्री इत्यादि धर्मसामग्री अने जेना योगे दुनियानी अनेक ऋद्धिसिद्धि पाम्यो छे, ते धर्मनु विशेष रीतिए पुन आराधन करवु जोइए तेने बदले ते धर्मनो घातक बने, तो तेना जेवो कृतघ्न ने पापी कोण ? दुनियाना उपकारीनो कृतघ्न बननार पण दुनियामां हलको कहेवाय, तो धर्मनो कृतघ्न पापी केम न कहेवाय ? तेवो आमा दुर्गतिमा जाय एमा नवाइ पण शी ?

वीतरागदेवनी भक्ति करनार ससार समुद्रथी तरे छे

केइ अज्ञानीनु एम मानवु होय के–देवने पूजा शी ? रथयात्रा शी ? लाखोना दागीना शा ? लाखोना खर्च देवने माटे मन्दिर शा माटे ? स्वामिवात्सल्यमा लाखोनो खर्चा केम ? देव तो वीतराग छे, एने वळी रागना साधनो शु काम जोइए ? आ प्रमाणे बोलनार पोताना आत्माने पापथी भारे करे छे.

केमके–देवनिमित्त रथयात्रादि जे धार्मिक कार्यो करवामां आवे छे, ते देवने माटे नथी किन्तु पोताना आत्माने ससारथी तारवा माटे भक्तिथी करवामा आवे छे. वीतरागनी भक्ति करो या न करो, तेमा वीतरागदेवने तो कई छेज नहि, परतु ससार समुद्रमा नहि डूबता तरे छे

होवी जोइए. एटलु ज नहि पण तेने छोडवानो ज उपदेश देवो जोइए

खेदनी वात छे, के—आजे जमानाना नामे केटलाक साधुना वेषमा रहेला वेषधारीओ तथा नामधारी जैनो पैसाना मान पाननी खातर अने पेट भरवानी खातर कोइ उपाए एकेन्द्रिय जीवोनी कतल थती होय, अने तेनु धर्मना नामे पोषण थतुं होय अने तेमा पोतानी लागवग या मुख्यता होवा छतां तेने रोकवा तरफ बेदरकारी बतावता होय, ता ते पोताने दुनियाना म्हेमान बनाववा इच्छे छे, एम कम न कहेवाय ! जे वेषधारीओ आरभ अने परिग्रहनु पोषण करे छे, तथा दुनियाना पिपासुओना गुण गाय छे, ते भरबजारमां पोताना साधुपणानु लीलाम करे छे माटे एवा अधकचरा लोको कुगुरुओथी अलगा रहेवु, अने तेवाओने कोइ प्रकारे अनुमोदन न अपाय, एवी काळजी राखवी

आरंभ-परिग्रहना त्यागी साधु महात्माओ तो ससारनी कोइ पण पापक्रियाने अथवा तो आरभ-परिग्रह वधारवामां सीधी के आडकतरी रीते अनुमोदन पण करता नथी

पापनो डर राख्या विनाउ प्रतिक्रमण करी पापनो नाश करवानी मानवतावाळा मृषावादी छे.

छेटी पण वात ए छे के—अतिचार फरी करवाना परिणामथी अतिचारोथी पाछा हटवु तेनुं नाम प्रतिक्रमण छे.

देवकृत समवमरणादिकभक्तिथी जो वीतरागपणामा बाध न आवे तो, मनुष्यकृत अल्प भक्तिथी बाध आवे खरो ?

वळी वीतरागदेवनी आभरणादिथी भक्ति करवामां आवे छे, तेथी वीतरागपणु जतु रहे एम नथी. देवोए रत्नथी, सोनाथी अने रुपाथी रचेल त्रण गढवाळा समवसरणमा, तथा अशोक वृक्षादि अष्ट महाप्रातिहार्य सहित बीराजता, वीतरागपणाने पामेला श्री तीर्थंकरदेवोना वीतरागपणामा ज्यारे कइ खामी नथी आवती अने सर्वज्ञपणु पाम्या पछी तो भगवान् सुरसचारित सुवर्णकमळ उपरज चाले छे, छता कइ बाध नथी आवतो, त्यारे मनुष्यकृत भक्तिथी वीतरागपणाने कइ बाध आवे खरो ?

जो वीतरागपणाने बाध न आवे, तो जे भक्तिथी आत्मानो निस्तार छे, ते भक्तिनी अदर आभरणादिथी थतो द्रव्यव्यय आपणने केम खूचे ? भगवान्ना रथयात्रादिमा तथा देवमदिरमां पण पूज्यभक्ति रहेली होय छे, माटे ते पण करवांज जोइए.

दुनियादारीनां कार्योनी प्रशसा करनार ज्यारे पाप बांधे छे त्यारे धर्मना शुभ कार्योने प्रशसनार धर्मने पामे छे

ज्यारे ससारी जीवो दुनियानी कार्यवाहीने अगे हजारोनो खर्च करे छे, अने ते खर्चनार, खर्चावनार तथा तेनुं अनुमोदन करनार पाप बाधे छे, त्यारे श्री जिनमदिर, रथयात्रादि धार्मिक उत्सवो करनार, करावनार तथा तेने अनुमोदनार अनुक्रमे शाश्वत सुखने प्राप्त करे छे जेम गृहस्थना मोटा मकानने जोई तेनी प्रशसा

आथी समजवानु छे, के—केटलाकोनी पाप करता एवी
होय छे, के—आपणे प्रतिक्रमण करीशु एटले पापथी छुटी ज
पाप करता डरवु नहीं आवी मान्यता ए एक प्रकारनी अज्ञा
जो आवी रीते प्रतिक्रमण करी, पापथी डरे नहि, तो तेनु सा
क्रमण नथी परतु मायामृषावादी छे माटे पुन पाप
डरवु जोइए

पापथी डरनाराओ ज साचु कल्याण करी शकय छे अने करशे ?

आजकाल केटलाक अज्ञानीओनु एवु मानवु अने बो
छे, के—आ पाप आ पाप एम शु काम करवु पाप पाप
डरवु ते बीकणपणु छे बस नीडर बनवु नीडर
सिवाय काम न थाय

खरेखर ? आवु कहेनाराओने कहेवु पडशे ? के—भाई
पापथी डरशो नथी, ते पोताना आत्माने अधोगतिम
जाय छे अरे ? पापथी नहि डरनारा आ लोकमां पण
जीवी शकता नथी. शु ? आपणे नथी देखता के—चोर, जु
रडीबाज विगेरे अहिं पण दु खी थाय छे, अने भवान्तरमा पण
थाय, ते जुदु केटलाकने आ भवमा पण एवा देखीए छीए,
मळे खावा, पहेरवा के—रहेवा स्थान कोइ बोलावे पण नहि
कारण विचारीए तो कहेवु ज पडशे ? के—पूर्व पापनो उदय छे

पापथी डरवु तेमा ज खरी बहादुरी छे केम के—ते

करनार पाप बाधे छे, तेम श्रीजिनमदिर, रथयात्रा, सघ इत्यादि जोइ केटलाक लघुकर्मी आत्माओ ते शुभ कार्योनी प्रशसा करी धर्म पामे छे.

धर्मानुष्ठानोमां खर्चातु द्रव्य जेने खूचे, तेवा ससार रसिको जरुर भवमां रखडे छे

खरेखर रहेवा माटे लाखोना मकानो बधावनारने, स्त्रीओने अगे हजारोना दागीना पहेरावनारने, तथा पुत्र-पुत्र्यादिना लग्नोत्सवमां हजारो खर्चनारने, वीतराग परमात्माए विहित करेल धर्मानुष्ठानोमां खर्चातु द्रव्य तथा जिनभक्तिमा वपराती आभरणादि वस्तुओ खूचे छे, त्यारे सज्जन आत्माओने तो सहेजे एम थाय के-त पोताना आत्माने पापथी भारे बनावे छे, अने पोतानामां रहेल मिथ्यात्वने मजबुत बनावे छे. परिणामे ससारमा अनतोकाल ते आत्मा रखड छे

जिन आज्ञा एज धर्म.

अरे, उपाश्रयना चोरसा घसी घसी घरडा बनल केटलाक अज्ञान पामरो पण प्रभुपूजामा कासी वगाडनी, स्वामीवात्सल्य करवु, आदिमा छकायनी हिंसा छे, ज्या हिंसा होय त्या धर्म नथी, केमके-भगवाने अहिंसामा धर्म कह्यो छे, एम बोले छे पण आवु कहेनाराओ श्रीजिन-वचनना मर्मने नहि समजनारा छे ! केमके-वीतरागदेवे तो स्पष्ट जणाव्यु छे के-"आणाए धम्मो" वीतरागदेवनी आज्ञामाज धर्म छे, एटले आज्ञाप्राधान्य धर्म कह्यो छे, नहि के अहिंसा-माथी समजवानु के-सर्वज्ञ प्रभुनी दृष्टिएज हिंसा अने

देवो-गौतमस्वामी आदि गणधर भगवानो अने जे कोइ पापथी डर्या, त्यारे ज पोताना आत्माने दुर्गतिथी बचावी, बाह्य अभ्यन्तर शत्रुओने जीती, मोक्ष सुखना भोक्ता बन्या छे मा जे कोइ भव्यात्मा पापनो डर राखी पापथी बचशे ? ते शाश्वत् सुखनो भोक्ता बनशे

ज्ञानातिचारनु प्रतिक्रमण.

पूर्वे सामान्ये करी सर्व अतिचारोनु प्रतिक्रमण करवानु बणावी गया बाद, हवे विशेषे करीने बधाय अतिचारोनु प्रतिक्रमण करवानी इच्छावाळो, प्रथम ज्ञानातिचारने प्रतिक्रमे छे, आ वातने सूत्रकार भगवान् जणावे छे के–

"ज बद्धमिंदीएहिं, चउहि कसाएहिं अप्पसत्थेहिं ।
रागेण व दोसेण व, त निंद त च गरिहामि ॥४॥"

अप्रशस्त एवी इन्द्रियो, (अप्रशस्त) चार कषायो, (अप्रशस्त) राग, द्वेष, अने (अप्रशस्त) मन–वचन अने कायाना योगो वडे करी रातिथी जे कर्म बधायु होय ते कर्मने हु आत्मसाक्षीए निन्दु छु अने गुरुसाक्षीए गर्हु छु

ज्ञानातिचारनी विवरणथी निंदा अने गर्हा

उपरनी वातनु ज विशेष स्पष्टीकरण करता बालसरस्वतीना बिरुदने धारण करनार टीकाकार महर्षि श्रीमान् रत्नशेखरसूरीश्वरजी महाराजा जणावे छे के–"ज बद्धेति" ज्ञानना अतिचारभूत जे अशुभ कर्म मारा जीवे बाध्यु होय, तेनी हु निंदा तथा गर्हा करु छु

अहिंसा रहेली छे आपणी दृष्टिए ज्यां हिंसा होय, त्यां सर्वज्ञनी दृष्टिए अहिंसा होय तो तेमनी आज्ञाए आपणे आदरवानु आपणी दृष्टिए ज्यां अहिंसा होय, पण ज्ञानीनी दृष्टिए हिंसा होय तो ते छोडवानु

हिंसा अने अहिंसाना मर्मने समजनार शु चैत्यादिकनो विरोध करे ?

आथीज भगवते कहेल हिंसाना त्रण प्रकारमा स्वरुपहिंसा अने अनुबंधहिंसानु स्वरूप समजावतां शास्त्रकारोए जणाव्यु छे के— स्वरुपहिंसा ए मात्र देखावनी हिंसा छे, पण हिंसाना फळने देवावाळी नथी, केमके ज्या पूज्य प्रत्ये भक्ति अने जयणा रही छे, त्यां हिंसा नथी, परतु परिणामे अहिंसाज छे अने ज्या भक्ति, जयणा अने आज्ञा नथी, त्यां आपणी दृष्टिए अहिंसा देखाती होय, तो ते पण हिंसाना फळने आपनार छे आथी ते अनुबंधहिंसा छे

आ बे प्रकारना हिंसाना भेदने समजनार कयो बुद्धिमान चैत्यनो या स्वामिवात्सल्यादिनो देशना नामे ने जमानाना नामे विरोध करे ?

ज्ञानी निहित क्रियाओमा आरंभने आगल करी क्रियानुष्ठानोने उडावे छे, ते तेमना दुर्भाग्यनी निशानी नही, तो बीजु शु ?

तेनी अदर स्वरुपहिंसा छे, पण अनुबंधहिंसा नथी, अने तेथी

आथी समजवानु छे, के—केटलाकोनी पाप करता एवी मान्यता होय छे, के—आपणे प्रतिक्रमण करीशु एटले पापथी छुटी जइशु, माटे पाप करता डरवु नहीं आवी मान्यता ए एक प्रकारनी अज्ञानता छे जो आवी रीते प्रतिक्रमण करी, पापथी डरे नहि, तो तेनु साचु प्रतिक्रमण नथी परतु **मायामृषावादी छे** माटे पुन पाप करता डरवु जोइए

पापथी डरनाराओ ज साचु कल्याण करी शक्या छे अने करशे ?

आजकाल केटलाक अज्ञानीओनु एवु मानवु अने बोलवु होय **छे, के—आ पाप आ पाप एम शु काम करवु पाप पाप करीने डरवु ते बीकणपणु छे बस नीडर बनवु नीडर बन्या सिवाय काम न थाय.**

खरेखर ? आवु कहेनाराओने कहेवु पडशे ? के—**भाई ! जे पापथी डरतो नथी, ते पोताना आत्माने अधोगतिमां लई जाय छे** अरे ? **पापथी नहि डरनारा आ लोकमां पण सुखे जीवी शकता नथी** शु ? आपणे नथी देखता के—चोर, जुगारी, रंडीबाज विगेरे अहिं पण दु खी थाय छे, अने भवातरमा पण दु खी थाय, ते शुदु केटलाकन आ भवमा पण एवा देखीए छीए, के—न मळे खावा, पहेरवा के—रहेवा स्थान कोइ बोलावे पण नहि आनु कारण विचारीए तो कहेवु ज पडशे ? के—पूर्व पापनो उदय छे

पापथी डरवु तेमा ज खरी बहादुरी छे केम के—तीर्थंकर

कृपखननना दृष्टांते गृहस्थोए अल्प दोष अने विशेष लाभ जाणीने चैत्यादि कार्यो करवा जोइए, केमके–ज्ञानीओए विशेष लाभनी अदर अल्प दोष गणाव्यो नथी दुनियादारीमा पण मोटी आरम्भवाळा व्यापारमा जेम पहेला पाचनी नुकसान लागे छ, तो पण ते नुकसान गणातु नथी, परतु लाभज गणाय छे, तेम अत्रे पण जाणवु

आथीज टीकाकारमहर्षि चैत्य, मघ, वात्सल्यादिमा आरभ छे, छता आरभ गणावता नथी **ससारी जीवोने पौद्गलिक सुखोनी लालसामां ज्या आरभ छे, त्या आरभ जणातो नथी** अने **आत्मिक सुख प्राप्त करावनार साधनोमा ज्यां ज्ञानीओए आरभ कह्यो नथी, त्या जे आरभ देखाय छे, ए पण ते आरभाओना दुर्भाग्यनी निशानी सिवाय बीजु शु कहेवाय ?**

श्रावके अल्पारभी अने अल्प परिग्रही बनवु जोइए

हवे आरभ अने परिग्रह ए सावद्य छे, छता केटलाक परिग्रह अने आरभ सिवाय गृहस्थना गृहजीवननो निवाह थई शकेज नहि, माटे आरभ ने परिग्रहथी सर्वथा पाछा हठवु अशक्य छे अत एव सूत्रकार भगवतो **"बहुविहे"** ए पदथी **"बहुविधे"** एटले घणा प्रकारनो जे परिग्रह ने आरभ नि शकपणाए करता, करावता ने सारु मानता जे अतिचार लाग्यो होय तेनाथी फरी नहि करवानी शरते पाछा हठवानु जणाव्यु छे

कारण के–**श्रावके अल्प परिग्रह ने अल्पारभवाळा थवु जोइए** अन्यथा अधिक लोभवशात् बहु जीववध, मृषावाद–अदत्तादानादि सभवे छे, अने सर्व व्रतमा अतिचार लागवानो सभव छे ।

देवो-गौतमस्वामी आदि गणधर भगवानो अने जे कोइ पापथी डर्या, त्यारे ज पोताना आत्माने दुर्गतिथी बचावी, बाह्य अभ्यन्तर शत्रुओने जीती, मोक्ष सुखना भोक्ता बन्या छे माटे जे कोइ भव्यात्मा पापनो डर राखी पापथी बचशे ? ते शाश्वत् सुखनो भोक्ता बनशे

ज्ञानातिचारनु प्रतिक्रमण

पूर्वे सामान्ये करी सर्व अतिचारोनु प्रतिक्रमण करवानु बतावी गया बाद, हवे विशेषे करीने बधाय अतिचारोनु प्रतिक्रमण करवानी इच्छावाळो, प्रथम ज्ञानातिचारने प्रतिक्रमे छे, आज वातने सूत्रकार भगवान् जणावे छे के–

"ज बद्धमिंदीएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं ।
रागेण व दोसेण व, त निंदे त च गरिहामि ॥४॥"

अप्रशस्त एवी इन्द्रियो, (अप्रशस्त) चार कषायो, (अप्रशस्त) राग, द्वेष, अने (अप्रशस्त) मन–वचन अने कायाना योगो वडे करी अतिशयी जे कर्म बधायु होय ते कर्मने हु आत्मसाक्षीए निन्दु छु अने गुरुसाक्षीए गर्हुं छु

ज्ञानातिचारनी विवरणथी निंदा अने गर्हा.

उपरनी वातनु ज विशेष स्पष्टीकरण करता बालसरस्वतीना बिरुदने धारण करनार टीकाकार महर्षि श्रीमान् रत्नशेखरसूरीश्वरजी महाराजा जणावे छे के–"ज बद्धति ' नानना अतिचारभूत जे अशुभ कर्म मारा जीवे बाध्यु होय, तेनी हु निंदा तथा गर्हा करु छु

महा आरंभ अने महापरिग्रह ए कुगतिनुं कारण छे

केटलाक अज्ञान लोको कहे छे के–शास्त्रकारोए पण गृहस्थने परिग्रह ने आरंभ करवानो कह्यो छे जो एम न होय तो आणंदादिक बारव्रतधारी श्रावकोने पण आरंभ ने परिग्रह मोटा प्रमाणमां हतो, तो पछी अमे आरंभ परिग्रह राखीए एमां पाप शानुं ? आ प्रमाणे बोलनार के माननार जैनपणाथी घणे दूर छे

कारण के–जैन शास्त्रकारो आरंभ ने परिग्रहने महान् दुःखना कारणभूत ओळखावे छे तेथी ते राखवानुं कहेज नहि, किंतु शास्त्रकारना कहेला मर्मने नहि समजनार अज्ञानीओज शास्त्रकारना नामे पापरूप आरंभ–परिग्रह राखवानी घेलछा करे छे जुओ टीकाकार भगवान् जणावे छे के–

"परिग्रहारम्भाश्च नरकादिमहादुःखहेतवः." ।

परिग्रह ने आरंभ ए नरकादि महा दुःखनुं कारण छे

तेज वात भगवतीनी सूत्रमां छे के–

"कहन्न भंते जीवा नेरइत्ताए कम्मं पगरंति ? गोअमा ! महारंभयाए महापरिग्गहाए कुणिमाहारेण पंचिंदियवहेणमिति"

गणधर भगवान् श्री गौतमस्वामीजी महाराजे भगवान् श्री महावीर प्रभुने प्रश्न पूछ्यो के– हे भगवंत शुं करवाथी जीव नरकने लायक आयुष्य बांधे ? उत्तरमां भगवाने जणाव्युं के– 'हे गौतम ! महा आरंभथी, महा परिग्रहथी, मांसाहारथी पंचेन्द्रिय जीवना वधथी जीवो नरकायुष्य बांधे छे.

आथी समजवानु छे, के–केटलाकोनी पाप करता एवी मान्यता होय छे, के–आपण प्रतिक्रमण करीशुं एटले पापथी छुटी जइशु, माटे पाप करता डरखु नहीं आवी मान्यता ए एक प्रकारनी अज्ञानता छे जो आवी रीते प्रतिक्रमण करी, पापथी डरे नहि, तो तेनु साचु प्रतिक्रमण नथी परतु **मायामृषावादी छे** माटे पुन पाप करता डरखु जोइए

पापथी डरनाराओ ज साचु कल्याण करी शक्या छे अने करशे ?

आजकाल केटलाक अज्ञानीओनु एवु मानवु अने बोल्बु होय छे, **के–आ पाप आ पाप एम शु काम करखु पाप पाप करीने डरखु ते चीकणपणु छे. बस नीडर बनवु नीडर बन्या सिवाय काम न थाय**

खरेखर ! आवु कहेनाराओने कहेवु पडशे ! के–भाई ! **जे पापथी डरतो नथी, ते पोताना आत्माने अधोगतिमां लई जाय छे** अरे ! **पापथी नहि डरनारा आ लोकमां पण सुखे जीवी शकता नथी** शु ! आपण नथी देखता के–चोर, जुगारी, रडीबाज विगेरे अहिं पण दु खी थाय छे, अने भवातरमा पण दु खी थाय, ते जुदु केटलाकने आ भवमा पण एवा देखीए छीए, के–न मळे खावा, पटेरवा के–रहेवा स्थान कोइ बोलावे पण नहि आनु कारण विचारीए तो कहेवु ज पडशे ! के–पूर्व पापनो उदय छे

पापथी डरखु तेमां ज [illegible] छे केमके

बीज ठेकाणे पण जणाव्यु छे के—

धणसंचओ अ विउलो, आरंभपरिग्गहो अ विच्छिण्णो।
नेइ अवस्स मणुस, नरगं व तिरिक्खजोणिं वा ॥

विशेष धनसंचय अने विस्तिर्ण आरंभ-परिग्रह ए मनुष्यने नर्क अथवा तिर्यंचगतिमा लइ जाय छे.

उपरना पाठोथी स्पष्ट छे, के—आरंभ अने परिग्रह ए जीवोने दु:खदायी छे अने दुर्गतिनु कारण छे, माटे तेनो संग उचित नथी

सावद्य आरंभ अने परिग्रह राखवानु विधान शास्त्रकारो न करे छता कोइ मानी ले तो ते तेनी अज्ञानता ज छे

ब्रह्मदत्त, सुभूम आदि चक्रवर्तीओ पण आरंभ अने परिग्रहना योगे सातमी नरके गया छे मम्मणशेठनी पण ए दशा थइ छे. जेओए आरंभ अने परिग्रह सर्वथा छोडयो, ते श्री सनतकुमार, सगरचक्रवर्ति आदिनी माफक अनंत, अविनश्वर सुखना भोक्ता थया छे, माटे जेने छोडवाथी सुख छे, अने नहीं छोडवाथी दु:ख छे, तेवो आरंभ अने परिग्रह राखवानु विधान शास्त्रकारो न ज करे. छता कोइ मानी ले तो ते तेनी अज्ञानता ज छे

आणंदादिकनां दृष्टांत लेनाराओए समजवानु'

आणंदादिकना दृष्टांत लेनारने आपणे पूछीए, के—शु ? भगवंते आणंदादिक श्रावकोने आरंभ-परिग्रह राखवानु कह्यु हतु ? के—छोडवानु कह्यु हतु ? जो राखवानु कह्यु होय ? तो

देवो-गौतमस्वामी आदि गणधर भगवानो अने जे कोइ पापथी बच्या, त्यारे ज पोताना आत्माने दुर्गतिथी बचावी, बाह्य अभ्यन्तर शत्रुओने जीती, मोक्ष सुखना भोक्ता बन्या छे माटे जे कोइ भव्यात्मा पापनो डर राखी पापथी बचशे ? ते शाश्वत् सुखनो भोक्ता बनशे

ज्ञानातिचारनु प्रतिक्रमण.

पूर्वे सामान्ये करी सर्व अतिचारोनु प्रतिक्रमण करवानु जणावी गया बाद, हवे विशेषे करीने बधाय अतिचारोनु प्रतिक्रमण करवानी इच्छावाळो, प्रथम ज्ञानातिचारने प्रतिक्रमे छे, आज वातने सूत्रकार भगवान् जणावे छे के–

"ज बद्धमिंदीएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं ।
रागेण व दोसेण व, त निंदे त च गरिहामि ॥४॥"

अप्रशस्त पवी इन्द्रियो, (अप्रशस्त) चार कषायो, (अप्रशस्त) राग, द्वेष, अने (अप्रशस्त) मन–वचन अन कायाना योगो वडे करी शरीरथी जे कर्म बधायु होय ते कर्मने हु आमसाक्षीए निन्दु छु अन गुरुसाक्षीए गर्हुं छु

ज्ञानातिचारनी विवरणथी निंदा अने गर्हा

उपरनी वातनु ज विशेष स्पष्टीकरण करता बालमररत्नीना बिरुदने धारण करनार टीकाकार महर्षि श्रीमान् रत्नशेखरसूरीश्वरजी महाराजा जणावे छे के–"ज बद्धेति" ज्ञानना अतिचारभूत जे अशुभ कर्म मारा जीवे बाध्यु होय, तनी हु निन्दा तथा गर्हा करु छु

परिमाण शा माटे कराव्यु ? कमके–राखवु योग्य छे, एम कहे-नारे परिमाण कराववु ते अयोग्य छे. जो न राखवु एम कह्यु होय, तो आणदादिकनां दृष्टातो लइ आरम-परिग्रह राखवानी पुष्टि करवी नकामी छे वली आणदादिक श्रावकोए ज्यारे सर्वथा आरभ-परिग्रह छोडवानी अशक्ति जणावी छे, त्यारे भगवाने परिमाण कराव्यु छे तेवी ज रीते श्रावको पण परि ग्रहने पापरूप माने छे, छतां सर्वथा छोडवाने माटे अशक्त होइ परिमाण करे छे.

आरभ-परिग्रह छोडवामाज शास्त्रकारोनी अनुमति छे, परतु सर्वथा छोडवानी ताकातना अभावे अल्प राखे तेमा नहीं ज

आथी स्पष्टज छे, के–शास्त्रकारो अल्प या बधु आरभ-परिग्रह राखवानु विधान करताज नथी परतु पापरूप अने तेना फल तरीके नरकादि दु.खो जणावी, तेने छोडवानोज उपदेश आपे छे छता जे जीवो पोतानी नबळाइना कारणे सर्वथा छोडवा समर्थ न होय, तो तेने महान् आरभ परिग्रह छोडावी, अल्प निर्वाह पुरतु परिमाण करावे छे अने तेमा पण आरभ-परिग्रह छोडाववानुज अनुमोदन रहे छे, पण अल्प आरभ-परिग्रह राखवामा अनुमोदन नथीज कारण के-सर्वथा छोडवानी ताकातना अभावे स्वय राखे छे, तेमा शास्त्र-कारोने कइ लेवादेवा नथी

हवे आपणे उपर जणाव्यु, के—अशुभकर्म मारा जीवे बाध्यु होय, तो अशुभकर्म कोना वड बाध्यु होय ? तेना उत्तरमा जणावे छे, के— स्पर्शनेन्द्रियादि पाच इन्द्रियोवडे, क्रोधादि चार कषायोवडे, अने उपलक्षणथी मन, वचन, अने कायारूप त्रण योगोवडे, नानातिचारभूत जे अशुभ कर्म बाध्यु होय, त कर्मने हु आत्मसाक्षीए निन्दु छु, अने गुरु साक्षीए गर्हा करु छु

शंका अने समाधान

आ ठेकाणे कोइ टीकाकार शका करे छे, के—इन्द्रियादि वडे दर्शनादि अतिचारभूत पण कर्म बधाय छे, कारण के—दरेक समये अनिवृत्ति नामना नवमा गुणस्थानकना अत सुधी सर्व जीवोने सात आठ कर्मनो बध थाय छे अने तेज प्रकार भगवाननु वचन छे, के— "जीवे अट्ठविह बधए वा आउवज्ज सत्त विहबधए वा" इति ।

अर्थात्—ज्यारे आयुष्यनो बध पडे, त्यार जीव ज्ञानावरणादि आठ कर्म बाधे, अने जे समये आयुष्यनो बध न पडे, ते समये जीव ज्ञानावरणीयादि सात कर्मनो बध करे छे तो तमे एम केम कहोछो के—इन्द्रियादिवडे ज्ञानातिचारभूत अशुभ कर्म बधायु होय ?

आ शकानु समाधान करता टीकाकार महाराजा जणावे छे, के—अत्र सर्व अतिचारोना प्रतिक्रमणमा प्रथम ज्ञानातिचारनो प्रसग होवाथी, ज्ञानातिचारभूत अशुभकर्म बधायु होय, एम व्याख्या करी छे

सम्यग् ज्ञानना अभावमां ज जीवो अशुभ कर्मो बांधे छे

हवे ज्ञानातिचार केवी रीते बधाय छे, ते बतावता पहेला जीवो

अशुभकर्म कयी अवस्थामा बाधे छे, त हकीकतने स्पष्ट करता टीकाकार महर्षि जणावे छे, के-**सम्यग् ज्ञानना अभावमां ज जीव कर्म बांधे छे**

कारण के-सम्यग् ज्ञानना सद्भावमा अशुभ आचरण करवानुं बनतु नथी, अने जो अशुभ आचरण करवानु बने नहीं, तो पछी अशुभ कर्म बधाय ज शी रीते ?

"सम्यग् ज्ञानाभावेनैव च जीव कर्माणि बध्नाति, यतः सम्यग्ज्ञाने सत्यशुभकर्मकरणमेव न युज्यते" ।

अर्थात्-सम्यग् ज्ञान वगरनो ज जीव अशुभ कर्मोने बाधे छे कारण के-**सम्यग ज्ञानी आत्माओने अशुभ कर्म करवानु बनी शकतुज नथी.** आथी स्पष्टज छे, के-अशुभ आचरण करनारो अज्ञान लोकोनी दृष्टिए गमे तेवो ज्ञानी होय, छता सम्यग्ज्ञानीओनी दृष्टिए ते ज्ञानी नथी ज किन्तु अज्ञानी ज छे

पापाचरणमां रक्त ए साचा ज्ञानीओ नथी परतु तेवाओ पोताने ज्ञानी तरीके ओळखावी अज्ञान दुनियाने अवळे रस्ते दोरी महान् शत्रुनु काम करनारा छे

फारण के-**सम्यग्ज्ञान तेनेज कहेवाय छे, के जे ज्ञान आववाथी जीवो सर्वथा हिंसा, जुठ, अदत्त, मैथुन अने परिग्रहनो त्याग करे, तेमज सप्तव्यसन, अभक्ष्य, अनतकाय, अने अपेय पदार्थोने छोडे एटले के-तमाम प्रकारना पापाचरणने छोडनार**

खेल आदिनी रसिक वातो तथा विकारी गायनो सांभळवाना धननो धुमाडो, रात्रि उजागरो शरीरमा दु खावो आदि [illegible] आ मव सबधी रहला छे उताय इन्द्रियोने [illegible] पामर प्राणीओ धननो धुमाडो करीने अनेक [illegible] पण विकारी शब्दो सांभळे छे ज्यारे [illegible] हितने जणावनारी, अनतसुखने प्राप्त [illegible] वाणी तथा सद्गुरु आदिना गुणग्राम सांभळवा [illegible] जेनाथी आत्मानु कल्याण छे, तेनाथी [illegible] अहो! जीवोनी केटली अज्ञानता? अहो? [illegible]!

अरे! अज्ञानताथी अंध बनेला [illegible] उपधान, संघयात्रा अने स्वामिवात्सल्य [illegible] महोत्सवोमां भाग्यशालीयो तरफथी खर्चाता धनने [illegible] माननारा अने अज्ञान दुनियाने मनावनारा छे [illegible] दुर्भाग्यनो उदय नहीं तो बीजु शु छे? [illegible] थवाने सफळ माने, अने सद्व्यय थवाने धुमाडो [illegible]? केमज बने?

खेर? आपणी चालु वात [illegible] गायनादि सांभळवामां धननो धुमाडो आदि [illegible] अनर्थ रहेला छे, ए सघळाय जाण छे

तेमज कुशास्त्रोना, तेमज [illegible] एवा तथा आरंभ अने परिग्रहथी [illegible] आदिना मनु श्रवण करवाथी पण [illegible] अने

घने नहीं के—तमाम प्रकारना पापाचरणने करनारो होय ? ते पापाचरणनो त्याग पण केवळ पोताना आत्माने सर्वथा कर्मथी रहित करीने आत्मिक सुख प्राप्त करवानो ज होय नहि के—ससारना तुच्छ सुखो मेळववानो ?

वर्तमानमा तो केटलाक अल्पपडितो पापवाळा अने अशुभ एवा ससारना तुच्छ सुखो माटे अनेक प्रकारना एकेन्द्रियथी माडी पचेन्द्रिय सुधीनी हिंसा करवामा तत्पर तेमज अनेक प्रकारनु नानु या मोटु जुठु बोलनारा, अणदीधेली वस्तु बीजानी पण छीनवी लेवानी बुद्धिवाळा, तेम ज घुमाडाना बाचकानी माफक अने झाझवाना नीर जेवा विषयसुखोमा रमनारा, अने जगत् मात्रना धन, धान्यादि परिग्रहनी मुर्छाथी व्याप्त बनेला, अने जुगार, मास, दारु, वेश्या, परस्त्री, चोरी, शीकार, रात्रीभोजन, अभक्ष्य भक्षण, अने अपेय पान इत्यादि नर्कना बारणा समान व्यसनादिमा पाप नहि माननारा, एटलु ज नहि, पण देवद्रव्यभक्षण करी जवानी दानतवाळा, विधवा विवाहनी हिमायत करनारा, अने छेवटमा देव, गुरु, अने धर्मने अने शास्त्रोने नाबुद करवानी विचार करनारा, वीसमी सदीना जमानावादीओना जमाना वादना पूरमा तणाइ लगना, शरम शोगण मूकी रस्ते चालता पण स्त्रीओ साथे शेक हड करनाराओ, अने एकाते कल्याणकारी त्याग मार्ग—तेने रोकवाना नीच प्रयत्नो करनाराओ पोताने महान् ज्ञानी सरीके कयी रीते ओळखावता हशे ? खरे ज ? आ पण मोहराजानी बलिहारी छे, के—अज्ञानीओ पण पोताने ज्ञानी सरीके ओळखावे छे

आपणे तो अहीं ए समजवानु छे, के—आवा पापाचरण करनारा

धनीने परभवमा दुर्गतिना खाडामा पडवु पडे छे माटे योग्य आमा जोग जे श्रवण करवा योग्य न होय तेवा अप्रशस्त श्रवणनो त्याग करवो एज श्रेयस्कर छे

ते चक्षु इन्द्रिय प्रशस्त कहेवाय ? के जेनो सुदेवादिना दर्शनमा उपयोग थाय छे

हवे चक्षु इन्द्रियनी प्रशस्तता जणावता परमोपकारी टीकाकार महर्षि जणावे छ के–

"चक्षु प्रशस्त यद्देवगुरुसघशास्त्रधर्मस्थानावलोकनादिना पवित्री स्यात्"

ज्यारे नेत्र, देव, गुरु, सघ, शास्त्र अने धर्मस्थानादिना दर्शनवडे पवित्र थाय छ, त्यारे नेत्र पवित्र कहेवाय छे

आथी स्पष्ट छे, के–जेणे पोतानी आख पवित्र बनाववी होय, तेणे निरतर परमतारक श्रीजिनेश्वरदेवोने, सद्गुरुओने, श्रीसघने, परम पूज्य श्रीजिनागमोने अने धर्मस्थानादिकोने निहाळवामा पोतानी आखनो उपयोग करवो जोइए श्रीजिनेश्वरदेव आदिना दर्शन करवाथी अवश्य पाप पकनो नाश थाय छ अने स्वर्गापवर्गादिना सुखो प्राप्त थाय छ आज वातने पुष्ट करता एक स्थले पूर्वमहर्षिए प्रभु स्तुतिमा जणाव्यु छे के–

"दर्शन देवदेवस्य, दर्शन पापनाशनम् ।
दर्शन स्वर्गसोपान, दर्शन मोक्षसाधनम्" ॥१॥

भावार्थ ए छे, के–जगतना सघळाय देवोना मालीक

ए साचा ज्ञानीओ नथी, परतु पोतान महान् ज्ञानी तरीके ओळखावी अनान दुनियाने अवळ रस्ते ल्ई जइ, महान् शत्रुनु काम करनारा छे

अशुभ आचरण रूप अधकारनी हयातिमा सम्यग्ज्ञानरूपी सूर्योदय थयेल मानवो, ए भूल भरेलु नथी शु?

सूर्यनो उदय थवा छता जो अधकार गयो न होय ? तो सूर्यनो उदय थयो छ, एम शी रीतिए मनाय ? तेवीज रीत जेना हृदयमा सम्यग्ज्ञानरूपी सूर्य उदय थयो होय, छता अशुभ आचरण करवा रूप अधकार गयो न होय, तो तेनामा सम्यग्ज्ञान थयेल छ, एम मानवु ए भूल भरेलु नथी शु ?

अशुभ आचरणमा राची माची रहेनारा निश्चयथी अज्ञानी छे

वळी विविध प्रकारना शास्त्र साभळवा छता जे आमाओ कषाय अने इन्द्रियोना गुलाम बनी अशुभ आचरणमा राची माची रहे छे, ते निश्चयथी अज्ञानी छे

अशुभ आचरण करनाराओने ज्ञानी मानवा मनाववानी भूल न करवी जोइए.

आ बधा उपरथी कहेवानु तत्त्व ए छे, के—अनेक प्रकारना अशुभ आचरणो करवा छता मिथ्याभिमानीओ पोताने ज्ञानी तरीके ओळखाववामा जेम भूल कर छे, तेम समजु आमाओए तेवाओने ज्ञानी मानवानी के मनाववानी भूल नज करवी जोइए

तमज ससार सुखना ध्येयथी अथवा कपटपण हिंसादि छोडनारा पण साचा ज्ञानी के महात्मा कही शकाता नथी कारण के—ससारनों

श्रीजिनेश्वरदेवना भक्तिभावना पूर्वक दर्शन करवाथी सघळाय पापोनो नाश थाय छे, अने शुभ पुण्य उपार्जन करवाथी आत्मा स्वर्गना उत्तमकोटीना सुखोनो भोक्ता बनी, अते मोक्षना शाश्वत् सुखनो भोक्ता बने छे तेवीज रीतिए सद्गुरुओना दर्शन–वदन करवाथी घोर पापोनो पण नाश थाय छे

देखो **श्रीकृष्णमहाराजाए** सद्गुरुओना दर्शन–वदनथी चार चार नारकीना कर्मना दळीयानो नाश कर्या, तथा क्षायिक समकित आदि महान् लाभ लीधो

परमतारक श्रीजिनेश्वरदेवनी आज्ञाने कमलपुष्पादिनी जेम मस्तके धारण करनार, श्रीतीर्थंकरदेवोने पण पूज्य, यथाशक्ति रत्नत्रयीनी आराधनामा तत्पर, एवा श्रीचतुर्विधसघना अने तीर्थंकरवत् पूज्य श्रीजिनागमना दर्शनथी पण पापनो नाश थाय तेमा तो कहेवुज शु? **अरे! सम्यक् धर्मध्यानोने निहाळवाथी पण पापोनो नाश थाय छे** अने आ कारणोथीज आख पवित्र थाय छे परतु आजकाल केटलाक स्वच्छन्दी नामधारीओने, तेमज जिनशासनना लोपक दुरात्माओने, प्रभुमूर्तिना दर्शन अने श्रीसघ आदिनु दर्शन अहितकर लागे छे अने **आज कारणे तेवा घोर पापात्माओ देव, गुरु अने धर्मथी विरुद्ध प्रचार करी रह्या छे.** परतु तेमने मालुम नथी, के–ज्यारे घोर पापनो घोर (भयकर) नतीजो भोगववो पडशे? त्यारे कोइ पण बचावी शकनार नथी अस्तु

कल्याणकांक्षी आत्माओए तो तेवा दुष्ट पापात्माओना

सुखो मळी जाय, अथवा पतानु धारेलु कार्य थइ जाय. एटले शास्त्रने के त्यागने पण त्यागीने उभे मूकी प्राय महान् हिंसादि आरंभनी प्रवृत्तिवाळा बने छे जगत्थे-चार, बुद्धिना भंडार अभयकुमारने पणी छतर पत्या पपटश्राविका थई हती. ए

ज्ञेय, हेय अने उपादेयना विवेक वगरनाओ महान् अज्ञानीओ छे

अही आपणे सम्यग्ज्ञाननी वात चाले छे, माटे सम्यग्ज्ञानी तो तेनेज कही शकाय, के-जे केवळ आत्मकल्याणना ध्येयथी हिंसादि पापोनो त्याग करी, अहिंसादि धर्मनो स्वीकार करनारो होय अने मात्र अभव्यनो जीव जे नवपूर्व लगभग भणी गयो होवा छतां, आत्मकल्याणनु ध्येय नहीं होवाना कारणे तो अज्ञानी कहेवाय ! शास्त्रकारो पण जणावे छे के-समकित विण नवपूर्वी, अज्ञानी कहेवाय एटले के-ज्ञेय, (जाणवा लायक) हेय (छोडवा लायक) अने उपादेय (आदरवा लायक)ना विवेक वगरना ज्ञानने धारण करनारा चाहे धर्मशास्त्र संबंधी पण लगभग नवपूर्व सुधीनु ज्ञान भणी गया होय, तो पण ते अज्ञानीओनी कोटीमां गणाय छे तो पछी पापशास्त्रोमां अगर पेट-पटारा भरवामां कुशल बनेलाओ लौकिक ज्ञानमां गमे तेटला कुशल थया होय, अगर अभण होय, तेवाओने अज्ञानी तरीके ओळखाववामा आवे तेमां नवाइज शी ?

वळी आथी ए पण स्पष्ट थाय छे, के-पेट पटारा भरवामा कुशळ बनेलाओ, अने पोताने महान् ज्ञानी तरीके ओळखावनारा, धर्म श्रद्धा

पडछायानो पण त्याग करी श्री देव, गुरु आदिना दर्शन करीने पोतानी आत्मा पावन करवी जोईए

ज्यारे मूढ आत्माओ अप्रशस्तचक्षुइन्द्रियद्वारा पोताना आ भव अने परभवने बगाडे छे, त्यारे पुण्यवानो प्रशस्त बनावया पूर्वक जीवन सफल करे छे

हवे अप्रशस्त चक्षु इन्द्रियनु वर्णन करता परम तारक श्रीमा उमास्वामहाराजा फरमावे छे, के–

"यच्च कामिन्यङ्गोपाङ्गावालोकने व्याप्रियते तदप्रशस्त"

नरकनी वाट समान नारीओना अंगोपागादि देखवामा ज चक्षुनो उपयोग थाय छ, ते चक्षु खराब छे अने तेवी चक्षु खरेखर दुर्गतिमा लई जाय छे

वाचक महाशयो ! आथी स्पष्ट छे, के–स्त्रीओना अगोपाग निहाळवामा पोतानी चक्षुनो उपयोग करवो ए दुरुपयोग छे परतु खेदनी वात छे, के आजे जेओने देव, गुरु आदिना दर्शन नथी गमता या आनद नथी आवतो, तेवाओ स्त्रीओना रूप निहाळवामा एकतान बनी जाय छे आखनो सयम साचवी शकता नथी, अने परिणामे परस्त्रीलम्पट बनी सातमी नारकीना सातवार महेमान बने छे

अरे ! चम्पा नगरीना सोनारनी माफक कामी आत्माओ आ लोकमा पण कुमोते मरे छे, अने परभवमा दुर्गतिमा रीबाय छे कह्यु छे, के–**"घुवड दिवसनो आंधळो छे, कागडो रात्रीनो आंधळो छे, त्यारे कामांध छवी आखे दिवस अने रात्रीनो आंधळो**

करता केटलाक पापाभाओ केवळ आत्मकल्याणना अद्वितीय कारण-भूत त्यागमार्गमा आडे आवी, रात्रनी दमलो स्वीकारनाराओ, तेमज सुविहित गीतार्थ मुनिवर्यो उपर पोतानी अधम सत्ता बेसाडवाना प्रयत्न करनाराओ, खरेज ? पोतानी महान् अज्ञानताने जाहेर करनारा छे

केवल अहिंसा, सत्य अने त्याग शब्दने वळगी रहेनारा, पृथ्वी-कायादि षट्जीवनिकायनी हिंसामा रक्त रहेनारा, परिग्रहमा गाढ मम-त्व धारण करनारा, तेमज अज्ञान दुनियाने महान् पापारंभोमां जोडनाराओने जेओ महान् संत, साधु, महात्मा के महाव्रत-धारी तरीके ओळखावी, साचा त्यागी महाव्रतधारीओने उतारी पाडवाना नीच प्रयत्नो करनारा छे, तेओ महान् अज्ञानी छे, एम कहेवानी जरुर रहेती नथी कारण के—उपरोक्त सघळी हकीकत विचारता ते वात आपोआप समजाइ जाय तेम छे

ज्ञानातिचार रूप कर्म शी रीते बधाय ? तेनी समजण

हवे अहिं ज्ञानना अतिचारो शी रीते थाय ? तो के **लोकमां ज्ञान अने ज्ञानीओनी निंदा करवा वडे, करावना वडे**

ज्ञाननी आशातना करवाथी या करावनाथी ज्ञानअतिचारभूत कर्म जीवोने बधाय छे

लोकमा ज्ञान अने ज्ञानीओनी निन्दा केवी रीते करे या करावे, तो ज्ञानना अतिचार बधाय ? तेना उत्तरमा जणावे छे के—कोइ ज्ञान-वान् आत्मा इन्द्रियो अने कषायोने आधिन बनी गयो होय, तेने जोइ लोको आवा प्रकारना अपवाद बोले के—बळ्युं एनु ज्ञान, एनु ज्ञान

छे" अर्थात् कामाध आमाओना विवेकचक्षुनो नाश थवाथी देखता छता नहि देखता जेवा छे अने तेथी ज विवेकहीन आमाओ अकार्यने आचरीने पोताना आ भवने अने परभवने बगाडे छे

खरखर मूढ आमाओने आखनो सयम गुमावी, एटले के—पोतानी आम्बने अप्रशस्त बनावी, कामाध बनी पोताना उभय भवोने बगाडे छे परंतु पुण्यवान आमाओ तो आखनो सयम केळवी तेने प्रशस्त बनावी पोताना जीवनने सफल करे छे

प्रशस्त घ्राणेन्द्रियनु स्वरूप.

हवे प्रशस्त अने अप्रशस्त घ्राणेन्द्रियना स्वरूपने समजावता श्राद्धकार महाराजा फरमावे छे, के—

"घ्राण प्रशस्त यदर्हत्पूजाया, कुसुमकुङ्कुमकर्पूरादीना, सुगन्धितेतरपरीक्षाया गुरुग्लानादीनां च, पथ्यौषधादौ,साधूनां च ससक्तभक्तपानजिज्ञासायामुपयुज्यते"

परमतारक श्रीअरिहत परमात्मानी पूजामा पुष्पादिकनी परीक्षा माटे, तथा गुरु अने बीमारादि साधुओ माटे आ औषधादि हितकारी छे, के—अहितकारी छे, ए जाणवा माटे तथा साधुओने देवा लायक आहारपाणी जीवयुक्त छे, के जीव रहित छे, ए जाणवा माटे जे घ्राणेन्द्रियनो (नाकनो) उपयोग करवो ते घ्राणेन्द्रिय प्रशस्त छे ।

जिनपूजनमां वपराता पुष्पादिनी परीक्षामा उपयोग करातो घ्राणेन्द्रिय प्रशस्त छे

वाचक महाशय ! आ उपरथी ध्यान राखवानुं छे,

नकामु छे कारण के—जे आवी रीते इंद्रियो अने कषायोने आधिन बने, तेनु ज्ञान शा कामनु ?

तथा हु निश्चयथी कहु छु, के—जिनेश्वरदेव तथा जिनेश्वरदेवना शासनना धर्मगुरुओ अने जिनेश्वरदेवोनो धर्मज एवा प्रकारनो छे एटले के—इंद्रियो अने कषायोने आधिन होवा जोइए जो एम न होय तो जेना देव वीतराग जेना गुरु वीतराग बनवानी भावनावाळा अथवा योगिपणाळा होय, अने जेनो धर्म वीतराग बनवानु कहेतो होय, तेना भक्तो आम विषय कषायने आधिन केम बने ? न बनवा जोइए ? छता बने छे, माटे हमारे मानवुज पडे के—एवा देव, गुरु गुरु अने धर्मज आवा प्रकारना होवा जोइए

"न सालि वीआओ वह्लकुणो '

जेनु बीज डांगरनु होय, तेनाथी कइ वाल उत्पन्न थता नथी ज्यारे वाल उत्पन थाय त्यारे मानवु पड ? के—बीजमा पण वाल होवा जोइए तेवी रीते जओ कषायथी के इंद्रियोथी जीताइ गयेला होय, तेओना देव, गुरु अने धर्म पण कषाय अने इन्द्रियोथी परास्त थयेला होवा जोइए आवी रीतिए जे आमाओ इन्द्रियोने अने कषायोने आधिन बनी जइने लोकमा ज्ञान अने ज्ञानीओनी निन्दा करनारा या करावनारा छे, ते आत्माओने नानातिचार रूप कर्म बंधाय छे

ज्ञानीओए पण इन्द्रियादि अभ्यन्तर शत्रुओथी सावचेत रहेवानी जरुर छे, नहिंतर दुर्गति सुलभ छे

हवे उपरनी हकीकतथी स्पष्ट थाय छे, के—इन्द्रियोने अने कषायने आधिन थवाथी लोकमां ज्ञान अने ज्ञानीओनी निन्दा

श्रीजिनेश्वरदेवनी पूजामा सुगधवाला पुष्पादिक जोइए अने तेथीज आ पुष्पादिक सुगधवाला छे, के–सुगधवगन्ना ते तपासवा माटे घ्राणेन्द्रियनो उपयोग करवानु फरमावे छे अने ते माटे उपयोग कराती घ्राणेन्द्रिय प्रशस्त छे

कल्याण कामीओए जिनपूजनमा उत्तम पुष्पादिनो उपयोग करवो जोइए.

परतु ए वात जरुर ख्यालमा राखवानी छे, के–सुघेल पुष्पादिकनो उपयोग प्रभुभक्तिमा थाय नहीं

आ रीतिए परीक्षा करवा पूर्वक शुभ भावे भक्ति करनारा पुण्यात्माओ शुभ पुण्य उपार्जन करीने आ भवमा अने पर भवमा सुखी थाय छे जुओ पाच कोडीना फुलवडे पूर्व भवमां वीतराग परमात्मानी पूजा करी, तो आ भवमा परमार्हत श्री कुमारपाल महाराजा अढार देशना राजा थया

श्रीजिनपूजानो तो तेज पापात्माओ निषेध करे ! के–जेओने श्री परमात्मा प्रत्ये वैर भाव होय, अगर भवान्तरमा मरीने दुर्गतिरूप खाडामां जवानु होय अन्यथा–श्रीभगवती सूत्र, रायपसेणी सूत्र, आदि अनेक जैन सिद्धान्तमां भाखेल श्री जिन पूजानो निषेध केमज कराय ? अस्तु

कल्याणकामी आत्माओए तो परीक्षापूर्वक अने भक्तिपूर्वक परम तारक श्रीजिनेश्वरदेवनी पूजामा उत्तम पुष्पादिनो उपयोग करवो जोइए

[illegible] छे, अने तेथीज धर्मीने इन्द्रियादिने वश रहेवा [illegible]
[illegible] अनिवार्यभूत कर्म बताय छे [illegible]
देव [illegible], गुरु अने धर्म तेमज धर्मस्थानोनो [illegible]
[illegible] शत्रुओथी मारीने [illegible]
इत्यादि धनने लुटनारा अभ्यन्तर शत्रुओथी [illegible]
[illegible] छे.

[illegible]
[illegible]
[illegible] दुर्गतिना [illegible]
[illegible]
[illegible] जेम मंगु नामना आचार्य [illegible]
[illegible] थया, तो दुर्गतिने [illegible]
[illegible] छे

इन्द्रियो अने प्रमादादिनु [illegible]
[illegible] नहिंतर जनता [illegible]

[illegible]
[illegible] इन्द्रियो अने
[illegible] दुर्गतिमां [illegible] इन्द्रियो
अने [illegible]
[illegible]
[illegible] छे

खरेखर ! पुण्यवान आत्माओज परमात्मानी भक्तिनो लाभ लइ शके छे

केशर पूजा पण शास्त्रविहित होवाथी अवश्य करवी जोइए

वाचक महाशयो ! आ वात पण ध्यानमा राखवानी छे, के-परमोपकारी श्रीमान् रत्नशेखरसूरीश्वरजी महाराजाए "कुसुम-कुंकुमकर्पूरादिना" आ पक्तिमा "कुकुम" शब्दनो प्रयोग कर्यो छे अने तेनो अर्थ केसर थाय छे आ अर्थ अमरकोशादिमा छे, एटलु ज नहि, किन्तु सर्वमान्य कलिकाल सर्वज्ञ भगवान् श्रीहेम चन्द्रसूरीश्वरजी महाराजाए स्वोपज्ञ श्री अभिधान चिन्तामणिमां "कुकुम" शब्दनो केसर अर्थ करेल छे जुओ "वाह्लीक-कुकुम वह्निशिख कालेयजागुडे" आमा केसर अर्थवाळो कुकुम शब्दनो साक्षात् प्रयोग करेल छे आथी स्पष्ट छे, के-केसरपूजा ए शास्त्र विहित छ, माटे अवश्य केसर पूजा करवी जोइए

महा खेदनी वात छे, के-शास्त्रमार्गनो लोप करनारा केटलाक पापात्माओए वर्तमानमा कोइ कोइ स्थळे भद्रिक जनताने भरमावीन केशर पूजानो लोप कर्या छे परतु कल्याणनी कामनावालाओए उपरोक्त शास्त्रीय पाठ वाचीने केसर पूजानी उपादेयतानो जरुर स्वीकार करवो जोइए

पुण्यवानो भक्तिथी सद्गुर्वादिने हितकारी अन्नपानादि आपीने ससार सागरथी पोताना आत्मानो निस्तार करे छे.

महान् खेदनी वात छे, के-ज्यां जुओ त्यां अशान्ति अने कषायो देखाय छे शु साधुओने कषायो होय ? कषायवाळो साधुज नहि. झघडा करावनारने साधु कहेवायज नहि

आवी रीते गोळ गोळ वातो कही अज्ञान दुनियाने अज्ञानमां वधु फसावनारा छे पछी ते वेषधारी साधु होय ! के नामधारी श्रावक होय ?

कारण के-बोलनारे जे वात जनता समक्ष मूकवी होय ? ते वातनु जनता अवळे रस्ते न दोरवाय ते माटे स्पष्टीकरण करवुज जोइए नहितर "कसार करवा जतां धुली थइ जाय"

एटले के-जो स्पष्टीकरण करवामा न आवे तो जनता अवळे मार्गे दोरवाइ जाय माटेज शास्त्रकारो स्पष्ट स्पष्ट जाहेर करे छे, के-केवा प्रकारे इन्द्रियोने अने कषायोने आधिन थवु नहि तो के-अप्रशस्त रीते इन्द्रियोने अने कषायोने आधिन बनवु नहि कारण के-प्रशस्त इन्द्रियादिथी बधायेल शुभ कर्म अत्रे प्रतिक्रमवानु नथी. किंतु अप्रशस्त कर्म प्रतिक्रमवानु छे

अप्रशस्त इन्द्रियादि वडे बधायेल ज्ञानातिचार कर्मने निंदवानु छे

अप्रशस्त कर्मबधनु कारण ए अप्रशस्त इन्द्रियो अने कषायादि छे माटे ज सूत्रकार महर्षि जणावे छे, के-"अप्पसत्थेहिं" "अप्रशस्तै " एटले अशोभन इन्द्रियादि वडे जे अशुभ ज्ञानना अतिचारभूत कर्म बधायु होय, ते कर्मने निंदवानु शास्त्रकार जणावे छे

वली साथे ए पण ख्यालमा राखवानु छे के—गुरु, बीमार साधु, अथवा कोइ पण सुविहित साधुओने दवा, अन्नपान विगेरे जे देवानुं छे, ते पण परीक्षा करीने, जे जे सयमने तथा जीवनने बाधाकारी न होय, ते ते पोताना आत्माने तारवानी सद्बुद्धिए अने भक्तिपूर्वक देवानु छे परतु सयम अने जीवनने बाधाकारी, तेमज साधुओ उपर उपकार बुद्धिथी देवानु नथी पुण्यवानो तो जरुर भक्तिपूर्वक जे जे हितकारी होय, ते ते अन्नपानादिक आपीने पोताना आत्मानो संसार सागरथी निस्तार करे छे

ससार व्यवहारमा भाग लेनाराओ पोताना साधुपणानु लीलाम करनारा छे

परतु केटलाक निभागीओ छती सामग्रीए पण सुसाधुओनी भक्तिनो लाभ लइ शकता नथी अने आजकाल साधुधर्मना दुश्मन बनेला केटलाक दुर्भागीओ सुसाधुओने दान देता नथी, अने कदाच दे छे, तो पण तुच्छ अने अहितकारी दे अथवा तो कदाच उदार अने हितकारी आपे। तो तेओना हृदयमा एवी भावना होय छे, के—अमे साधुओ पर उपकार करीये छीए अने आज कारणे तेवा पापात्माओ सुसाधुओ पासेथी समाज सेवा आदि सासारिक प्रवृत्तिओमा लाभ मागी रह्या छे परतु तेवाओने मालुम नथी, के तमो आपो या न आपो तो पण साचा साधुओने तमारी के तमारा ससारनी कई परवा नथी साचा साधुओ तो मात्र स्वपर आत्मकल्याणकारक प्रवृत्ति करनारा होय छे तमारा ससार व्यवहारमा कदी भाग लेनारा होता नथी, ससार व्यवहारमा तेज साधुओ भाग लनारा छे,

प्रशस्ताप्रशस्त इन्द्रियोनु वर्णन.

अत्रे टीकाकार महर्षि प्रशस्त–अप्रशस्त बे प्रकारनी इन्द्रिया-दिकनु वर्णन करता जणावे छे, के—

"इन्द्रियकषाययोगा हि प्रशस्ता अप्रशस्ताश्च स्युः"

इन्द्रियो, कषायो, अने मन, वचन, कायाना योग आ बधाना बे बे भेद छे एटले प्रशस्त (शुभ) अने अप्रशस्त (अशुभ) बेउ प्रकार इन्द्रियो, कषायो, अने योगो होय छे

तेने विषे प्रत्येक इन्द्रियादि प्रशस्त कोने कहवी, अने अप्रशस्त कोने कहवी, तेनु स्पष्टीकरण करता टीकाकार महर्षि जणावे छे, के—

"देवगुरुगुणगुर्वनुशिष्टिधर्मदेशनाश्रवणादौ शुभअध्यवसायहेतुत्वेन यदुपयुज्यते तत्प्रशस्त श्रवणेन्द्रिय"

प्रशस्त श्रवणेन्द्रियनु स्वरूप.

सारा अध्यवसायना हेतुपणाए जे आत्माओनी श्रवण इन्द्रिय देव, गुरुना गुण सांभळवामा तथा गुरुनी शिखामण सांभळवामा अने धर्मदेशना सांभळवामा उपयोगी छे, ते श्रवण (कान) इन्द्रिय प्रशस्त छे

अर्थात् जो देव गुरुना गुण सामळीए अगर गुरुनी शीखामण अथवा तो धर्मदेशना सामळीए, तो आत्माना परिणाम सारा थशे, एवा हेतुथी जे आत्माओ देव गुरुना गुण आदि सांभळवामा पोताना काननो उपयोग करे छे, ते आत्माओनाज कान सारा छे बाकी तो ज्रे आत्माओना कान देव गुरु आदिना गुण सांभळवामा उपयोगी नथी

के-जे साधुओ भगवान् महावीरनो वेष लइने पण तेने लज-वनारा छे, अने छडेचोक साधुपणानु लीलाम करनारा छे

जे पुण्यशालीओ पोतानी संपत्तिनो सदुपयोग करी पोताना आत्मने तारे छे ते प्रशंसनीय अने अनुमोदनीय छे

जे पुण्यशालीओ सद्गुर्वादिकनो योग पामी स्वशक्ति अनुसार तेमनी भक्तिमां पोतानी संपत्तिनो सदुपयोग करी, पोताना आत्माने तारे छे, ते खरेखर अनुमोदवालायक अने प्रशंसा करवा लायक छे

अप्रशस्त घ्राणेन्द्रियनु स्वरूप

हवे शास्त्रकार महात्मा अप्रशस्त घ्राणेन्द्रियना स्वरूपने दर्शावतां जणावे छे, के—

"अप्रशस्त तु सुगन्धदुर्गन्धयो रागद्वेषकृत्"

आ पंक्तिनो भावार्थ ए छे, के-पोताना भोग माटे उपयोगमा लेवाता सुगंधिवाळा अथवा दुर्गंधिवाळा द्रव्योनी सुगंधमा अथवा दुर्गंधमा रागद्वेषना हेतुरूप घ्राणेन्द्रियने अप्रशस्त घ्राणेन्द्रिय कहेवाय छे

भाग्यशालीओए रागद्वेषने करनार सुगंधिवाळा या दुर्गंधिवाळा पदार्थोने तजवा जोइए

उपरनी हकीकतथी स्पष्ट थाय छे, के—भोग माटे सुघाता पदार्थोनी सुगंधमा या तो दुर्गंधमा जो रागद्वेष थाय, तो ते अनिष्ट कर्मबंधनु कारण छे अने एथी आत्मा आलोकमा अने परलोकमा महान् दु खी थाय छे माटे भाग्यशालीओए रागद्वेष करनारी सामग्रीओने पण तजवी जोइए

ते आमाओना कान मारा नथा

आथी स्पष्टज छे, के–सुवर्ण आदि अलकारो वडे चाहे तेटलो कान शोभाववमां आव्यो होय, तो पण जो देव गुरु आदिना गुणो सांभळवामा उपयोगी थतो न होय, तो ते कान ज्ञानी ओनी दृष्टिए सारो नथी अने अलकारोथी शोभाववामां न आव्यो होय, छता जो देव गुरु आदिना गुणो अने धर्म देशना सांभळवामां उपयोगी थतो होय, तो ते प्रशस्त छे

हवे शास्त्रकार महाराजा अप्रशस्त श्रवणेन्द्रियनु वर्णन करता फरमावे छे, के–

"अप्रशस्त च यदिष्टानिष्टेपु शब्देपु रागद्वेपहेतु' स्यात्"

आ पक्तिनो भावार्थ ए छे, के–ज्यारे इष्ट शब्द या अनिष्ट शब्द साभळीने श्रवणेन्द्रिय इष्ट या अनिष्ट शब्दोमा राग द्वेपनो हेतु बन छे, त्यारे श्रवणन्द्रिय अप्रशस्त बने छे

अप्रशस्तश्रवणेन्द्रिय आलोकमाय अनर्थकारी छे एम जाणी अप्रशस्त श्रवणनो त्याग करवो एज श्रेयस्कर छे

विचारक वाचक महाशयो ! अप्रशस्त श्रवणेन्द्रिय महा भयकर दु खनु कारण छे, एम जाणीने ज साभळवा योग्य न होय ते साँभळवु जोइए नहिं कदाच सभळाइ जाय तो पण तेमा रागद्वेप करवो नहिं जेओने नहि साभळवा योग्य सांभळवानो शोख छे, तेओ पोताना आ भवने अने परभवने बगाडे छे–जेम के–नाटक, सीनेमा, रामलीला, भाड, भवैया, मदारीना

प्रशस्त जिह्वेन्द्रियनु स्वरूप

हवे प्रशस्त जिह्वा इन्द्रियनु स्पष्टीकरण करता अनत उपकारी शास्त्रकारपरमर्षि फरमावे छे, के—

"जिह्वेन्द्रिय प्रशस्त यत्पञ्चविधे स्वाध्याये देवगुरुस्तुति परानुशिष्टयादौ गुर्वादिभक्त्या भक्तपानपरीक्षादौ चोपयोगि"

आ पक्तिनो भावार्थ ए छे, के—वाचना, पृच्छना, परावर्तना अनुप्रेक्षा अने धर्मकथा आ पाचेय प्रकारना स्वाध्यायमा, तथ देवगुरुना गुणग्राम गावामा तथा परने हितशिखामण देवामा तथ गुर्वादिकनी भक्तिथी भात पाणीनी परीक्षा करवामा जे जिह्वानो उप योग थाय, ते प्रशस्त जिह्वा कहेवाय अथात् वखाणवा लायक कहेवाय

जीभनो सदुपयोग करवाथी जरुर कल्याण थाय छे

उपरोक्त हकीकतथी समजवानु के—बे चार आगळनी, अ लोही, मासथी भरेली जीभलडीने प्रशस्त बनावीने आत्मकल्या साधवु होय, तो व्हारी जीभनो उपयोग पाच प्रकारनो स्वाध्या करवामा करजे, अथात् श्री जिनागम भणवा भणाववामा जीभ सदुपयोग छे, तथा श्रीजिनेश्वरदेवना तेमज निर्ग्रथ सद्गुरुओन गुण गावामा जीभनो सदुपयोग करजे ? तथा परने आत्मकल्याण कारी हितशिखामण देवामा जीभनो सदुपयोग करजे ? अथवा गुरु भक्ति माटे अन्नपानादिकनी परीक्षा करवामा जीभनो सदुपयोग करजे आ रीते जीभनो सदुपयोग करवामा जरुर आत्मानु कल्याण थाय छे

जेनाथी आत्मानो निस्तार छे, तेना ज नाशनी वातो करवी. ए केटली भयकर दशा ?

परतु आ वीसमी सदीना झेरी जमानामा उछ्रेला, केटलाक स्वच्छदाचारी, जैनो जीभनो जे दुष्ट उपयोग करी रह्या छे, त खरेखर ! तेमनी कमनसीबी ज छे आवा कमनसीबो पाच प्रकारनो स्वाध्याय करवाने बदले शास्त्रोने अभराइए मूकवानी वातो करी नाखवानी वातो करी रह्या छे आ ओछी भयकर दशा छे? जेनाथी आत्मानो निस्तार छे, तेनाज नाशनी वातो करवी, ए केटली भयकर दशा ?

जिह्वा इन्द्रियनो दुरुपयोग कर्यो तो समजो के आ भव अने परभवमां भयकर दशा छे

वळी केटलाक घोर पापात्माओ श्री देवगुरुना गुण गावाने बदले गाळो देवामाज जीभनी सार्थकता मानी रह्या छे पण तेओने मालुम नथी के—दुर्गतिरूप कूवामा जवु पडशे? वळी केटलाक नीच आत्माओ आम कल्याणकारी शुभ शिखामण देवाने बदले उन्मार्गनी देशना देइ पोताना अने परना आत्माने माटे नर्कादिना भयकर दु खो उपार्जन करी रह्या छे वळी केटलाक पापात्माओ सद्गुरुओनी भक्ति करवा माटे, अने अनपाननी परीक्षा करवा माटे जीभनो सदुपयोग करवाने बदले साधु सस्थानो नाश करवा माटेज पोतानी जीभलडीनो दुष्ट उपयोग करी रह्या छे परतु तेओने खबर नथी, के—सुसाधु सस्था पाचमा आराना छेडा सुधी रहनारी छे अने वास्तविक म्हारोज नाश थइ रह्यो छे शु साधु धर्म विरुद्ध प्रचार करवामा जीभनो दुष्ट

पोते सन्मार्गथी चूके छे, अने बीजाओने चूकावे छे अने परिणामे स्व अने परनु अहित करे छे, ए भूलवा जेवु नथी व पुण्यात्माओए तो सुधर्मना रक्षण माटे प्रशस्त अभिमान राखवानु ज छे ए पण भूलवानु नथीज. साथे ए पण ख्याल्मा राखवुं के-दुष्ट अभिमान तजवानुज छे.

हवे आपणे माया-मायाना पण बे भेद छे, अप्रशस्त अने प्रशस्त

अप्रशस्त मायानु स्वरूप

धनादिकनी इच्छाथी परने ठगवा तेमा जे माया छे ते, तथा वाणीआओनी परने ठगवानी वणिककलामा जे माया छे ते, अथवा तो इन्द्रजालियादिकनी पारकाने ठगवामा कराती माया, ते अप्रशस्त माया छे अने दुर्गतिमा लइ जनारी छे माटे तेवी मायानो त्याग करवो एज श्रेयस्कर छे

प्रशस्त माया

हवे प्रशस्त मायानु स्वरूप आ प्रकार छे, जेम के-मृगना पाछळ पडेला पारधीओनी आगळ भगवान बचाववा माटे मृगलो मैं नथी जोयो, एम निरुपाये कहेवामा जे माया छे, ते प्रशस्त छे तथा रोग दूर करवा माटे कडवी दवा आदिनु पान करावावमा जे माया छे, ते पण प्रशस्त छे तथा दीक्षा लेवा माटे तैयार थयेला पुण्यात्माओए पोताना पुण्यकार्यमा विघ्न करनारा मातापितादिक आगल कहेवु के- में आजे खराब स्वप्न जोयु छे, आथी म्हारु आउखु थोडु छ एम

उपयोग करनारा अमर रहवाना छे ? ना अने सौ कोइने मरवानु छ
अने मरणबाद तेवाओनी दुर्गति निश्चितज छ, अने सुसाधुओ मरण
बाद सद्गतिमाज जनारा छे, तेमज सुसाधुओनी परंपरा पाचम
आराना छेडा सुधी रहेनारी, रहेनारी अने रहेवानी ज छे ए निश्चय
छे आवाओ बे अक्षरमा समजे तो सारु छे नहितर तेओनी
आ भवमा अने परभवमा भयंकर दशा छे अने तेने कोण
मिथ्या करनार छ

पुण्यशालीओए जिह्वा इन्द्रियने प्रशस्त बनाववा प्रयत्न करवो जोइए

पुण्यात्माओए तो उपरोक्त सघळी हकिकत विचारी भावि दुर्गतिना दुःखोथी बचवा अने आत्म कल्याण करवा माटे पाचे प्रकारनो स्वाध्याय, देवगुरुना गुणोनु वर्णन आदि करी आलोक अने परलोकमा सुखी बनवा माटे **जीभने प्रशस्त बनाववा प्रयत्न करवो जोईए** एज आ पंक्तिनो सार छे

अप्रशस्त जिह्वा इन्द्रियनु स्वरूप

हवे अप्रशस्त जिह्वाना स्वरूपने दर्शावता परमोपकारी शास्त्रकार महाराजा फरमावे छे के–

"अप्रशस्त स्त्र्यादिचतुर्विधविकथापापशास्त्रपरतप्त्यादौ रक्तद्विष्टतयेष्टानिष्टाहारादौ च यद् व्याप्रियते"

आनो भावार्थ ए छे, के–स्त्रीकथा आदि विकथाओ करवामा पापशास्त्रोने भणवा आदिमा, पारकी खोटी निंदा करवामा तथा राग द्वेषपूर्वक इष्ट अनिष्ट आहारादिमा जे जिह्वा इन्द्रियनो उपयोग करे

कहीन पण संसारनी प्रपंचजाळथी छूटवा माटे माया करवी, ते प्रश स्त छे अर्थात् एवु स्वप्न न आव्युं होय, त्यांय मायाथी फक्त, अने प्रपंचजालथी छूटवु एमा पण स्वपर कल्याण छे अथवा पोताना पिताने सम्यग् साधु धर्मना आचार ग्रहण कराववा माटे परमतारक श्रीआर्यरक्षितसूरीश्वरजीनी जेम करेली माया पण प्रशस्त छे.

प्रशस्त मायाथी शुभनो बंध छे कारण के तेमां बीजाना बूरानी भावना नथी किन्तु हितनीज भावना छे.

मतलब ए छे, के–परमतारक श्री आर्यरक्षितसूरीश्वरजीए माया करीने पण पोताना पिताने साधुधर्मना सम्यग् आचा रमां प्रवर्तावता छतांय तेओने दुष्कर्मनो बंध नथी किन्तु शुभनोज बंध छे कारण के–ते माया प्रशस्त छे आवा प्रकारनी माया कल्याणकामी आत्माओ व्यापार करी शके छे परंतु धनादि कना लोभथी कपटी वणिकनी जेम बीजाने ठगवानी माया करवी नहीं

प्रशस्त अप्रशस्त लोभ

वाचक महाशयो ! लोभना पण प्रशस्त अने अप्रशस्त एम बे भेद छे धन धान्यादिकनो लोभ ज्यारे बूरो छे, त्यारे ज्ञान, दर्शन, चारित्र, विनय, वैयावच अने शिष्यना संग्रहादिमा ज कल्याण बुद्धिए लोभ छे, ते प्रशस्त लोभ छे जेम विविध श्रुत अने अर्थना संग्राहक श्रीवाचकवर्य श्रीउमास्वाति महाराजने जे लोभ हतो ते प्रशस्त हतो आ रीतिए लोभ करनारने ज्ञानादिक गुणोनी वृद्धि थाय छे अने ज्ञानादिक गुणोनी वृद्धिमाज आत्मानु कल्याण छे माटे आवो

[illegible] इन्द्रिय अप्रशस्त छे अर्थात् वखाणवा लायक नथी, कारण [illegible]र्वी जीभथी आत्मानी दुर्गति थाय छे

वाचक महाशयो ! आथी स्पष्ट छे के—स्त्रीकथा, देशकथा, राज [illegible] अने भक्तकथादि पाप कथाओ आ जीभथी थवी जोइए नहीं [illegible] के—विना कारण पाप नाथी आत्मा चार गतिरूप संसारमां रुळे [illegible] तमन पाप शास्त्रो पण भणवा भणाववा नहि कारणके—एथी आत्मा [illegible]मां घोर दुःख पामे छे वळी परनिंदा करवाथी पापकर्म [illegible]य बीजो कइ पण फायदो नथी माटे ते पण करवी जोइए नहीं [illegible] इष्ट अनिष्ट आहारादिमा पण रागद्वेष करवाथी शु फायदो छे ? [illegible] दुःख अने दुर्गति विना बीजो कइ फायदो नथी आ कारणथी [illegible]मानवानु छे, के—आहार पाणी लीधा विना छुटको न होय अने तेथी [illegible]वा पडे तो पण केवा लेवा ? के जे भक्ष्य अने पेय होय ते, [illegible]ने ते पण दिवसनाज लेवा किन्तु रात्रीए नहि अने तेमा पण [illegible]णोपेतन लेवा, नहि के गळा सुधी, ते पण रागद्वेष विना आ [illegible]तिए ल्याता आहार पाणीमा जीभ अप्रशस्त बनती नथी एटलुज [illegible]हीं, किन्तु धर्म निमित्ते लेवाता प्रशस्त बने छे कदाच आ रीतिए [illegible]र्म निमित्ते नहि लेवाता उदरपोषण माटे पण लेवायेल आहारपाणी गाढ कर्मबंधनु कारण बनता नथी परंतु आजकाल केटलाक नामधारी जैन भाईओनी खूब भयंकर दशा छे, तेमने नथी खानपानमा भक्ष्याभक्ष्यनो विचार, के नथी पेयापेयनो विचार, नहि रात्रिदिवसनो विचार के नहि प्रमाणनो विचार, अरे तेना केटलाक पापात्माओ तो अभक्ष्यादिकमां पाप मानता पण [illegible]—तेथी आवाओना जीवनने शु मनुष्य जीवन कहेवु ?

प्रशस्त लोभ आत्मोज जोइए त्यारे धनादिकनो लोभ मम्मणशेठ-आदिनी जेम दुर्गतिने देनारो छे माटे तेवो अप्रशस्त लोभ तजवा योग्य छे

मन, वचन अने कायानु पण प्रशस्त अप्रशस्त स्वरूप.

वाचक महाशय! मन, वचन अने काया पण प्रशस्त अने अप्रशस्त वे प्रकारे छे ते आ प्रमाणे—जेनु मन आर्तरौद्रध्यानमा प्रवर्ते छे, तेनु मन अप्रशस्त छे, अने जेनु मन धर्म अने शुक्लध्यानमा प्रवर्ते छे, तेनु मन प्रशस्त छे जेनु वचन आ चोर छे, आ व्यभिचारी छे, इत्यादि पापवाळु छे, तेनु ते वचन अप्रशस्त छे अने देवगुरुना वर्णनमा जेना वचननो उपयोग छे, ते वचन प्रशस्त छे जेनी काया द्युत व्यसनादिक तथा विषयादिकने सेवनारी छे, तेनी ते काया अप्रशस्त छे त्यारे धर्मकर्ममा उद्यमवाळी काया प्रशस्त छे प्रशस्त योगो सुखने करनारा छे, अने अप्रशस्त योगो दुःखने देनारा छे माटे प्रशस्तमा आदर करवो जोइए

रागद्वेषना पण प्रशस्त अप्रशस्त वे प्रकार.

श्री अरिहंतदेव, अने ब्रह्मचर्यवान सुसाधुओनो तथा अरिहंत देवस्थित धर्मनो जे राग, ते प्रशस्त राग छे, तथा स्त्रीआदि, धनादि अने कुदेवादिकनो जे राग छे, ते अप्रशस्त छे अगत दुस्मनादि प्रये जे द्वेष थाय छे ते अप्रशस्त द्वेष छे, अने दुष्कर्म तथा प्रमाद प्रये जे द्वेष करवो ते प्रशस्त छे त्यारे अप्रशस्त रागादि दुःखदायक छे, त्यारे प्रशस्त रागादि शाश्वत् सुख देवामा सहायक छे माटे प्रशस्तनो आदर करवो, अने अप्रशस्तनो त्याग करवो

के राक्षसी जीवन ? अरे ! महा खेदनी वात छे, के-तेवा पापात्माओ स्वय पाप छोडता नथी, पापने पाप मानता नथी अने पाप करीने प्रशसे छे एटलुज नहि, किन्तु पापनो प्रचार करे छे, अने पाप छोडनारनी मश्करी पण करे छे अहो ! केटली अधमता ! खेर ! तेवाओप्रत्ये मध्यस्थभाव केवल दया चिंतवनानी रही कारण के-तेवाओ सुधरनारनी कोटीना नथी, अने उपदेशने लायक पण नथी परतु कल्याणकामी भव्यात्माओए तो पोतानी रसनान काबुमा राखी, भक्ष्याभक्ष्यादिकना विवेकपूर्वक आहारादिक लेवामा रागद्वेष नहि करवो एज श्रेयस्कर छे

कल्याणकांक्षीओनी जिह्वा इन्द्रिय प्रशस्त बनवी जोइए कारणके-अप्रशस्त जिह्वेन्द्रिय दुर्गतिनु कारण छे

ज्यारे रागद्वेषपूर्वक आहारादि लेवामा पण पाप छे, तो पाप कथाओ करवी, पापशास्त्र शीखवा अने पारकी निदा करीने परे तपाववो एमा तो पापनु पूछवुज शु ? वली "नवरा बेठा नखोद वाळे" ए न्याये आजकाल केटलाक धर्मी गणाताओ पण स्त्रीकथा आदि पा कथाओ करवामा आखो दिवस काढी नाखे अरे ! रात्री उजागरो करे, अने घरनो धधोय चूके ! छता एवी कुटेव पडी होय छे, के तेओने पापकथा के निन्दा कर्या सिवाय पेट भराय नहीं ज्यां धर्मी गणाता केटलाकोनी आवी दशा जोवाय छे, त्या घोर पापात्माओ माटे तो कहेवुज शु ? तेवाओने श्रीजिनेश्वरदेवनी वाणी सांभळी तेनो प्रचार करवानु तो सूझेज क्याथी ? एटलु ज नहि, किन्तु आवाओ पापशास्त्रनो अभ्यास करी धर्मशास्त्र

विपरीत दशा एज दु'खनु कारण छे

महा खेदनी वात छे, के आजकाल प्रायः जेनो त्याग करवानो छे, तेनो आदर छे, अने जेनो आदर करवानो छे तेना प्रत्ये अनादर प्राय. छे. अने आज कारणे जीव सुख पामवाने बदले दु ख पामे छे.

वाचक महाशय ! उपर मुजब प्रशस्त अने अप्रशस्त इन्द्रियादिकनु वर्णन वाची विचारी अप्रशस्त इन्द्रियादिकथी बधाता दुष्कर्मनी निन्दा तथा गुरुसाक्षीए गर्हा करवी अने प्रशस्त इन्द्रियादिकना योगे बधायेल शुभ कर्मनी अनुमोदना करवी परतु कदिए निन्दा करवी नहि उपर कह्या मुजब जे पुण्यशालीओ अनतज्ञानीओना वचनने अनुसरशे, ते कल्याण करशे अने जे नहि अनुसरे अगर विपरीत चालशे, तेओ पोताना कल्याणथी वंचित रही दु खोने पामशे अस्तु

उपरोक्त लेखने वाची, वचारी अने विचारीने भव्यात्माओ पोताना जीवनमा उतारी शाश्वत् सुखने पामो. एज एक मन'कामना



विरुद्ध प्रचारने माटे तनतोड जहेमत उठावी रहेला आजे
जोवामा आवे छे. परतु विवेकी आत्माओए तो तेवाओना
पडछायाथी पण दूर रहेवु, एज व्याजबी छे तेमज विकथा
आदि पापथी दूर रही कल्याणकारी कथाओ करवी जोइए तथा
कुशास्त्रोनो त्याग करी धर्मशास्त्रो शीखवा जोइए तथा परनिन्दानो
त्याग करी पोताना आत्मानी तथा पापकर्मनी निन्दा करवी, एमान
पोताना आत्मानु कल्याण छे जो आ रीतिए करवामा न आवे अने
विपरीत आचरवामा आवे तो ते जिह्वा इन्द्रिय अप्रशस्त छे, अने
दुर्गतिनु कारण छे

प्रशस्त अप्रशस्त स्पर्शनेन्द्रियनु सामान्य स्वरूप.

हवे शास्त्रकार महाराजा प्रशस्त स्पर्शनेन्द्रियना स्वरूपनु वर्णन
करता जणावे छे के—

**स्पर्शनेन्द्रिय प्रशस्त यजिनस्नपनादौ गुरुग्लानादि वैया-
वृत्ये चोपयोगवत्, अप्रशस्त तु स्त्र्याद्यालिंगनादौ व्यापारवत्"**

उपरनी बे पक्तिओथी शास्त्रकार महाराजा स्पष्ट जाहेर करे छे
के—श्री जिनेश्वरदेवनी स्नात्रपूजादिमा अने गुरु ग्लान (बीमार) आदिनी
वैयावृत्यमा जे स्पर्शनेन्द्रियनो उपयोग करवो ते प्रशस्त छे

प्रथम प्रशस्त स्पर्शनेन्द्रियनु स्वरूप

वाचक महाशयो ! आथी स्पष्ट छे के—परमपुण्योदये मानवभव
आदि उत्तम सामग्री पामीने स्पर्शनेन्द्रियने सफल करवा माटे परम-
तारक श्री वीतराग परमात्मानी श्री स्नात्रादि विविधपूजा, तथा गुरु,

[illegible]शान्ततपोनिधि-संघ-स्थविराचार्यवर्याणां श्रीमतां

विजयसिद्धिसूरीश्वराणां स्तुत्यष्टकम्

शान्तिगृह मुनिनायकनम्य, कीर्तिधर गुणरत्नसमुद्रम् ।
सिद्धिकर विजयोत्तरसिद्धिं सूरिवर प्रणमामि सदाऽहम् ॥१॥

भानुविजितसुतपस्करदीप्र, निम्नतयाविजितोदधिमध्यम् ।
मन्दपराजितवारिदधार, सूरिवर प्रणमामि सदाऽहम् ॥२॥

ध्यानमय क्षमया जितभूमि स्थैर्यगुणेन सुमेरसमानम् ।
ज्ञानमय परम शिवनार्द्धि, सूरिवर प्रणमामि सदाऽहम् ॥३॥

भव्यसरोजविकाशनसूर्यं, भीमभवाम्बुधिपोतसमानम् ।
शुभमितोपकृतिं निदधान, सूरिवर प्रणमामि सदाऽहम् ॥४॥

गुप्तिधर समितिं प्रचरन्त, मेरुमहीधरधैर्यधरं च ।
मङ्गलकारणधर्मसमान, सूरिवर प्रणमामि सदाऽहम् ॥५॥

सौम्यतया जितशीतमरीचिं, चन्दनवद्भवतापहरं हि ।
ब्रह्मबलेन हतस्मरबाध, सूरिवर प्रणमामि सदाऽहम् ॥६॥

बुद्धिबलेन पराजितजीव, मुक्तिवधूसुखसङ्ग[illegible] ।
निर्मलशासनपुष्करमित्र, सूरिवर प्रणमामि सदाऽहम् ॥७॥

अक्षतुरङ्गमनिग्रहरश्मिं, संयमवारि[illegible]म् ।
मत्तमदाष्टककुञ्जरसिंह, सूरिवरं प्रणमामि सदाऽहम् ॥८॥

बीमार, आदि साधुओनी वैयावच करवामा स्पर्शनेन्द्रियनो उपयोग करवो जोइए अन्यथा मनुष्यभव सबधी स्पर्शनेन्द्रिय मली तोय शु ? अने न मली तोय शु ?

परतु आजे केटलाक नामधारी जैनो के जे घोर पापो कमाओ छे, ते श्री जिनेश्वर भगवाननी पूजा करवामा पण पाप माने छे एटलुज नहि किन्तु कल्पित युक्तिद्वारा शास्त्र रहस्यने नहि जाणनारा भद्रिक जीवोने भरमावे छे तेवाओनु शु थशे ? तेवा पापात्मा पाखडीओने मेला देव देवीयोनी भक्तिमा या पोताना नामधारी गुरुओना फोटानी या पाटनी भक्ति करवामा पाप नथी लागतु परतु जिनेश्वरदेवनी भक्तिमा पाप लागे छे आ शु ? ओछी शोचनीय दशा छे ? अस्तु पुण्यात्माओए तो भगवाननी भक्ति करीने पोतानी कायाने पावन करी लेवी जोइए अने तेवीज रीते गुरु अने ग्लानादिनी वैयावच करीने कल्याण साधी लेवु जोइए

जुओ पूर्वभवमा पाचसो पाचसो साधुओनी वेयावच करनार श्री बाहुबलीना जीवे केवु पुण्य उपार्जन कर्यु ? क-जे पुण्यना प्रताप चक्रवर्ती श्री भरतमहाराजाथी पण अधिक बलवान थया

वैयावचनी महत्ता

अरे ! ग्लान साधुओनी वैयावचन माटे ज्ञानीओ त्या सुधी फरमावे के-जे ग्लाननी वैयावच करनारो नथी, ते म्हारो नथी अने जे म्हारो छे, ते जरर वैयावच करनारो होय छे आ उपरथी विवेकी आत्माओए

प्रशमपीयूषपाथोधिगाम्भीर्यगुणगरिष्टशासनसरक्षकाचार्यवर्याणा

श्रीमद्विजयमेघसूरिपुङ्गवानां स्तुत्यष्टकम्

श्रीतीर्थङ्करधर्मभूपतिवर यस्सेवते सर्वदा,
य शश्वद्‌गतये शिवार्थिमुनयो भक्त्या भजन्ते मुदा।
येन क्लिष्टतमोऽघनाशकृतये ध्यान जिनानां धृत,
यस्मै श्राद्धवरा नरामरवरा नित्य नमस्कुर्वते ॥१॥

यस्माज्ज्ञानमवाप्य सत्तमनरै॰ श्रेयस्सदा साध्यते,
यत्मज्ञाबलतामवेक्ष्य धिषणो देवालये किं ? ययौ।
यस्य क्षान्तिधन वर बहुतर श्रीसाधन विद्यते,
सोऽय साधुधवश्चिराय जयताद्‌भव्यात्मभद्राय वै ॥२॥(युग्म

पञ्चाचारधनैकलाभकुशलो व्यापारवित्तत्पर॰,
पञ्चाक्षोद्धतदन्तिगण्डपटले प्रक्रूरपञ्चानन ।
मानामानमहीधवज्रसदृशः कारुण्यरत्नाकरो,
मोहाधीनजनस्य योऽमृतसम धर्मोपदेश ददौ ॥३॥

शान्तो दान्तगुणी ममत्वरहित सद्बुद्धिलक्ष्मीगृह,
निन्दावर्णसमानभाववशगो मानापमानावग्र ।
कामाकामपविनचित्तसहित सर्वात्मभद्रङ्करो,
धर्माराधकसाधुसाधुसुखदो यो विद्यते भो ? भुवि ॥४॥

मोहारातिनृपे स वक्रनयन॰ षट्कायरक्षापरो,
दारिद्र्यौघवनेऽनलो हितकर सर्वाहितत्यागकृत्

यथा शक्ति गुरुभक्ति अने ग्लानादिकनी वैयावच्च करवामा उजमाल थवु जोइए

अप्रशस्त स्पर्शनेन्द्रियनु वर्णन

हवे अप्रशस्त स्पर्शनेन्द्रियनु वर्णन करता परमोपकारी महापुरुष फरमावे छे के–स्त्री आदिना आलिंगनमा जे स्पर्शनेन्द्रियनो उपयोग ते अप्रशस्त छ आ उपरथी विवेकी आत्माओए समजवु जोइए के–स्त्री आदिना आलिंगनने पण तजवानु छे, परतु ससारमा रमा अने रामाने सार माननारा भवाभिनन्दीओने आ वात जचवी मुश्केल छे, अरे ! अतिशय अधम दशाए पहोचेलाओनी तो वातज शी करवी ? दखो ! उत्तमोत्तम जैन कुलमा उत्पन्न थयेला पण नामधारी केटलाक जैनो आ वीसमी सदीना झेरी वातावरणमां विषय विकारथी अध बनी, विधवा विवाहादि दुराचारोनो प्रचार करी रह्या छे, छे कइ नीचतानी अवधि ? कल्याणकामी आत्माओए तो आवा पापथी दूर रही, ब्रह्मचर्यनी भावना केळवी स्वस्त्रीमा पण सतोष राखी, तेणीना आलिंगनादिथी दूर रहवु एमाज कल्याण छे

प्रशस्त, अप्रशस्त इन्द्रियोना स्वरूपने जाणीने इन्द्रियोनी आधिनता तजवा उद्यमवत बनवु, एज कल्याणकर मार्ग छे.

वाचक महाशय ? उपर मुजब प्रशस्त, अने अप्रस्त इन्द्रियोना स्वरूपनो शात चित्ते विचार करीने इन्द्रियोनी परवशता छोडीने प्रशस्त बनाववा प्रयत्न करवो, एमाज व्हार कल्याण छे अन्यथा इन्द्रियोने आधिन बनी तेने अप्रशस्त बतावी, तो आ भव अने परभवमा

श्रीगङ्गानलश्च पाननतरः सौजन्यशाली शुभो,
मिथ्यात्वैकमदेन पीडितजने नैद्याधिराजश्च य' ॥५॥
रायाश्रेष्ठफलेग्रहिर्बुधवरो मायारसालाङ्गलो,
रागारागरिपू रिपुप्रहरणे सोपक्रमस्सर्वदा ।
रामारामसमो रसालवचनो वृन्दारकैर्वन्दितो,
वृत्तान्त जगतीतले जिनविभोर्नित्य वदन्योऽस्ति वै ॥६॥
मात्सर्यादिकलङ्कमुक्तहृदयो धन्य' प्रशस्याकृति,
गाम्भीर्याब्धिवरो गिरिस्थिरतर' सर्वाभय राति य ।
ज्ञानी यो भविसर्वजीवसुखदो देवद्रुम सर्वदा,
सत्पुण्या हितदा प्रलभ्य सुमतिं धत्ते महारत्नवत् ॥७॥
मेघाम्भ पतिनद्गिरा हितदया यो गर्जति प्राणद ,
सागसारविचारचक्रचतुरश्चक्राङ्कवत् सर्वदा ।
तारातारसमग्रकृत्यविविद साम्यामृतस्योदधिं,
श्रीसूरीशपदेन शोभिततर स्तौमीष्टमेघ हि तम् ॥८॥

व्याख्यानवाचस्पतिनामाचार्यवयाणा
श्रीमताविजयक्षमाभद्रसूरिवराणा स्तुत्येकादशक्म् ।

सुधर्मैकभैष यदानन साक्षाद्, भवव्याधिगार हरन्त सुवैद्यम् ।
क्षमाधारिणा स्तूयमानं दगेह, क्षमाभद्रसूरिं नितान्त नमाम ॥१॥
अनाथस्य नाथ सनाथ मनोन, प्रमोद जनाना निनाना सुवाचा ।
ददान क्षपेश यथा शीतभासा, क्षमाभद्रसूरिं नितान्त नमाम ॥२॥

तु दु खी थइश अरे ? अप्रशस्त एकेक इंद्रिय पण मृगादिकनी माफ
आलोक अने परलोकमा अनर्थकारी थाय छे, तो पछी अप्रशस्त बनेलं
पाचे इंद्रियोनु तो कहेवुज शु ?

इंद्रियोने वश नहि करनाराओनी केवी दुर्दशा थाय छे, अने
नियममा राखनारा केवा सुखी थाय छे ए निचेना उदाहरणथी स्पष्ट
समजाय छे

काचबानु दृष्टांत.

वाणारसी नामनी नगरीमा गगा नदीमा मृदगतीर नामना
द्रहमा एक गुप्तेंद्रिय अने बीजो अगुप्तेन्द्रिय नामना बे काचबा रहेता
हता एक वखत ते बन्ने जणा पृथ्वी पर रहेला कीडा आदिना मासनु
भक्षण करवानी इच्छाथी द्रहनी बहार नीकळ्या, मार्गमा जता ते बेउ
जणा बे दुष्ट शियाळीयाने देखीने भय पाम्या भय पामेला ते पोतान
चार पग अने पाचमी डोक एम पाचेय अगोने करोड मध्ये खेंची लइने
चेष्टा वगरना थइने, जाणे के-मरी गया न होय शु ? एवा थइने रह्या

त्यारबाद ते बे दुष्ट शियाळीयाए ते बेउ जणाने वारवार हलावी
जोया, उछाळी जोया, नीचे पछाडी जोया, अने चरणना घातादि बडे
पीडा देवानो प्रयत्न पण कर्या, पण कइ करी शक्या नहीं छेवटे ते
बन्ने शीयाळ थोडेक दूर जइने गुप्तपणे रह्या

आ तरफ अगुप्तेन्द्रिय काचबो पोतानी इंद्रियोने काबुमां नहि
राखी शकवाथी, अने चलपणाथी जेटलामा पोताना चरण अने डोकने
बहार काढी, तेटलामा तो बेउ शियाळीयाओए तेना बटके बटका
करी नाख्या अने ते मरण पाम्यो

महोरेर्जिघांसु शिवश्रीप्रलिप्सु, दयासागर सर्वसत्त्वप्रधीन्म् ।
क्षमानाथनम्य क्षमानाथनम्य, क्षमाभद्रसूरिं नितान्त नमामः ॥३॥
अनन्ताकलाप कलाप गुणाना, मनीषानिधान समृद्धे सुहेतुम् ।
भवाब्धव्यवृन्दे नवद्रूपमान, क्षमाभद्रसूरिं नितान्त नमामः ॥४॥
नगैघे ललाम ललाम स्ववशे, सुबुद्धेर्वदान्य वदान्य समर्थम् ।
सुनोधेन वाम नराम सुधर्मे, क्षमाभद्रसूरिं नितान्त नमाम. ॥५॥
प्रनष्टाघवार गतेह नृसिंह, मनाचाररत्नैकरत्नाकर वै ।
त्रिलोके सुवर्णं सुवर्णं प्रदीप्त, क्षमाभद्रसूरिं नितान्त नमाम ॥६॥
कषाये कृतान्त कृतान्त निदान्त, वरिष्ठ नुधर्मे जने दर्शयन्तम् ।
अखण्ड चरित्र धन सञ्चयन्त, क्षमाभद्रसूरिं नितान्त नमाम ॥७॥
कठोर कठोर कुमृत्यु जयन्त, जनाना क्षपण्यु क्षमन्त शरण्यम् ।
निनेन्द्रस्य शास्त्रेण तत्त्व दधान, क्षमाभद्रसूरिं नितान्त नमामः ॥८॥
जगन्निच्छुभ दर्शन धारयन्त, निपक्ष जयन्त मुनिं सार्वभौमम् ।
अगर्वेव गर्वं महीघ्र तुदन्त, क्षमाभद्रसूरिं नितान्त नमाम. ॥९॥
प्रमत्त प्रसुप्त जन बोधयन्त, सुधर्मोपदेशेन दान्त प्रशान्तम् ।
त्रितार्थस्य लोके सुदान ददान, क्षमाभद्रसूरिं नितान्त नमाम' ॥१०॥
भवाग्निप्रदग्धत्रिलोकस्य शीघ्र, सुवाचामृतेनोरुताप हरन्तम् ।
विनीताविनीताऽभिवन्द्य सुपूज्य, क्षमाभद्रसूरिं नितान्त नमाम ॥११॥

बीजा काचबो चपल नहि हतो, ते लांबा काळ सुधी स्थीर पडयो हतो, आथी ते बेउ शियाळ थाकीने अते चाल्या गया त्यारबाद चारे तरफ तपास करीने गुप्तेन्द्रिय काचबो कुदको मारीने जल्दी द्रहमा चाल्यो गयो, अने सुखी थयो

दृष्टांतनु रहस्य.

आ उदाहरण परथी सार ए लेवानो छे, के—पोताना पाचेय इन्द्रियोने गोपवनार काचबानी माफक जे पुण्यवाना पातानी पाचे इन्द्रियोने काबुमा राखी शके छे, अने प्रशस्त बनावी शके छे, तेज सुखी थाय छे **परतु इन्द्रियोना गुलाम बनेलाओथी आ काम बनवु मुश्केल छे खेर ? तेओनु जेवु भाग्य.**

प्रशस्त, अप्रशस्त कषायोनु स्वरूप

वाचक महाशयो ? जेवी रीते पाच इन्द्रियो सबधी प्रशस्तता अने अप्रशस्ततानु वर्णन कर्यु छे तेवी रीते कषायादिमा पण प्रशस्त अप्रशस्तपणु छे अने ते पण समजवा जेवु छे जेम के—अगत धनादि निमित्ते जे जे कलहादि थाय अने तेमा जे क्रोध आवे ते अप्रशस्त छे ज्यारे दुर्विनीत शिष्यादि परिवारने शिक्षामा ज क्रोध आवे ते प्रशस्त छ अथात् सारो छे जेम प्रमादी शिष्योना प्रमादने दूर करवा माटे सुता मूकीने चाली नीकळनार परमपूज्य श्री कालिकाचार्यजीनी माफक

अहिं आवेश सिवाय मूकीने जवानु नथी बन्यु, परतु परिणाम हितना होवाथी ते आवश प्रशस्त कहेवाय छे अने धनादिक निमित्ते

श्रीहर्षपुष्पामृतजैनग्रन्थमाला तरफथी प्रगट थयेलां पुस्तकोनी नोंध

	मूल किं	घटाडेली किं
१ दीक्षानु सुन्दर स्वरूप	१–०–०	०–६–०
२ विधियुक्तपौषधविधि	०–६–०	०–५–०
३ श्रीस्तवनामृतसग्रह प्रथमावृत्ति भेट		
४ तपोमूर्ति प प्रवरश्रीकर्पूरविजयजीगणिवर्यश्रीनु जीवन चरित्र गद्य–पद्यात्मक किं अमूल्य		
५ तपोमूर्ति प प्रवरश्रीकर्पूरविजयजीगणिवर्यश्रीनु जीवन चरित्र [आवृत्ति बीजी] किं भेट		
६ श्रीस्तवनामृतसग्रह [आवृत्ति बीजी] कि ०–८–०		
७ श्रीनवस्मरणादिस्तोत्रसग्रह [प्रथम आवृत्ति] भेट		
८ ,, [आवृत्ति बीजी] भेट		
९ श्रीलेखामृत सग्रह [प्रथम भाग] भेट		
१० श्रीसद्गुरुवन्दन, चैत्यवन्दन अने सामायिक लेवानो विधि सूत्रो साथे भेट		
११ चौदनियम धारवानी टीप भेट		
१२ श्रीस्तवनामृतसग्रहनो वधारो तथा चतुर्विंशतिजिन चैत्यवन्दनादि भेट		
१३ श्रीआत्मोपयोगी–नानामृत		

थता कजीयामा बीनानु दूर करवानी भावनाथी जे आवेग आवे छ, ते आवश अप्रशस्त छे एटले के—परात छ अने दुर्गतिमा दइ जनार छे माटे तेनो त्याग करवो अने प्रशस्तनो आदर करवो

अप्रशस्त मान

वाचक महाशय ! हवे आव्या मानजीभाई—

नमस्कारने लायक एवा गुर्वादिने विषे पण पथरना थामनी जेम अक्कड रहवु ते मान अप्रशस्त छे अने सर्व अनिष्टोनु कारण छे दखो त्या सुधी तद्भव मुक्तिगामी एवा पण श्री बाहुबली जीनु अभिमान न गयु, त्या सुधी तेओने केवलज्ञान न थयु ज्यारे अभिमान गयुं, त्यारेज केवलज्ञान थयु तो पछी बीजानी तो वात ज शी करवी

प्रशस्त मान

हवे प्रशस्त माननु स्वरूप जणावता शास्त्रकार महाराजा जणावे छे के—स्वीकार करेल शुभ प्रतिज्ञानो प्राणात पण त्याग करवो नहि अथवा घोर आपत्तिमा पण श्री हरिश्चन्द्र राजानी जेम क्यारेय पण दीनवृत्ति धारण करवी नहि मतलब ए छे, के—आत्महितकारक स्व धर्मना रक्षण माटेनु जे अभिमान छे, ते प्रशस्त छे

प्रशस्त मान राखवानु अने अप्रशस्त तजवानुज छे.

खेरखर ! महा खेदनी वात छे, के—आजे केटलाय मूर्खानदोने जाति, कुल, स्वग्राम अने स्वदेशादिनु अभिमान छे पण आत्महितकारक सद्धर्मनु अभिमान नथी अने एथीज